डॉ.सूरज सिंह नेगी के उपन्यासों में वृध्द विमर्श

पाठ्यक्रम कोड़ एवं शीर्षक HIN-675 शोध प्रबंध

श्रेयांक: 16

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

शोधार्थी

प्रतिक्षा प्रभाकर गरड

अनुक्रमांक:22P0140011

PR Number: 201802538

मार्गदर्शक

दीपक वरक

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य महाशाला

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

GOA UNIVERSITY SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE TALEIGAON PLATEAU

परीक्षक: दीपक वरक

Seal of the School

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Internship report entitled, "डॉ.सूरज सिंह नेगी के उपन्यासों में वृध्द विमर्श" is based on the results of investigations carried out by me in the Master of Arts in Hindi at the Shenoi Goembab Languages and literature, Goa University, under the mentorship of Mr. Deepak Prabhakar Varak and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the internship report/work.

I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

Pratiksha Prabhakar Garad

22P0140011

Date: April 2024

Place: Goa University

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Internship report entitled, "डॉ.सूरज सिंह नेगी के उपन्यासों में वृध्द विमर्श" is based on the results of investigations carried out by me in the Master of Arts in Hindi at the Shenoi Goembab Languages and literature, Goa University, under the mentorship of Mr. Deepak Prabhakar Varak and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the internship report/work.

I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

Pratiksha Prabhakar Garad

22P0140011

Date: April 2024

Place: Goa University

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation report "डॉ. सूरज सिंह नेगी के उपन्यासों में वृध्द विमर्श" is a bonafide work carried out by Ms. Pratiksha Prabhakar Garad under my supervision in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Master of Arts in the Discipline of Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

Deepak Prabhakar Varak

Date: 16 April 2024

Prof. Anuradha Wagle

Dean, SGSLL, Goa University

GOA UNIVERSITY
SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE
TALEIGAON PLATEAU

School Stamp

Date: 16 April 2024

Place: Goa University

ATMANIRBHAR BHARAT
SWAYAMPURNA GOA

गोंय विद्यापीठ
ताळगांव पठार,
गोंय – ४०३ २०६
फोन : +९१-८६६९६०९०४८

(Accredited by NAAC)

Goa University
Taleigao Plateau, Goa-403 206
Tel : +91-8669609048
Email : registrar@unigoa.ac.in
Website : www.unigoa.ac.in

Ref. No.: GU/LIB/ATTENDANCE CERT./2024/259

Date: 08/05/2024

TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Miss Pratiksha Prabhakar Garad a student of Goa University, M.A. (Hindi), visited the Goa University Library for her reference work on the following dates and completed 33 Hours & 18 Minutes of research internship as a part of her M.A. dissertation.

The detailed dates and times she visited are attached herewith.

This certificate has been issued at the written request of Assistant Professor Deepak Varak.

University Librarian
(Dr. Sandesh B. Dessai)

Dr. Sandesh B. Dessai
UNIVERSITY LIBRARIAN
Goa University
Taleigao - Goa.

GOA UNIVERSITY
LIBRARY
GOA

VISITS TO GOA UNIVERSITY LIBRARY

SR.NO.	DATE	TIMING	TIME SPENT
1.	16/6/2023	10:13 to 10:39	26 min
2.	23/6/2023	11:52 to 12:26	34 min
3.	4/7/2023	01:15 to 1:40	25 min
4.	17/7/2023	2:00 to 2:10	10 min
5.	17/7/2023	3:50 to 4:20	30 min
6.	18/7/2023	4:10 to 5:23	1 hour 13 min
7.	19/7/2023	2:47 to 3:23	36 min
8.	21/7/2023	1:45 to 4:25	40 min
9.	1/8/2023	5:09 to 5:13	4 min
10.	3/8/2023	4:50 to 5:35	45 min
11.	9/8/2023	1:51 to 1:54	3 min
12.	14/8/2023	1:35 to 2:11	36 min
13.	16/8/2023	12:36 to 12:45	10 min
14.	18/8/2023	2:17 to 3:17	1 hour
15.	25/08/2023	1:32 to 2:29	57 min
16.	25/08/2023	3:25 to 3:30	5 min
17.	28/08/2023	3:27 to 4:20	53 min
18.	31/08/2023	3:00 to 4:19	45 min
19.	1/09/2023	1:37 to 1:41	5 min
20.	7/09/2023	3:17 to 3:59	42 min
21.	14/09/2023	10:14 to 11:04	50 min
22.	4/10/2023	3:25 to 3:48	23 min
23.	6/10/2023	1:41 to 3:07	1 hours 26 min
24.	7/10/2023	2:00 to 2:49	49 min
25.	10/10/2023	12:06 to 1:30	1 hour 24 min
26.	11/10/2023	3:35 to 4:00	25 min
27.	12/10/2023	3:22 to 4:10	48 min
28.	13/10/2023	1:57 to 2:50	53 min
29.	14/10/2023	1:59 to 2:18	19 min
30.	16/10/2023	4:02 to 4:04	2 min
31.	17/10/2023	12:27 to 1:00	33 min
32.	18/10/2023	4:55 to 1:00	5 min
33.	18/10/2023	10:10 to 10:30	20 min
34.	23/10/2023	2:12 to 3:15	63 min
35.	31/10/2023	12:32 to 12:57	25 min
36.	15/11/2023	12:23 to 12:26	3 min
37.	22/11/2023	12:15 to 12:19	4 min
38.	11/12/2023	9:18 to 9:42	24 min
39.	12/12/2023	9:00 to 9:55	55 min

40.	4/01/2024	10:39 to 11:09	30 min
41.	10/01/2024	11:18 to 12:02	44 min
42.	11/01/2024	11:22 to 12:00	40 min
43.	16/01/2024	12:05 to 12:16	11 min
44.	18/01/2024	11:06 to 11:11	5 min
45.	25/01/2024	11:14 to 11:15	1 min
46.	1/2/2024	1:15 to 1:20	5 min
47.	16/02/2024	10:05 to 10:17	12 min
48.	19/02/2024	10:17 to 11:28	1 hour
49.	20/02/2024	10:59 to 1:20	2 hour 21 min
50.	27/02/2024	10:11 to 10:17	6 mint
51.	10/4/2024	11:54 to 12:39	45 min
52.	5/4/2024	9:40 to 10:19	39 min
53.	8/4/2024	11:30 to 2:50	3 hour 20 min
54.	12/4/2024	11:29 to 12:10	41 min
55.	15/4/2024	10:30 to 10:37	7 min
56.	16/4/2024	9:45 to 10:00	1 min
Total hours			**33 Hours 18 Minutes**

Signature of the Guide
(Asst. Prof. Deepak Varak)

Signature of the University Librarian
Dr. Sandesh B. Dessai

Signature of the Student
Miss Pratiksha Prabhakar Garad

अनुक्रम

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	कृतज्ञता ज्ञापन	xii
	अनुक्रम	vi, vii, viii
	भूमिका	ix, x, xi
1	वृध्द विमर्श: एक परिचय 1.1 वृध्द अर्थ एवं परिभाषा 1.2 वृध्द विमर्श:अवधारणा एवं स्वारूप 1.3 वृध्द अवस्था की त्रासदी	1-22
2	डॉ. सूरज सिंह नेगी के उपन्यासों में वृध्द समस्याएं 2.1 मानसिक समस्या 2.2.1 असुरक्षा का ऐसास 2.2 पारिवारि कसमस्या 2.2.1 परिवार का विघटन 2.22 असहनीय जीवन 2.2.3 परिस्थितियों से समझौता 2.3 आर्थिक समस्या 2.3.1 पारिवारिक निर्भरता	23-59

	2.3.2 सेवानिवृत्ति	
3	3 डॉ.सूरज सिंह नेगी के उपन्यासों में वृध्द विमर्श 3.1 वृध्द युवा पीढ़ी में व्दंद 3.2 वैचारिक मत भीन्नता 3.3 अस्तिव का प्रश्न 3.4 आधुनिक एवं परपरागत मूल्यों में गतिरोध 3.5 जीवन में पाश्चात करण का प्रभाव 3.6 सोच का स्वा केंद्रीय होना 3.7 एक परिवारों का चलन	60-94
4	भाषा और शैली 4.1भाषा 4.1.1आँचिलक भाषा 4.1.2 अंग्रेजी भाषा 4.1.3 कुँमावनी शब्दावली 4.1.4 मुहावरे और लोकोक्तियां 4.1.5 लोकगीत	95-116

	4.2 शैली 4.2.1 वर्णनात्मक शैली 4.2.2 पुर्व-लिप्त शैली 4.2.3 डायरी शैली 4.2.4 पत्रात्मक शैली 4.2.5 प्रतिकात्मक शैली 4.2.6 विश्लेषणात्म कशैली	
	उपसंहार	117-119
	संदर्भ	120-121

भूमिका

साहित्य समाज का दर्पण है। जिस प्रकार दर्पण खूबसूरती से मनुष्य की सच्चाई प्रस्तूत करता है। उसी प्रकार एक साहित्य साधक भी अपने कठोर प्ररिश्रम, धैर्य, जीवन आदर्श, नैतिक मूल्य रिश्तों की गनहिर, पंरपरा के व्दारा साहित्य कृति को शब्दों की वाणी से संजाता है।

डॉ.सूरज सिंह नेगी के उपन्यासों के केंद्र में वृध्द विमर्श है। उनके उपन्यासओं में वृद्ध की बदलती, स्थितयों का चित्रण मिलता है। जैसे की रिश्तों की अहमियत, अकेलेपन, मानवीयता, भूमंडलीकरण के बदलते युग में रिश्तों में आये बदला इसके साथ मानसिक समस्या, आर्थिक समस्या, परिवारिक समस्या का चित्रण किया है। व्यक्ति से परिवार बनता है और परिवार से समाज बनता है और इसी परिवार को संरचनात्मक रूप प्रधान करनेवाले व्यक्ति घर के बुजुर्ग ही हुआ करते हैं। समाज में सामाजिक परिवर्तन के कारण जो बुजुर्ग परिवार को बरगद की तरह छाव देने का कार्य करता था। वह आज घर के एक कोने में असहाय, अकेला, बहिष्कृत, जीवन जीने के लिए विवश है। 'वृद्ध' शब्द का अर्थ है – पका हुआ, परिपक्व, बढ़ा हुआ। वृद्धावस्था को लेकर हमारे मन में एक ही तस्वीर उभरती है जो शिथिल शरीर, गिरे हुए दाँत, सफेद बालों के साथ जीवन-यापन करते हैं। मनुष्य के जीवन में पहले शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था के बाद वृद्धावस्था आती है।इन सभी

विचारों का विवेचन लंघु शोध प्रबंध के जरिए किया गया है। जो इस प्रकार है:-

प्रथम अध्याय:- "वृध्द विमर्श :एक परिचय"

इस अध्याय के अंतर्गत वृद्ध अर्थ एवं परिभाषा पर प्रकाश डाला गया है। वृद्ध का अर्थ एवं विभिन्न शब्दकोश के अनुसार विवेचन किया हैं। इसके के साथ वृद्ध की विदवानों विभिन्न परिभाषा है। वृद्ध विमर्श अवधारणा एंव स्वरूप पर प्रकाश डाला है। इसके साथ वृध्द अवस्था की त्रासदी को विस्तार से उध्दारित करने का प्रयास किया है।

द्वितीय अध्याय:- "डॉ.सूरज सिंह नेगी के उपन्यासों में वृद्ध समस्याएं"

इस अध्याय के अंतर्गत साहित्य में वृद्ध विमर्श एवं डॉ.सूरज सिंह नेगी के उपन्यासों में वृद्ध विमर्श किस तरह से दिखाई देता है। इस की प्रस्तावना लिखी है। डॉ.सूरज सिंह नेगी के उपन्यासों में वृद्ध समस्याएं का चित्रण किया है। जैसे की मानसिक समस्याएं के अंतर्गत असुरक्षा का ऐसास तथा आर्थिक समस्या के अंतर्गत परिवारिक निर्भरता और सेवानिवृत्ति का मूल्यांकन किया गया है। अंत में परिवारिक समस्या के अंतर्गत परिवार का विघटन, असहनीय जीवन, परिस्थितियों से समझौता करना का मूल्यांकन किया गया है।

"तृतीय अध्याय:- "डॉ.सूरज सिंह नेगी के उपन्यासों में वृद्ध विमर्श"

इस अध्याय में डॉ. सूरज सिंह नेगी के उपन्यासों में चित्रित वृद्ध विमर्श का विवेचन किया है। जैसे की वृद्ध युवा पीढ़ी में व्दंद, वैचारिक मत भिन्नाता,अस्तित्व का प्रश्न, आधुनिक एवं परंपरागत मूल्यों में गतिरोध,

जीवन में पाश्चातकरण का प्रभाव, सोच का स्वाकेंद्री होना और एक एक परिवार का चलन इत्यादि मूल्यों का विवेचन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय:-" डॉ.सूरज सिंह नेगी के उपन्यासों की भाषाशैली"

इस अध्याय के अंतर्गत डॉ. सूरज सिंह नेगी के उपन्यास में प्रयुक्त भाषा और शैली पर विचार किया गया है। लेखक ने उपन्यास में आँचलिक भाषा, अंग्रेजी शब्द, कुमाँऊनी शब्दावाली, लोकगीत, मूहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग किया गया है। इसके अलावा लेखक ने विभिन्न शैलीयों का प्रयोग इस अध्याय में देख सकते हैं। जैसेकीवर्णनात्मक शैली, पूर्व-दीप्ति शैली, डायरी शैली, पत्रात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

उपसंहार के अंतर्गत सभी अध्यायों की उपलब्धियों का निष्कर्ष रूप में आंकलन किया गया है।

अंत में **संदर्भ-ग्रंथ** सूची दी गई है, जिसमें आधार ग्रंथ, सहायक ग्रंथ एवं कोश ग्रंथ आदि का उल्लेख किया गया है।

कृतज्ञता ज्ञापन

कोई भी कार्य अकेले में सफल नहीं होता। उसको सफल बनाने के लिए मार्गदर्शन और साहायता की जरूरत होती है। इस लघु शोध प्रबंध को सम्पन्न करने में मैंने अपनी क्षमताओं का बेहतर प्रयोग किया है। मेरे मार्गदर्शक सहायक अध्यापक दीपक वरक जी के सहयोग के बिना यह संभव न होता। सहायक अध्यापक दीपक वरक जी के निर्देशन के कारण ही मैंने यह विषय लिया। उसके लिए मैं हृदयपूर्वक कृतज्ञता प्रकट करती हुँ।

इसके साथ ही लेखक डॉ. सूरज सिंह नेगी जी का भी हृदयपूर्वक आभार मानती हूँ। इसी के साथ हमारे विभाग के सभी अध्यापकों को भी मैं धन्यवाद देना चाहती हूँ क्योंकि मुझे इस कार्य में सहायता की है। इसी के साथ कृष्णदास शामा केंद्रीय ग्रंथालय गोवा और गोवा विश्वविद्यालय के पुस्तकालय का भी अपेक्षापूर्व सहयोग मिला है। इसके लिये मैं ग्रंथलयों को भी धन्यवाद करती हूँ।

मेरे आदरणीय माता-पिता, बहनों की प्रेरणा एंव आशीर्वाद के कारण ही मैं यह लघु शोध प्रबंध पूर्ण कर पायी। मेरे दोस्तों की मदद के बिना यह कार्य इतने कम समय में कर पाना संभव न था। उनके प्रोत्साहन एवं साथ के कारण ही यह पूर्ण हो पाया है। जिसके लिये मैं उनका धन्यवाद करती हूँ। जिन्होंने मुझे शोध कार्य को पूर्ण करने में सहायता प्रदान की है। उन सभी का मैं हृदयपूर्वक कृतज्ञता प्रकट करती हुँ।

दिनांक: 16 अप्रैल 2024 प्रतिक्षा प्रभाकर गरड

वृद्ध विमर्श : एक परिचय

1.1 वृद्ध अर्थ एवं परिभाषा

वृध्दधावस्था मनुष्य के जीवन की उस अवस्था को कहते है।जिसमें मानव जीवन की उम्र औसत काल के समीप या उससे अधिर हो जाती है। यह स्वाभिवक एवं प्राकृतिक घटना है। वृध्द शब्द का अर्थ है- पका हुआ, परिपक्व, बढ़ा हुआ। वृध्दवस्था को लेकर हमारे मन में एक ही तस्वीर उभरती है जो शिथिर शरीर, गिरे हुऐ दाँत, सफेद बालो के साथ जीवन-यापन करते है। मनुष्य के जीवन में पहले शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था के बाद वृध्दवस्था आति है। शैशवावस्था में बच्चा दूसरो पर निर्भर रहता है। किशोरावस्था में जोश, उर्जा, शक्ति आदि से परिपुर्ण होता है। प्रौढ़ावस्था में अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करता है। वृध्दधावस्था तक पहुँचते-पहुँचते व्यक्ति का शरीर शिथिर हो जाता है। इसे व्यक्ति दूसरों पर निर्भर रहने को विवश हो जाता है। इसी विवशता के कारण व्यक्ति अपने आप को कमजोर तथा हारा हुआ महसूस करता है।

वृध्द शब्द को व्याख्यायित करते विभिन्न शब्दकोशों तथा विद्वानों ने प्रयास किया हैः-

I. अंग्रेजी हिन्दी कोश के अनुसार -"वृध्द शब्द को old शब्द का हिंदी पर्याय माना गया। old का अर्थ बुढा, वृद्ध, पुराना होता है।"[1]

II. प्रामाणिक हिंदीकोश के अनुसार -"वयोवृद्ध को ही बुढ़ा वृध्द कहा गया है।"[2]

III. शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश के अनुसार- "वृद्ध का अर्थ बुढ़ा है, काल में बुढ़ापा वृद्ध होना है।"[3]

IV. वर्धा हिंदी शब्दकोश के अनुसार-" बुढा आदमी (1) अधिक उम्र का: बूढा, बुड्ढा (2) बड़ा, बुद्धिमान: चतुर: विध्दान है। वृद्धता का अर्थ- वृध्द होने की अवस्था या भाव; बुढ़ापा परिपक्वता है।"[4]

V. अभिनव हिंदी कोश के अनुसार -"वृद्ध शब्द को वृद्धि कहा गया है। इस का अर्थ कि जब जीवन के आकार और भार में उत्तरोत्तर बढ़ोतरी जो नवजात शिशु से लेकर वृद्धावस्था तक होती है।"[5]

VI. भारतीय हिंदी कोश के अनुसार:-" वृद्ध का अर्थ बुढाः अधिक अवस्था का चतुर, पूरा बढ़ा हुआ है। बुढ़ा को योग्य या सम्मानित है। इसी प्रकार बुढ़ा आदमी, ऋषि, सम्मानित

व्यक्ती अस्सो है। ई का हाथी है। वह शब्द जिसके पहले शब्द की वृद्धि हुई 'हो। यो.काल मे - बुढ़ापा को ही क्रम, वृद्ध व्यक्ती पद या दर्जा है:-नाभि तुंदिल जिसको नाभि उन्नत हो: मत प्राचीन ऋषियों का मत: युवती, कुटनी ,दाई:प्रचंड वेगवाला है। संघ- वृध्दों या पंडितो की सभा है।"

VII. ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार, "सामान्य जीवन के परवर्ती काल को वृद्धावस्था कहा जाता है।" वृद्धावस्था के निर्धारण तथा इसे परिभाषित करने के दो तरीके हैं।' ये हैं जीव वैज्ञानिक तथा काल क्रमिक। जीव वैज्ञानिक दृष्टि से सामान्य रूप से वृद्ध होने में समय के साथ-साथ शरीर के ढाँचे एवं कार्य-प्रणाली में क्रमशः ऐसे परिवर्तन आते हैं। जिन्हें बदला नहीं जा सकता। बीमारियों एवं अन्य कारणों से सभी लोगों में वृद्धावस्था संबंधी परिवर्तन दिखायी पड़ते हैं। एक अवस्था के बाद उम्र में बढ़ोत्तरी के साथ-साथ मृत्यु की सम्भावना बढ़ती जाती है। आधुनिक समाज में हम कालक्रमिक उम्र को यानी जितना समय वह जी चुका है (इसे वर्षों में आँका जाता है) वृद्धावस्था का सामाजिक सूचक मानते हैं। उम्र को जीवन के प्रवाह में सामाजिक नियंत्रक या द्वारपाल भी माना जाता है फिर भी, वृद्धावस्था की कुछ पहचान होती है जिन्हें उम्र बढ़ने के साथ देखा व अनुभव किया जा सकता है। यह परिवर्तन प्रत्येक व्यक्ति में होते हैं। यद्यपि मात्रा में अंतर हो सकता है। 50 वर्ष की उम्र

पार करने के बाद से ही प्रत्येक व्यक्ति में झुर्रियों का पड़ना, बाल सफेद होना, दाँत-हड्डी कमजोर होना, नजर कमजोर होना, कार्यक्षमता में कमी इत्यादि परिवर्तन देखे जा सकते हैं। यह एक स्वाभाविक एवं मनोवैज्ञानिक घटना है।

वृध्द की परिभाषा

वृध्दावस्था को विभिन्न विव्दानों ने परिभाषित किया है:-

बुढ़ापे को सुन्दता का वर्णन करते हुए **अंग्रेजी के प्रसिद्ध जी.गारडीनर** लिखते है कि "चढ़ते हुए सुरज की अपनी सुन्दरता होती है और छिपते हुए सूरज की अपनी पर इन दोनों में छिपते सूरज की सुन्दरता ज्यादा गहरी और रूहानी होती है। जीवन की पूर्णता और बुलंदी का प्रतीक बुढापा कुछ खुश किस्मत व्यक्तियों को ही नसीब होना है क्योंकि कईयों की जीवन की डोरी तो बीच में ही टूट जाती है। जरूरत केवल इस बात की है कि ठुकराने के बावजूद सकारात्मक सोच और सही व्यवहार द्वारा बुढ़ापे को वृद्धि में बदल के इसका आनंद लिया जाये।"[8]

बेकर के अनुसार:- "वृध्दावस्या को एक ऐसा परिवर्तन माना है जो समय के साथ हर व्यक्ति में होता है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने प्रोढ़ावस्था के बाद अवस्था को वृध्दावस्था मानी है। जिसको शुरुआत 51 वर्ष की अवस्था से होती है। वृद्धावस्था की न्यूनतम आयु का निर्धारण स्थान सापेक्ष है।"[9]

फ्रांसी लेखक अनातोले के अनुसारः- “फ्रांस का शब्दों में ‘काश ! बुढ़ापे बाद जवानी आती। बुढ़ापे में जवानी वाली उर्जा शक्ति तो नही रह जाती, रह जाता है विविध अनुभवों का भंडार।”[10]

अरनॉल्ड रोज के अनुसारः- “बुजुर्ग अपनी ही उपसंस्कृति में रहना पसंद करते है। जैसे-जैसे वृध्दों की उम्र में बढ़ोत्तरी होती जाती है वे अपने ही उम्र वालों के बीच अंत क्रियाऐ करना, व्यवहार करना, भूमिकाओं का निर्वाह करना आदि पसंद करने लगते है। वे अपने से छोटो उम्र वालों से विशेष प्रकार का व्यवहार करना। हम उम्रवालों की तुलना में कम पसंद करते है।”[11]

लुईस डबलिन के अनुसारः- “वृद्धावस्था वे शारीरिक एवं मानसिक - परिर्वतन है। जो जीवनकाल के मुख्य भाग के व्यतीत हो जाने के बाद घटित होते हैं। इस प्रकार वृद्धावस्था का आगमन वस्तुतः जीवन के सर्वाधिक एवं क्षमतापूर्ण काल के पश्चात् क्रमशः आयुवृद्धि के साथ-साथ शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तनों का परिणाम है।”[12]

यू.एस.ए.यू के तथा पश्चिमी देशों के अनुसार :- “इस की सीमा 60-65 वर्ष आँकी गयी है। मनुष्य के जीवन की चार विभिन्न अवस्थाओं की तुलना वर्ष के चार मौसमों- वसंत, गरमी, बरसात एवं शरद ऋतु से की जा सकती है।”[13]

“वसंत एवं गरमी की तुलना व्यक्ति के बाल्यावस्था एवं युवावस्था से जबकि वह बहुत उत्साह एवं गर्मी महसूस करता है। शीत ऋतु की तुलना

व्यक्ति को पौढ़ावस्या एवं वृद्धावस्या से की जा सकती है। जबकि व्यक्ति परिपक्क हो जाता है किन्तु थका कमजोर महसूस करता है। उस के दांत टूटने, नजर कमजोर होना, बहरापन की लक्षण दिखना ही है वृध्दावस्था।

वृद्धावस्था व्यक्ति के अंदर होनेवाले शारिरीक, बौध्दिक, जैविक, सामाजिक परिवर्तन है। विभिन्न विन्दानों ने वृध्दों में होनेवाले परिवर्तनों को विभिन्न रूपों में देखा है। जैसे की जोविकिय परिवर्तन, मनोवैज्ञानिक परिवर्तन, समाज में बुजुर्गों की प्रस्थिति में परिवर्तन है आदि।

पी, वी. काणे के अनुसारः- "50 वर्ष की अवस्था हो जाने पर व्यक्ती संसार के सूख एवं वासनाओं की भूख से ऊब जाता था। तथा वन की राह ले लेता था। जहाँ वह आत्म निग्रही तपस्वी एवं निरपराध जीवन व्यतीत करता था।"[14]

प्रो. सुनील गोयल के अनुसारः- "वृध्दावस्था कोई बीमारी नहीं है, बल्कि मानव के जीवन चक्र की अंतिम दशा है, स्वाभाविक जैवकीय प्रक्रिया है, तथा प्रत्येक मानव के लिए अनिवार्यता है। इसमें भाँति- भाँति की समस्यायें शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक तथा आर्थिक होती है। इनके जीवन के अनुभवों का लाभ लेने के लिए परिवार में एकीकृत तथा सामंजस्य करने के प्रयास किये जाने चाहिए ताकि वृद्धजनों की समस्याओं का समाधान किया जा सके।"[15]

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं से यह ज्ञात होता है कि वृध्द अवस्था प्राकृतिक देन है। जीवन के अंतिम पड़ाव पर वृध्द अवस्था आती है। विद्वानों ने वृध्दों की परिभाषा को अपने अनुसार परिभाषा करने का प्रयास किया

गया है। उन्होंने 50 वर्ष के बाद उम्र को वृध्द अवस्था के रूप में माना जाता है। वही पर वृध्दों को बुढ़ापे में जवानी वाली उर्जा, शक्ति तो नहीं होती है पर विविध अनुभव का ज्ञान होता है। वृध्दों के शारीरिक और मानसिकता में परिवर्तन आने के कारण उनके जीवन काल में दिखाई देता है। इसी प्रकार विद्वानों ने अलग-अलग परिभाषा को व्यक्त करने का प्रयास किया गया है।

1.1.1 वृध्द विमर्श अवधारणा एवं स्वरूप

वृद्धावस्था धीरे धीरे आनेवाली अवस्था है जो कि स्वाभाविक और प्राकृतिक है। वृद्ध का शाब्दिक अर्थ हे पका हुआ या परिपक्व है। वृद्ध विमर्श का अर्थ है वृद्धावस्था की परिस्थितियों, घटनाओं आदि का चिंतन करना अर्थात वृद्धावस्था की समस्याओं को समझ कर उनके लिए उचित समाधान निकालना। क्योंकि आज मनुष्य इतना व्यस्त हो गया है कि उनके पास बुजुर्ग को समझने का समय ही नहीं है। इसका मुख्य कारण संयुक्त परिवारों का टूटना है। इसी कारण हम बुजुर्गो की तरफ ध्यान नहीं दे पा रहे है और न ही उनके अनुभव व ज्ञान का लाभ उठा पा रहे है। वृध्दावस्था बचपन से जवानी और जवानी से बुढ़ापे तक के अनुभवों तथा गुणों का पुंजी होती है। आज का समाज वृध्दावस्था को समस्या की दृष्टि से देखता है और उन्हें बोझ समझता है। समाज में उचित सम्मान न मिलने के कारण वृध्द व्यक्तियों का जीवन निराशा की तरफ जा रहा है। जीवन भर मरते-खपते रहो,जोड -तोड़ करते रहो और अंतिम समय में

उपेक्षित और तिरस्कृत जीवन जीना पड़ता है। यह एक तरह का अभिशाप है, जो मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी है।

मनुष्य एक पेड़ के समान होता है। जिस प्रकार पेड़ के हरे -भरे पत्ते, डालियाँ, फूल, फल, होते है, उसी प्रकार मनुष्य भी अपना जीवन आनंद से व्यक्त करते है। अंत में एक दिन पेड़ के पत्ते पीले होकर गिर जाते है। इस प्रकार मनुष्य का जीवन होता है। एक दिन मनुष्य ही इसी पेड़ की तरह यौवन अवस्था से वृद्ध अवस्था में अंत का जीवन जीता है। वृध्दावस्या को लेकर हमारे सामने एक तस्वीर आती है, जो शिथिल शरीर, गिरे हुऐ दाँत, सफेद बालों के साथ जीवन यापन करते है। मनुष्य के जीवन में पहले शौशवावस्था, बाल्यावस्या किशोरावस्था, पौढ़ावस्था के बाद वृध्दावस्था आती है। मनुष्य पहले बाल्यावस्था में आनंदमय क्षण को जीवन में हँसी-मज्जा से व्यतित करता है और अंत में वृद्धावस्था में मनुष्य अकेलेपन का जीवन जीता है। शैशवास्था में बच्चा दूसरों पर निर्भर रहता है। किशोरावस्था में जोश, उर्जा, शक्ति परिपूर्ण होती है। पर वृध्दावस्था तक आते व्यक्ती का शरीर कमजोर तथा हारा हुआ महसूस करता है। वृद्ध व्यक्ति के पास ज्ञान का भण्डार होता है जो उसे ज्ञान के माध्यम से अपने परिवार, समाज, संस्कृति आचरण, सदव्यवहार आदि का ज्ञान में वृत्ती करते है। वृद्धावस्या में मनुष्य दुसरो पर अधिर होता है। जीवन के अंतिम पड़ाव में वृध्द अपने परिवार पर निर्भर होते है।

वृध्दावस्था प्राकृतिक रूप से जीवन जीने के लिए महत्वपूर्ण है। जिसमें व्यक्ति को जन्म से मृत्यु तक विभिन्न अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है। सर्वप्रथम बाल्यावस्था आती है, उसके बाद किशोरावस्था, युवावस्था और

बाद में वृध्दावस्था अंतिम पड़ाव है। व्यक्ति को वृध्दावस्था से गुजरना ही पड़ता है।

आम बोलचाल की भाषा में वृध्द व्यक्ति उसे कहा जाता है जो युवावस्था और पौढ़ावस्था को पूर्ण करने के बाद वृद्धावस्था में प्रवेश करता है। मनुष्य के उत्तरार्द्ध जीवन का अंतिम पड़ाव है। वृध्दावस्था में ही व्यक्ति को वृध्द, बुजुर्ग, ओल्ड एजेड व्यक्ति कहा जाता है। बदलते हुए परिवेश में वृध्दों को एक नया नाम दिया है- "वरिष्ठ नागरिक"

वरिष्ठ नागरिक जिसे कहा जाता है। उसकी कोई निश्चित आयु है, जिसे प्राप्त करने पर उसे व्यक्ति को वरिष्ठ नागरिक पुकारा जाता है। वृध्दों का जीवन का चित्रण प्रत्येक युग से परिचित होता है। २१वीं में ही नहीं बल्कि प्राचीन काल से ही वृध्दों के जीवन का चित्रण मिलता है। उनका रामायण और महाभारत में उल्लेख मिलता है। रामायण में अयोध्या के राजा दशरथ के सबसे बड़े पुत्र राम के जीवन का वर्णन मिलता है। राम ने वृध्दा पिता की आज्ञा का पालन करते हुए चौदा साल का वनवास स्वीकार किया। ऐसा करके राम ने अपने परिवार को कलह और विघटन से बचाया तो दूसरी तरफ अत्याचारियों का दमन कर सार्वजनिक हित के कार्य संपन्न किए। उसी तरह रामकथा का एक पात्र श्रवण कुमार अपने वृध्द माता- पिता की सेवा करने आदर्श पुत्र बन गया। उसके वृध्द माता पिता अंधे होने के बावजूद वो बचपन से ही अपने माता पिता का आदर करता था। उनकी सब ईच्छा आकाषाऐं पुर्ण करता था। श्रवण कुमार माता पिता को बोझ की तरह न देखकर आदर भावों से सेवा करके आदर्श पुत्र बन गया। इसी तरह पौराणिक तथा लोक कथा में ऋषि मुनियों, साधु, संतों से संबंध कथाओं से ज्ञात होता कि वों तपस्या

करते करते वृध्दावस्था प्राप्त किया करते थे। वे लोक समाज और राज्य के संचालन हेतु नीतियों में प्रस्तुतीकरण सक्षम हो पाते हैं। महाभारत में भी वृध्दों का चित्रण मिलता है। महाभारत में भीष्म पितामय, दोणाचार्य, कृपाचार्य विदुर जैसे उनके अनुभव सिध्द ज्ञानी, तत्वेताओ की जमात है, तो दूसरी ओर जवानी की शक्ति और जोश से बरसाती पानी से उफनती नदियों की तरह दुर्योधन, दुशासन, कर्ण आदि। वृध्दों का संघ, बुजुर्गों के लोगों ने युवा कौरवों लोगों को बहुत समझाया कि पांडवो से युध्द करने से हानि है। दुर्योधन और उसके सहायकों ने इन बुजुर्गों ने दिये हुऐ सलाह को ठेंगा दिखाते हुए अंत में युध्द का मार्ग अपनाया। परिणाम यह हुआ कि महाविनाश में न वृध्द बचे न जवान-बचे सिर्फ पांच भाई पांडव और बेशुमार विधवाओं का चहुं ओर विलाप, यह नही इच्छा मृत्यु का वरदान पाए हुए भीष्म पितामह का महत्व तब अधिक उत्कृष्ट रूप में उभरता है। जब वे शर-शय्य पर पडे हुऐ अपने अनुभवों के आधार पर युधिष्ठिर को नीति, शांति, अहिंसा, राजधर्म आदि के संबंध में उपयोगी उपदेश देते है, जिन्हें युधिष्ठिर पाथेय स्वरूप अंगीकार करते हुए अपने राजधर्म निर्वाह करते है।

आधुनिक युग में पाश्चत्य संस्कृति की ओर आकर्षित होकर युवा पीढ़ी अपने माता-पिता को बोझ समझ रहे है। परिवार के सदस्यों को एक धागे में बांधने की क्षमता वृद्धों में थी, जिस कारण वह जमाना संयुक्त परिवार का था। लेकिन धीरे-धीरे संयुक्त परिवार प्रथा समाप्ति की ओर बढ़ रही है। एकल परिवार एवं छोटे परिवार की अवधारणा और जीवन की समस्याओं और व्यस्तताओं के बीच रोजगार की तलाश में युवाओं

घर से दूर चले जाने के कारण वृद्ध अपने आपको अकेला, असहाय और असुरक्षित महसूस कर रहे है। वृद्धों की समस्या में पारिवारिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, आर्थिक, राजनैतिक और मूल्याधारित अनेक आयाम है। दैहिक शक्ति क्षीण होने के कारणमात्र से उनकी पारिवारिक और सामाजिक हैसियत का कम हो जाना आज के युग की सांस्कृतिक मूल्य ह्रासता का द्योतक माना जा सकता है।

पारंपारिक भारत में वृद्ध को परिवार तथा समाज में उच्च स्थान दिया जाता था परिवार की पहचान परिवार के वृद्ध व्यक्ति के नाम से ही होती है। संयुक्त परिवार प्रणाली के अंतर्गत वृध्दों को सामाजिक सुरक्षा प्राप्त होती थी। पंरतु जैसे-जैसे औद्योगिकीकरण, नगरीकरण व सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि हुई वैसे ही संयुक्त परिवार का विघटन होने लगा। वर्तमान में पारिवारिक संरचना में परिवर्तन होने तथा एकल परिवारों में वृद्धि एवं परिवार के सदस्यों आर्थिक कार्य में भागीदार होने पर वृद्धों की देखभाल एक समस्या बन गई है। पश्चिमी सभ्यता के कारण उद्योग को अपने परिवार का समर्थन नहीं मिलता है। वहा दूरी बढ़ जाती है।

वृध्द की बढ़ती आयु के साथ व्यक्ति का भौगोलिक प्रभाव क्षेत्र संकुचित हो जाता है। जीवन के अंतिम अवस्था में वृध्दजन अपने परिवार तथा पड़ोसियों, समाज पर शारीरिक, मानसिक, भौतिक तथा भावात्मक रूप से निर्भर रहना पड़ता है।

परंतू आज के भाग दौड़ भरी जिंदगी में किसी के पास समय नहीं है कि उनकी परेशानी, पसंद तथा नापसंद, स्वस्थ समस्याओं को सुन सके। हर एक मनुष्य अपनी जिंदगी में व्यस्त रहता है।

भारत में सांस्कृतिक मूल्यों का पतन तीव्र गति से हो रहा है। यह वह देश है जहाँ वृद्धों का अभिवादन उनके पैर छूकर किया जाता था। लेकिन आज नई संस्कृति के विकास में वृद्धों को परिवार और समाज के एक किनारे कर दिया गया। पीढ़ी संघर्ष और मूल्य परिवर्तन की पीड़ा ने अनेक समकालीन हिंदी उपन्यासों में अभिव्यक्ति पाई हैं। पुराने मूल्यों को नष्ट होने से संबंधों में प्रेम, दया, करुणा जैसे मानवीय मूल्यों के साथ-साथ सम्मान करना, ऋण चुकाना, धर्म का पालन करना। जैसे सांस्कृतिक मूल्य खत्म हो चुके हैं । जैसे नए मूल्यों का आधार पैसे कमाना है। धन पाने की होड़ में युवा पीढ़ी स्वार्थी बनते गए । आज हर व्यक्ति सबसे ज्यादा स्वयं अपने आप से प्यार करता है। जिस माता-पिता ने उन्हें पाल पोस कर बड़ा किया उनका तिरस्कार कर रहे हैं और उन्हें बोझ समझकर वृद्धाश्रमों में छोड़ देते हैं। इस बारे में डॉ.राधा गिरधारी ने लिखा है- “पुरानी मान्यताओं के विरोध ने, माता-पिता के जीवन में होने वाले हस्तक्षेपों से दूर हटने की प्रवृत्ति से पारिवारिक संबंध तनावपूर्ण बनते जा रहे हैं| शिक्षकों की आत्मकेंद्रिता ने एकल परिवार का निर्माण करके पारिवारिक तनावों को खड़ा किया|”[18]

वृध्द और युवा जिसे पुराना और नया भी कह सकते है, उनके के बीच जो संबंध रहा है, वह परस्पर संवाद रहा है। वृध्दावस्था को परंपरा और युवावस्था को प्रगति माने तो परंपरा द्वारा समाज आगे बढ़ सकता है, इसके संबंध में आचार्य नरेन्द्र देव का एक निबंध है, ‘युवको का समाज में स्थान’ इस निबंध में आचार्य नरेन्द्रदेव ने यह बताने का प्रयास किया

है, कि भारतीय समाज में वृध्दों का महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने कहाँ है :- “सामान्यतः उन समाज में जहाँ स्थिरता आ गई है और जहाँ विकास की गति अत्यंत मन्द है, वृध्दों की सबसे, अधिक प्रतिष्ठा होती है। ऐसे समाज में वृध्दों का ही नेतृत्व होता है और उनका अनुभव ही समाज का मुख्य आधार होता है। चीन और भारत के समाज इसके उदाहरण है। हमारे पूर्वजों का कहना है, कि वह सभा ही नहीं है, जहाँ वृध्द नहीं है ।इससे हमको पता चलता है, कि समाज में वृध्दों का कितना अस्तित्व है।”[19]

हिंदी साहीत्य में वृध्दों को किस तरह से बोझ की तरह देखा जा रहा है। यह हम 'गिलीगडु' उपन्यास में भी देख सकते हैं उपन्यास में बाबू जसवंत सिंह अपने घर में कानपुर में रहते थे। लेकिन उनकी पत्नी की मृत्यु के बाद उन्हें अपने बेटे नरेंद्र के पास दिल्ली आना पड़ता है। उन्हें दिल्ली बुलाते वक्त नरेंद्र ने कहा था फ्लैट के दो कमरों में से एक वह खुद और दूसरा बच्चे इस्तेमाल करते हैं। इसलिए बालकनी में स्लाइडिंग ग्लास लगवा कर बच्चों को वहाँ रहने देंगे ताकि दिल्ली आने पर बाबूजी आराम से रह सके। लेकिन दिल्ली आने के बाद बाबू जसवंत सिंह चौंक जाते जब ड्राइवको उनके सामान बालकनी में रखते हुए देखा। आज के युवा अपना एकल परिवार चाहता है। उसमें अपने माता-पिता का दखल होना भी उन्हें अच्छा नहीं लगता। उनको बेटे के घर में रहने लगने के बाद उन्हें सब की उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। घर में ताने सह कर के अकेलापन और अवसाद में डूब जाते हैं। बहू उन्हें हर चीज के लिए ताना देती है। वह कहती है- बाबूजी आप रोज सुबह अपने कमरे

की बत्ती बंद करना भूल जाते हैं। भूल जाने से बिजली का मीटर तो नहीं खामोश बैठ जाएगा। अपने बेटे और बहू के तानों और शिकायतों को झेलने के बाद भी वे बेटे के घर को अपना समझकर रहने की कोशिश करते हैं।

इस संदर्भ में लेखिका कहती है कि - "वह बार-बार इस घर को अपना घर समझने की भूल कर बैठते हैं। जबकि उन्हें समझाया जा चुका है कि वह अपने काम से काम तक सीमित रहे। "वृद्ध लोग जो भी करें युवा लोगों को गलत ही लगता है। अपने ही घर में उन्हें हर काम के लिए टोका जाता है।"[21]

वृद्धों की समस्या के पारिवारिक, मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और मूल्याधारित अनेक आयाम है। दैहिक शक्ति के क्षीण होने के कारणमात्र से उनकी पारिवारिक और सामाजिक हैसियत का कम हो जाती है। 21वीं सदी के सांस्कृतिक मूल्य-हासता का द्योतक माना जा सकता है। वृद्धों की ओर देखने की समाज की दृष्टि जिस तरह क्षीण होती जा रही है, यह मुद्दा अब विलक्षण चिंता का बनता जा रहा है। समीक्षक चंद्रमौलेश्वर प्रसाद ठिक कहते हैं कि "बुढापे को एक नई दृष्टि से देखने की आवश्यकता है- एक ऐसी दृष्टि से जिसमें संवेदना हो और बूढ़ों के लिए आदर व सम्मान प्राप्त हो।"[22]

आज के भूंमडलीकरण के व्दार में मनुष्य मशीनी की तरह अपने काम में दिन रात व्यस्त रहते हैं। अपने घर के बुजुर्गो की तरफ ध्यान न दे पा रहे और न ही ज्ञान या अनुभव का लाभ उठा पा रहे। इस व्यावसायिक जीवन के कारण नई और पुरानी पीढ़ी के विचार का मेल नही हो रहा

है। नई पीढ़ी के सामने आकर्षण करनेवाली सुख सुविधा उपलब्ध हुई है। उनको पुरानो विचार, संस्कार को मान नही देते है। इस भाग दौड़ में हर एक व्यक्ती अपने आप में व्यस्त रखता। इसे हम बुजुर्ग वर्ग का ज्ञान तथा अनुभव को दूसरी पीढ़ी स्वीकार नहीं कर पा रही है। आज के एकल परिवारों के कारण हमारे समाज से सभ्यता और संस्कृति लुप्त हो रही है। युवा पीढ़ी अपने विचार बुजुर्गों के साथ बैठकर विचार साँझा नहीं कर पाते। जिससे मूल्यों का विघटन हो रहा है। आज का समाज वृध्दावस्था को एक बोझ की तरह देख रहा है। बदलते हुए मानवीय मूल्य, बदलते हुए पारिवारिक संबंधों के साथ मध्यवर्गीय व्यक्ति अनजाने ही अपनी मानवीय संवेदना खो बैठाता है। इस बदलते हुए पारिवारिक वातावरण में बुजुर्ग की स्थिति दयनीय हो रही है। वृद्ध की अमूल्यित स्थिति, कुंठित मानसिकता, अकेलेपन की त्रासदी, सम्मान विहितावतारं, व्याधि, ग्रस्तता, परिवार और सामाजिक निष्कपन आदि सारी बातें वृध्द विमर्श के केंद्र बिंदु है।

बुजुर्ग पेड़ को भले ही फल न दे, साया जरूर देते हैं इस तरह की मानसिकता बनने की जरूरत है। आज के समाज की तरफ नजर दौड़ाते है तो देखते सकते कि सत्कार और आदर के पात्र जन्म देने वाले माता-पिता को गैर-जरूरी बोझ समझकर वृद्ध आश्रमों में तड़फने, रोने और हर पल अपनी मौत के इंतजार के लिए टूटे हुए पौधे की तरह छोड़ दिया जाता है। आज जरूरत है इस वृतांत को समझने की। हर एक पुत्र-बेटी-बहू और बच्चों से यही उम्मीद रखी जाती है, जो उनकी नैतिक जिम्मेवारी उठा सके न की उन्हें बोझ की तरह देखे।

1.2 वृध्द अवस्था की त्रासदी

वृद्धावस्था को जीवन संध्या कहा जाता है। वृद्धावस्था तक आते-आते मनुष्य का शरीर कमजोर होता है। बदलते भूमंडलीकरण और बाजारवाद के कारण 21 वीं सदी में अधेड़ उम्र में ही हम मिलावटी खानपान, फास्टफूड, कसरत के अभाव से वृध्द होते जा रहे है। अनेक बीमारियों का सामना किया जाता है। यह सत्य है कि आज सभी बीमारियों का इलाज होता है पर इलाज का बुरा असर शरीर पर छूट जाता है। आज इन सभी कारणों से वृद्ध होने के समय से पहले मनुष्य का शरीर कमजोर पड़ता है। उसे अपने दैनिक कार्य के लिए दुसरो पर निर्भर रहना पड़े तो उसे एक बोझ की तरह देखा जाता है। वृद्धावस्था में शरीर की प्राथमिकताएँ भी बदल जाती है। अगर परिवार ही वृध्दावस्था में साथ दे तो आसानी से बुढ़ापा गुजर जाता है। परिवार का साथ न मिल पाऐ तो अपमानित, अकेलेपन, असाहय होकर जीवन काँटना पड़ता है, या मृत्यु की राह देखनी पड़ती है।

वृद्ध ही परिवार के सदस्यों को धागों में बाँधने की क्षमता होती है। अज एकल परिवार की अवधारण एवं जीवन की समस्याओं और व्यस्तताओं के बीच की रोजगार की तलाश में युवाओं घर से दूर चले जाने के कारण वृध्द अपने आप को अकेला, असहाय और असुरक्षित महसूस कर रहे है। वृद्धों की समस्या के पारिवारिक, मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और मूल्याधारित अनेक आयाम है। दैहिक शक्ति के क्षीण होने के कारण मात्र से उनकी परिवारिक और सामाजिक हैसियत कम होतीहै। २१ वीं सदी के सांस्कृतिक मूल्य हाजता का घोतक माना

जा सकता है। वृध्दों की ओर देखने की समाज की दृष्टि जिस तरह क्षीण होती जा रही है।

परिवार में आज वृद्धावस्था के शिकार को लाचारी एवं मजबूरी का जीवन जीना पड़ रहा है। सभी जगह पर बुजुर्गों एवं वृद्धजनों की काफी उपेक्षा होती नजर आती है। समाज में वृद्धजनों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं हो रहा है। जहाँ अपने कहे जानेवाले परिवार के लोग बेटे-बेटियाँ भी अपने माता-पिता को, सास-ससुर को वृद्धाश्रमों की यात्रा के लिए मजबूर करते हैं। आधुनिकता तथा उत्तर आधुनिक सोच एवं मानसिकता ने पारिवारिक मूल्यों के विघटन को काफी हद तक बढ़ावा दिया है। परिवार के साथ -साथ समाज ही वृद्धजनों को तिरस्कार एवं घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। परिवार में जहाँ एक ओर बुजुर्गों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, वहाँ व्यापक सामाजिक परिप्रेक्ष्य अस्पताल, बस अड्डे, बस, बिलों के भुगतान के दौरान तथा बाजार में भी उन्हें दुर्व्यवहार का शिकार होना पड़ रहा है। एक समय था जब परिवार में बुजुर्गों तथा बड़ों का काफी हद तक आदर एवं सम्मान किया जाता था। घर-परिवार के हर निर्णायक समय में बुजुर्गों एवं वृद्धों से सलाह मशविरा किया जाता था। उनके बगैर कोई भी महत्त्वपूर्ण निर्णय नहीं होते थे। वृद्धजनों को सभी जगह पर अन्याय, उपेक्षा, शोषण, शर्मनाक व्यवहार तथा आर्थिक अभावों का पर्याप्त मात्रा में शिकार होना पड़ रहा है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बुजुर्गों की होती उपेक्षा के बारे में गांधीवादी विचारक तथा चिंतक डॉ रजी अहमद “पुरानी परंपराओं के पतन को जिम्मेदार मानते हैं ,बेटी एवं बहू में फर्क करने की पारिवारिक व्यवस्था भी इसके लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार है। कथन से स्पष्ट होता है कि पुरानी परंपराओं के पतन के

कारण तथा बेटा-बेटी भेदभाव करने की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण बुजुर्गों को इस प्रकार की संकुचित मनोवृत्ति का शिकार होना पड़ रहा है।"[23]

पुरानी परंपराओं के चलते राष्ट्र तथा समाज का विकास होगा। लेकिन यहाँ प्रस्तुत बात गंभीरता से सोचने के लिए मजबूर करती है। डॉ. ऋषभदेव शर्मा बुढ़ापे को एक नई दृष्टि से देखने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहते हैं,-: कि एक ऐसी दृष्टि से जिसमें संवेदना हो और बूढ़ों के लिए आदर व सम्मान हो। जीवन देने की आकांक्षा हो।" स्पष्ट है कि वृद्धजन तथा बुजुर्गों के प्रति नए दृष्टी से सोचने की आवश्यकता होती है। आम जनों में उनके प्रति सम्मान एवं आदर के साथ संवेदना का स्वर उभरकर आना समय एवं समाज की दृष्टि से आवश्यक है। हमारा दायित्व बनता है कि वृद्धजनों को नया जीवन देने का सामर्थ्य हम सभी में हों। हमारे दिमाग में बुढापा शब्द के कहने पर ही दिमाग में तुरंत बुढ़ापे के शिकार व्यक्तित्व की छवि उपस्थित होती है। सामान्य रूप से हम यह सोचने लगते हैं कि बुढ़ापा अर्थात जो मात्र निकम्मा, व्यर्थ है, जो किसी काम करने लायक न हो, जो मात्र परिवार के लिए बोझ है, आर्थिक अभावों में भागीदार है, जिसे परिवार से कुछ लेना-देना नहीं है, ऐसे तरह-तरह के विचार घर करते है। स्वाभाविक रूप से बुजुर्गों के प्रति हमारे मन में आस्था एवं आत्मीयता की भावना पनपना मुश्किल होता है। वास्तव में बुढ़ापा नई पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत एवं दिशा-निर्देशक होते है। नौकरी के लिए यूवा वर्ग शहर में जाकर बसते हैं, जिसके कारण बुजुर्ग लोग अकेले व बेसहारा हो जाते हैं। खासतौर पर मध्यम व उच्च वर्ग में यह संकट ज्यादा गंभीर दिखाई देता है। बच्चे तो

उच्च शिक्षा प्राप्त कर नौकरी के लिए महानगरों या विदेशों में चले जाते हैं। अपने बच्चों की सफलता के बातें बूढ़े लोग फक्र के साथ करते भी है लेकिन थोड़े ही दिनों में उन्हें इस बात का ऐहसास हो जाता है कि बच्चों की सफलता उनके बुढ़ापे की विफलता बनती जा रही है। जायदाद होने के वृद्ध अगर गाँव में रहे तो वहाँ जीवन की मूलभूत जरूरतें भी पूरी नहीं हो पाती। सब बेचकर बेटों के पास महानगरों में चले आए तो सारी राशि उनकी हथेली पर रखनी पड़ती है। यदि ऐसा नहीं करते तो उन्हें घातीबाप, पापीबाप, कठबाप कहा जाएगा। बीच बाजार में अगर कोई गिरकर बेहोश हो जाए तो कोई अस्पताल पहुँचाने वाला तक नहीं मिलेगा।

पुराने और आधुनिक सांस्कृतिक मूल्य और विचारधारा में काफी परिवर्तन आया है। परिवार का कोई फैसला उनकी सलाह के आधार पर होता था। उन्हीं की सत्ता एवं प्रभाव के कारण पहले संयुक्त परिवार हुआ करते थे, वे परिवार के सदस्यों को एक धागे में बांधे रखते थे, परंतु भौतिकवादी युग में वृद्धों की समस्याओं का बढ़ता एवं समाज में उनकी उपयोगिता कम और समस्याएं बढ़ती नजर आ रही है। बुढ़ापा जीवन का अंतिम पड़ाव होता है। इस पड़ाव में जीवन असक्त हो जारता है, कार्य करने की क्षमता कमजोर हो जाती है। भरण-पोषण के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। यही निर्भरता वृद्धों की समस्याओं की मूल हैं। शारीरिक एवं आर्थिक दृष्टी से घुटन भरी जिन्दगी जीने को विवश हो जाती है। चाहे वह शिक्षित हो या अशिक्षित क्यों न हो, वह युवा पीढ़ी से तालमेल नहीं बैठा पाते है, जिससे उनकी समस्याओं की वृद्धि हो जाती है। विश्व में समाज का बहुत बड़ा हिस्सा ऐसा है कि जहँ वृद्धावस्था

में अब सामाजिक एवं आर्थिक असुरक्षा के कष्ट झेलते हैं। युवा वर्ग वृद्धों को कोई मान, सम्मान नहीं देते हैं।

वृद्धों की अवमूलियत स्थिति, कुंठित मानसिकता, अकेलेपन की त्रासदी, सम्मान विहिनता, व्याधि ग्रस्तता, परिवार और सामाजिक निष्काषण आदि सारी बाते वृद्ध विमर्श के केंद्र बिंदू है। बुजुर्ग पेड़ भले ही फल न दे, लेकिन साया जरूर देते हैं इस तरह की मानसिकता बनने की जरूरत है। वृद्धों की उपेक्षा कर परिवार और समाज कभी भी सम्मान प्राप्त नहीं कर सकता, अपनी पूरी जिंदगी परिवार, समाज और देश को देने वाले बुजुर्गों के जीवन की संध्या को सुखी, सुरक्षित और सुकून भरा बनाने की जिम्मेदारी का एहसास अब सभी को लाने की जरूरत हैं।

संदर्भ सूची

1. फादरकामिलबुल्के, अंग्रेजी-हिंदीकोष, नईदिल्ली,पृ. - 433
2. प्रामाणिकहिन्दीकोश, वर्मारामचन्द्र, पृ. संख्या -744
3. शिक्षार्थीहिन्दीशब्दकोश, डॉ.हरदेवबाहरी, पृ.संख्या - 651
4. वर्धाहिंदीशब्दकोश, रामप्रकाशसक्सेना, पृसंख्या- 2704
5. अभिनवहिंदीकोश, डॉ.राकेशकुमार, पृ.संख्या-632
6. भारतीय हिंदीकोश , पृ.865
7. ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी, पृ.
8. चंद्रमौलेश्वर प्रसाद- वृध्दवस्था विमर्श,परिलेख, प्रकाशन सं.2016, पृ.20
9. Becker, Charles S. (1959) : Physical Functioning of Older People Towards better under standing of the Ageing, Council on Social WorkEducation, New York, Page - 9

10.चंद्रमौलेश्वरप्रसाद- वृध्दवस्थाविमर्श, परिलेख, प्रकाशनसं.2016, पृ.20)

11. भारतीय परिदृश्य में वृध्दअवस्था: एक विवेचन, International Journal of Multidisciplinary Research and Development, Vol. 3, Page - 282-285.

12. Lueis, Dablin (1951) : The Facts of Life, The Macmillan Company, New York, Page - 50

13. सरकारी प्रकाशन (1989) रिपोर्ट ऑफ नेशनल सेम्पिल ऑफ ऑर्गनाइजेशन (NSSO), सर्वे ऑफ इण्डिया (42वीं)

14. जाखड़, विक्रम सिंह (2009)वृद्धवस्था एवं बदलते सामाजिक मुल्य, वृद्धा अवस्था एक समस्या, पोइंटर पब्लिकेश,जयपुर, सं पृ. 43

15. सिलावट, सुधा एस. (1955) वृद्धावस्था की समस्याएं, सामाजिक सहयोग त्रैमासिक शोध पत्रिका, श्री कृष्ण शोध संस्थान, उज्जैन (म.प्र.), पृ. स. - 11

16. Chowdhary, D. P. (1992): Aged in India, Inter India Publications, New Delhi, Page - 20.

17. शर्माविरेंद्रप्रकाशन, भारतीयसामाजिकव्यवस्था, पंचशीलप्रकाशन, जयपुर, सं2009,पृ.55

18. डॉ.गिरधारी राधा, राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में व्यक्ति और समाज, पृ.सं-93

19. हिन्दीं के श्रेष्ठ निबंध एवं प्रयोगगत व्याकरण - प्रधान संपादक- डॉ.सत्यभामा आड़िल, सम्पादक- डॉ.नलिनी श्रीवास्तव, विकल्प प्रकाशन रायपुर , पृ.सं.7

20. मुद्गलचित्रा, गिलिगडु ,सामयिक प्रकाशन, 2002 ,पृ:56, पृ: 94)

21. वहीं, पृ.94

22. चंद्रमौलेश्वर प्रसाद- वृध्दवस्था विमर्श, परिलेख, प्रकाशन सं.2016, पृ.20

23. शर्मा ऋपनदेव (सं.) वृद्धावस्था विमर्श, परिलेख प्रकाशन, नजीबाबाद, 2016पृष्ठ-20

24. डॉ. सिंहकुमार, वृद्धमहिलाओं का समाजशास्त्र, प्रकाशक उत्कृष्ट पब्लिशर्स कानपुर, सं2018

25. https:@@.www.jansatta.com

26. सिंहश्रीभगवान, साहित्य में वृध्दविमर्श, आलेखजनसत्ता, सं, 2019

डॉ.सूरज सिंह नेगी के उपन्यासों में वृध्द समस्याएं

वृध्दावस्था को जीवन की अंतिम अवस्था के रूप में जाना जाता है। जिससे उसकी शारीरिक अव्यव कमजोर हो जाते है। प्रत्येक मनुष्य को जन्म लेने के पश्चात बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था तथा वृध्दावस्था से गुजरना पड़ता है। वृध्दावस्था को संध्या काल भी कहाँ जाता है क्योंकि यह जीवन का अतिम पड़ाव होता है। इस अवस्था में शारिरिक क्षमतांए क्षीण होने लगती है और व्यक्ति अनेक गंभीर समास्याओं से गुजरते है। जैसे की बालों के रंग में परिवर्तन, दाँत गिरना, आँखों की दृष्टि कमजोर होना, शारिरिक रोग आदि का सामना करना पड़ता है। वृध्दावस्था में बुजुर्ग मानसिक, शारिरिक, आर्थिक समस्याओं का सामना करते है। जिसके कारण उन की शारिरिक और मानसिक शक्ति का निरंतर नाश होता जाता है। जिस से वे अपनी दैनिक दिनचर्या के काम स्वयं नहीं कर पाते, इसलिए उन्हें दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। संयुक्त परिवारों का धीरे-धीरे विलोप होने के कारण परिवार में वृद्धों के लिए समस्याएँ उत्पन्न होने लगी है। इनके मनौवैज्ञानिक समास्याओं में सुरक्षा, असुरक्षा की भावना प्रमुख है।

प्रो. सुधा एस. सिलावट के अनुसारः- "वृद्धावस्था को उम्र, शारीरिक - स्थिति तथा मानसिक दशाएं निर्धारित करते हैं। इस अवस्था में व्यक्ति की उत्सुकता में कमी, निराशा, आलस्य, अक्षमता, चिढ़चिढ़ापन, एकाग्रप्रियता, सामंजस्य का अभाव, उपदेश देना आदि प्रमुख है। जो कि

बदलते शारीरिक तथा मानसिक लक्षण है। ऐसे व्यक्ति आत्मकेंद्रित, संवेदनशील, निराशावादी एवं भविष्य के प्रति चिंतित रहते हैं। इसलिए अपना जीवन व्यवस्थित तथा संतुलित नहीं कर पाते हैं। इनकी प्रमुख समस्याओं में समय व्यतीत करने तथा मनोरंजन की समस्या, सामाजिक सामंजस्य, आर्थिक तथा पूंजी की देखभाल संबंधी समस्याएं प्रमुख होती है।"[1]

इस अवस्था में मनुष्य शारिरिक और मानसिक रूप से कमजोर हो जाते है। मनुष्य अपनी भावनाऐं सही तरह से व्यक्त नहींकर सकता है और भविष्य में चितिंत रहकर अपना जीवन व्यतीत करते है।

प्राचीन भारतीय समाज में संयुक्त परिवार में वृध्दजनों के प्रति विशेष सम्मान और आदर की भावनाएँ थी। वे सदैव परिवार में मुखिया की भूमिका अदा करते हैं तथा परिवार में सही मार्गदर्शन प्रदान करते आए हैं। मुखिया होने के कारण परिवार में निर्णय लेने का अधिकार भी रखते थे। समय के साथ-साथ संयुक्त परिवारों के बिखराव व एकल परिवारों की शुरुआत होती है। जिसके कारण परिवारों में एक प्रकार की रिक्तता पैदा करना शुरू होता है। इसका उदाहरण हम वर्तमान में देख सकते हैं जैसे कि संकट का बीमा कहे जानेवाल संयुक्त परिवार में वृध्दजन आज उपेक्षित पड़े दिखाई देते हैं। वे अपने ही घर-परिवार में दया के पात्र बन है। वृद्धजनों की समस्या केवल लालन-पालन की या उनके गुजारा करने तक ही सीमित नहीं है ब्लकि उनके स्वास्थ्य एवं मनोरंजन के लिये, उनका भावनात्मक जरूरतों को पूरा करने और उससे भी बढ़कर बुढ़ापे में भी उन्हें सक्रिय बनाते है।

भारत में वृद्धावस्था की समस्या एक सार्वभौमिक स्वरूप ग्रहण कर चुकी है। किसी न किसी रूप में आज यह समस्या समाज के अधिकतर परिवारों में देखी जा सकती है। जिसका प्रमुख कारण दो पीढ़ियों के मध्य विभिन्न मुद्दों पर पाया जाने वाला मतभेद या टकराव है, क्योंकि सामाजिक संरचना में होने वाले परिवर्तनों के साथ युवा तो स्वयं को सरलता से परिवर्तित कर लेते हैं। लेकिन वृद्ध पीढ़ी अपनी परम्परागत मूल्यों के साथ किसी प्रकार का समझौता नहीं करना चाहते। वह ऐसा महसूस करते है कि आज का युवा वर्ग या युवा पीढ़ी गलत मार्ग पर चल रहे हैं। जिन्हें वह सुधारना चाहते हैं और यही सुधारवादी प्रवृत्ति उनमें संघर्ष को जन्म देती है।

डॉ. सूरज सिंह नेगी के उपन्यासों में वृद्ध की समास्याओं का चित्रण मिलता है। भूमंडलीकरण के बदले युग में रिश्तों में आए बदलाव का सबसे अधिक परिणाम वृध्दों के जीवन पर हुआ है। वर्तमान युग में बच्चे पढ़ने हेतु घर से बाहर निकलते हैं फिर नौकरी के लिए विदेश चले जाते हैं और वहीं बस जाते हैं। माता-पिता उनकी राह देखते- देखते गुजर जाते हैं। डॉक्टर नेगी जी ने वृध्दों की यह छटपटाहट तथा पीड़ा को अत्यंत मार्मिक ढंग से अपने उपन्यासों में अभिव्यक्त किया है। आधुनिकरण के कारण समाज में आ रहे बदलाव का काफी असर वृध्दों के जीवन पर हुआ है। आज का युवा समाज यह समझ रहा है कि वह बूढों का बोझ ढो रहा है और यह भूल जाता है कि वृद्ध ने अपनी युवावस्था में उन बच्चों का भरण पोषण करके उन्हें युवा बनाया है। युवाओं को यह समझने की जरुरत है कि उन्हें भी वृद्धावस्था से गुजरना पड़ेगा तथा यह भी विचरणीय होना चाहिए कि माता -पिता ने उन्हें इस काबिल बनाया है कि वे स्वयं अपने पैरों पर खड़े हो सके और अपने

परिवार का भरण पोषण कर सके। तो युवाओं का कर्तव्य बनता है कि वे अपने माता-पिता का ध्यान रखें और उनसे समय-समय पर वार्तालाप करने तथा सुख-दुख में उनके साथ रहे। किंतु इसके विपरित देखा जा सकता है कि बच्चे अपनी ओर से कोई सम्पर्क करने की कोशिश नहीं करते है। वृद्धावस्था में शारीरिक पीड़ा से वह गुजर रहे होते हैं। आज वृध्द समाज के द्वारा उपेक्षा का केंद्र बन गए है। साथ ही परिवार के निर्णय प्रक्रिया से इन्हें दूर रखा जाता है। रचनाकार ने अपने उपन्यासों में वृध्द की शारीरिक, मानसिक, आर्थिक समयाओं का चित्रण किया है।

वृध्दा अवस्था में व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक शक्ति का हस्र होने लगता है। उसकी अधिगम क्षमता, रचनात्मक क्षमता एवं स्मरण शक्ति भीक्षीण होने लगती है। अनेक वृध्द जो उत्साही प्रकृति के होते हैं वह शारीरिक अक्षमता आ जाने पर अपनी कमियों को स्वीकारते हुए मानसिक सृजनात्मकता कौशल्य इत्यादि का प्रदर्शन करते हैं।

स्टेज 1965 नाम नासिक स्वारंभ को परिभाषित करते हुए कहा है कि- “मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य ऐसे सीखे गए व्यवहार से होता है जो सामाजिक रूप से अनुकूलित होते हैं। अर्थात मानसिक स्वास्थ्य की मूल कसौटी समायोजन करने में सहायक व्यक्ति का अर्जित व्यवहार है। जिसमें व्यक्ति अपने जीवन के विभिन्न हालात में सामाजिक एवं शारीरिक रूप से एक मान्य व्यवहार बनाए रखना है।”[2]

अतःकहा जा सकता है की वृद्धों को वर्तमान में उपेक्षित होकर अपना जीवन बिताना पड़ रहा है जिसके कारण उन्हें मानसिक शारीरिक, आर्थिक समस्याओं से झुजना पड़ रहा है।

2.1 मानसिक समस्याएं

इस अवस्था में व्यक्ति की मानसिक क्षमता कम होने लगती है और उसकी याददाश्त कमजोर होती हैं। इस अवस्था में व्यक्ति शारीरिक रूप से इतना दुर्बल हो जाता है कि वह बिना सहायता के बिना नहीं रह सकता। संयुक्त परिवार के विघटन ने वृध्दों में मानसिक असुरक्षा की भावना को विकसित कर दिया है। वृद्धो में अकेलेपन एवं पारिवारिक देखभाल के अभाव में मानसिक समस्या उत्पन्न हुई है। इस तनाव के कारण वे अनेक प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक रोगों का शिकार हो जाते हैं। पहले संयुक्त परिवार ही वृद्धजनों को मानसिक सुरक्षा प्रदान करते थे। परंतु इस आधुनिक दौर में इसके अभावको देखा जा सकता है। वृध्द जनों को असुरक्षा का एहसास होता है। 60 वर्ष की आयु में जब व्यक्ति को सेवानिवृत्ति मिल जाती है। तब व्यक्ति की वृध्दअवस्था भी प्रारंभ हो जाताहै। इस अवस्था में सेवानिवृत्ति के बाद शारीरिक और मानसिक शक्ति क्षीण हो जाती है जिससे उनका स्वस्थ कमजोर हो जाता है। जिसके कारण वे महत्वपूर्ण काम करने में सक्षम नहीं होते हैं।

२.२.१ असुरक्षा का एहसास

वृध्दावस्था में बुजुर्ग अपने ही परिवार पर निर्भर रहते है पहले वृध्दजन अपने बच्चों को बुढ़ापे की लाठी कहा करते थे। पंरतु वर्तमान दौर में ऐसा लगता है कि यह लाठी उनको किसी प्रकार का सहारा नहीं दे पा रही है। बुजुर्ग वृध्दअवस्था में पुरी तरह से परिवार पर आश्रित होते है। बच्चे वृध्दजनों का उचित ध्यान नहीं रख पा रहे है। उन्हें परिवार में रहकर भी अकेलापन एवं असुरक्षा का एहसास हो रहा है। इसका उदाहरण -'वसीयत' उपन्यास में देखा जा सकता है। वृद्धावस्था में अपने

माता-पिता अपने बच्चों पर निर्भर रहते हैं। उन्हें अपने बच्चों का साथ बुढ़ापे में चाहिए पर वर्तमान दौर में अपने सपने पूरे करने गए युवा पीछे मुड़कर अपने माता-पिता को नहीं देखते हैं। वह अकेलेपन में ही अपने जिंदगी गुजारते हैं। अंतिम पड़ाव में उन्हें बेटों का साथ चाहिए होता है। परंतु उन्हें न मिलने के कारण मानसिक समस्या का शिकार होना पड़ता है।

'वसीयत' उपन्यास में राजकुमार पढ़ लिखकर विदेश में बड़ा डॉक्टर बन जाता है। हर एक माता-पिता की इच्छा होती है कि घर में इतना बड़ा डॉक्टर है, तो हम और किसी से इलाज क्यों करें। जब विश्वनाथ को तेज खांसी हुई तो सुधा घबरा कर डॉक्टर के पास जाने की जिद करती है। तो विश्वनाथ कहता है-"घबराओ मत सुधा, मेरा डॉक्टर बेटा विदेश से आ रहा है, मैं भला किसी दूसरे डॉक्टर के पास अपना इलाज करने को क्यों जाऊँ?"[3]

आधुनिक काल में सब कुछ बदल रहा है। परंतु अपने बेटे के प्रति माता-पिता की सोच नहीं बदलती है। वह अपने बेटे को ही सब कुछ मानते है। वर्तमान समय में युवा का मानसिक दृष्टिकोण माता-पिता के प्रति बदल रहा है।

भारतीय समाज में माता-पिता को उच्च स्थान दिया जाता है। बाल्यावस्था से लेकर किशोरावस्था तक बच्चों के निर्णय माता-पिता लेते हैं। एक बार बच्चे घर से बाहर शहर में या देश विदेश में पढ़ने या नौकरी करने जाते हैं तो वहाँ पर ही अपनी गृहस्थती बसा लेते हैं। जीवन के अमूल्य निर्णय

में भी अपने माता-पिता को शामिल नहीं किया जाता है। जब राजकुमार अपने पिता से कहता है-“मैं एयरपोर्ट पहुँच गया हूँ और आपको बताना भूल गया हूँ कि मेरे साथ आपकी बहू रूबी भी है। अरे हाँ, पापा मैं आपको बताना भूल गया था कि मैं वहीं विदेश में शादी कर ली है। यह सब इतना जल्दी हुआ कि आपको बता नहीं सका और हाँ, पापा वहाँ यहाँ की तरह फिजूलखर्च और दिखावा होता नहीं।”[4]

उन्हें अपने जीवन के अमूल्य क्षणों में अपने माता-पिता को शामिल करना भी उचित नहीं लगता। जन्म सेलेकर माता-पिता बच्चों के प्रति इतना कुछ सोचते है। हर एक मुसीबत में उनके साथ ढाल बनकर खड़े होते हैं और बच्चे बड़े होकर सब मान सम्मान भूल कर खुद के निर्णय खुद लेते हैं, इसमें माता-पिता को अपने खुशियों में भी शामिल करना सही नहीं लगता है। इसलिए बुढ़ापे में बुजुर्गोंको स्वयं के पुत्र होते हुए भी उन्हें असुरक्षा का ऐहसास होता है।

विश्वनाथ को अपने बेटे राजकुमार से बात करने की इच्छा होती है कि वह और बहू उनके पास आ जाए। वह स्वयं को रोक ना सका खुशी के मारे उन्होंने मोबाइल पर नंबर डायल करके अपने बेटे को फोन लगाया। उसने इधर-उधर चारों ओर नजर दी आसपास में कोई नहीं था। उसके चेहरे पर चमक आई पंरतू बेटे के फोन ना उठाने के कारण चेहरे पर निराशा फैल गई। बाद में फिर फोन किया तो उन्होंने उठाया और कहने लगा कि- “पापा अब आप ठहरे रिटायर्ड आदमी, दिन भर आराम ही आराम, अरे हमें तो ठीक से का करने दो,जानते हो कितना

कॉम्पटीशन है यहाँ पर। अभी थोड़ी देर पहले मम्मी का फोन आया,फिर आपने कर दिया। मैंने कल ही नया हॉस्पिटल ज्वाइन किया है, बहुत काम रहता है और एक आप लोग हैं।"[5] इस आधुनिक दौड़ में मनुष्य मशीनों की तरह व्यवहार कर रहा है। जन्म से लेकर जवान होने तक हर एक प्रतियोगिताओं में माता-पिता साथ होते हैं पर जब उनको बच्चों की याद आती है तो वह तुरंत फोन कर देते है। लेकिन इस भाग दौड़ में बच्चे इतने व्यवस्थ होते है की उन्हें अपने माता-पिता से बात करने का समय नहीं होता है। आपके पास सेवानिवृत्ति होने के कारण आपके पास समय ही समय है। वह परिवार से दूर रहकर अपनी जिंदगी अपने तरीके से जीना चाहते हैं। इससे ज्ञात होता है कि युवाओं को परिवार के महत्व और उनसे मिलने वाली भावनात्मक आदत से वंचित कर देते हैं। व्यक्ति अपने स्वार्थ के आगे अपने माता-पिता के प्रेम, उनके त्याग को भी भूल बैठते है। इससे वृद्ध जीवन की असहामत एवं पीड़ा का एहसास होता है। विश्वनाथ और सुधा ने अपने बेटे राजकुमार को पढ़ने के लिए विदेश भेजकर डॉक्टर बनाया। उसी को अपने माता-पिता को मिलने की फुर्सत नहीं है। यहाँ तक की फोन पर भी बात करने के लिए उसके पास समय नहीं है। वृध्दावस्था में उन्हें अपने बच्चों से सहायता की आवश्यकता होती है।

माता-पिता बच्चों को अपने बुढ़ापे का सहारा समझते हैं लेकिन जब समय आता है उन्हें देखने के लिए तो नज़रे तरस जाती हैं। विश्वनाथ के बेटे भी इसी प्रकार अपने भावी जीवन की सुंदर अभिलाशा में अपनी माँ की बीमारी कोअनदेखा कर देता है, गाँव से उसके पिता उसे पत्र भेजते हैं

कि उसकी माँ बहुत बीमार है और उससे मिलना चाहती हैं। लेकिन वह विदेश जाने का लोभ त्याग नहीं पाता। उसकी पत्नी उसे गाँव जाने के लिए समझाती है, तो वह उत्तर देता है- “आज जिंदगी की सबसे बड़ी उपलब्धि हासिल हुई है,जिस दिन के लिए मैं जीवन भर इंतजार करता रहा। आज उस अवसर को भला कैसे हाथ से जाने दूँगा।”[6] अपने काम काज के आगे अपने माता-पिता की तबयत का खयाल भी उन्हें नहीं होता। एक बार घर से बाहर निकले यूवा पलटकर अपने माँ-पिता की ओर नहीं देखते। उनकी माँ बीमार अवस्थाओं से गूजर रही है। वह अपने बेटे को एक बार देखने के लिए तरस जाती है, पर बेटा अपने काम में तरकी पाने के लिए विदेश जाता। यहाँ पर पुत्र के प्रति स्वार्थ भावना दिखाई देती है। उन्हें अपने माँ-पिता की चिंता नहीं होती है।

आज के वर्तमान दौर में बच्चे माता-पिता का मान सम्मान नहीं करते है। जिस तरह पुरानी पीढ़ी अपने माँ-पिता के साथ दूर व्याहार करते। उन्हीं को देखकर यूवा पीढ़ी बुजुर्ग को मान समान नहीं देते है। उसी का उदाहरण 'वसीयत’ उपन्यास में देख सकते है।

“क्यों विश्वनाथ ! आज बाप के दर्द का अहसास कैसे हो आया तू कैसे भूल गया कि जो किसी का बेटा होता है वह बाप भी बनता है, कैसे लगता है मन को जब हमारे अपने ही हमारे भावनाओं की कदर नहीं करते और उनसे खेलते हैं।”[7] विश्वनाथ खुद को ही सवाल पूछ रहा है। जिस तरह अपने माता-पिता को दूर व्यवहार करता है। उसी का जवाब उनको मिल रहा है।

वर्तमान दौर में ऐसे बहुत ही कम दिखाई देता है। जहाँ बेटा अपने वृद्ध माँ- बाप की अच्छी तरह से देखभाल करता हो। उन्हें जरा भी खरोज आई तो वह जल्दसे डॉक्टर के पास लेकर जाते हो। जो बुजुर्ग होते हैं। उन्हें भी लगता है कि बेटे जो विदेश गए हैं, उनके हालचाल के बारे पुछे, उनकी भी देखरेखकरें।इसका उदाहरण हम विश्वनाथके माध्यम से देख सकते हैं वह इस प्रकार है-"सुधा क्या करेगी सुनकर आज भगवती बाबू को थोड़ा सा बुखार क्या हुआ उनका बेटा मोहन झटपट से डॉक्टर के पास ले गया। काश! मेरा अपना बेटा भी झूठ ही सही कभी मेरे बारे में पूछ ही लेता।"[8] इससे पता चलताहै की वृध्द माँ-पिता की इच्छा होती है, की जीवन के हर एक पड़ाव में उनका साथ दे।जब वह बीमार पड़ते तो उनकी सही तरह से देखबाल करें। इसका उदाहरण हम राजकुमार के माध्यम से देख सकते हैं।

राजकुमार को जब पता चलता है कि उसके पिता अपनी बीमारी का इलाज करवाने के लिए कुछ समय उसके पास जाकर रहना चाहता है। तो यह सुनकर वहींरूक जाता है। 'वह नहीं चाहता कि उसके माता-पिता उसके पास आकर रहे इसलिए वह विदेश जाने का बहाना बनाकर अपने कर्तव्य से छुट्टी पा लेता है। माँ का फोन आने पर कहता हैदरअसल में कल सुबह ही एक माह की ट्रेनिंग के लिए विदेश जा रहा हूँ। तुम्हारी बहू और पोता भी मेरे साथ ही जाएंगे। "चिंता ना करो मैं वहाँ सिटी हॉस्पिटल के डॉक्टर को कह देता हूँ।"[9] युवाओं की संवेदनाएं इस हद तक मर गई है कि कभी-कभी माँ-पिता की मृत्यु पर भी उन्हें देखने के

लिए घर नहीं आते। बच्चे आधुनिकता की दौड़ में पीछे छूटते जा रहे हैं। उनके लिए माता-पिता से अधिक जरूरी उनका काम होता है।

जीवन के अंतिम वृद्ध अवस्था में पत्नी और पती दोनों को एक दूसरे का सहारा होता है। बीमारी के व्दार में एक दूसरे का सहारा बनते है। परिवार में होकर भी उन्हें अकेलेपन की जिदंगी जीना पड़ता है। इसका उदाहरण हम सूधा और विश्वनाथ के माध्यम से देख सकते है।

जब सुधा और विश्वनाथ इलाज करने के लिए डॉक्टर के पास जाते हैं तो उसकी भेट अन्य डॉक्टर के साथ राजकुमार के साथ होती हैं। उन्हें अपने देखकर अन देखा करके चला जाता। नर्स कहती है कि माँ जी “वह दिल्ली के प्रसिद्ध अस्पताल में सर्जन है। डॉक्टर राजकुमार इस अस्पताल में आते रहते हैं जब भी कोई बड़ी के सहोतीहै,तो उन्हें बुलाया जाता है।”[10] आधुनिक युग में जी रहे हैं इंसान को अपना सफर खुद तय करते हैं अपनी तरक्की करने के लिए अपने बुजुर्गी माँ-बाप को नजर अंदाज करते हैं। इतनेबड़े अस्पताल में सर्जन है। फिर भी उन्हें अपने माता-पिता के बीमारी का इलाज करने से लजीत होते हैं। यह तक भूल जाते जीन माता-पिता ने अपने बीमार समय पर साथ देते वह भी भूल जाते हैं। जब उन्हें अपने पुत्र की जरूरत होती है, तो वह उन्हें देखकर अनदेखा करके चले जाते। इतना बड़ा डॉक्टर होकर अपने वृध्द माता पिता की चिंता नहीं समज रहे।

अपने बच्चोंको हर एक सूविधा प्राप्त करने के लिए। पिता दिनरात मेहनत करके पैसे कमाता। खूद भूखा रहकर अपने बच्चों की इच्छापुर्ण करता

है पर आधूनिक यूग में सिर्फ अपनी माँगह पूरी होने तक ही पिता को मान सम्मान दिया जाता।

इसका उदाहरण हम 'रिश्तो की आँज' उपन्यास में मानसिक समस्याएं का चित्रण देख सकते है। राम प्रसाद दिन रात मेहनत करके बेटे के लिए मोटरसाइकिल खरीदकर देता है। वह स्वयं आने जाने के लिए साइकिल का प्रयोग करता है। एक दिन उसकी साइकिल पंचर हो जाती है। उसकी जेब में रखें पैसे भी नहीं होते की पंचर टायर को ठीक करवा सके। वह पैदल ही घर की तरफ जा रहा होता है,कि रास्ते में एक सिंगल पर उसे उसका बेटा विपिन मोटरसाइकिल पर दिखाई देता है। विपिन के साथ उसका दोस्त भी था। वह सोचता हे की वह उसे मोटरसाइकिल पर बिठाकर घर ले जाएगा,लेकिन बेटा इतना संवेदनशील नहीं होता है कि वह अपने पिता को देखकर भी अनदेखा कर देता है। यथा-"विपिन ने भी राम प्रसाद को देख लिया था लेकिन उसने ओर देखकर दिया तभी ट्रैफिक सिग्नल हुआ वह विपिन को आवाज देने की वाला था कि विपिन तेजीसे मोटरसाइकिल का एक्सीलेटर दबाया और भीड़ को पीछे छोटे हुए आगे बढ़ गया।"[11]यूवा पीढ़ी अपने माता-पिता के साथ कटु एवं तनावपूर्ण संबधो के रूप में हमारे सामने आ रहे हैं। वे माता-पिता द्वारा उनके किए त्याग को भूलते जा रहे हैं। जिस तरह से देख सकते है कि पिता स्वयं आने जाने के लिए साइकिल का प्रयोग करते। आज का यूवा वर्ग समाज के सामने वृध्द माता-पिता की मदत करना लजित लगता है।

भारतीय समाज में परिवार का मुखिया पिता होता है। अगर घर के मुखिया का मृत्यु हो जाने पर घर की जिम्मेदारी बड़े बेटे पर आति है। जिस तरह से पिता जी परिवार का पालन-पोषण करत थे, उसी तरह परिवार को सूख सूविधा पहुँच ने की जिम्मेदारी होती है। इसका उदाहरण हम रिश्तों की आँच उपन्यास में देख सकते है कि "रमेश अपने बड़े भाई राम प्रसाद के कठिन परिश्रम के कारण डॉक्टर बन चुका है, माँ के बीमार होने पर बड़ा भाई माँ सोच कर रमेश के अस्पताल में भर्ती करता है कि भाई माँ की अच्छी देखभाल करें और इलाज का खर्चा भी वह कर लेगा, परंतु होता इसके विपरीत ही है। रमेश भाई को देख कर भी अनदेखा कर देता है और मन से अपरिचित की तरह ही व्यवहार करता है। माँ के पलंग के पास जाते ही थोड़ी देर के लिए ठीकका, फिर इधर-उधर देखा तो अनजान की तरह अपने जूनियस को हिदायत होते हुए आवश्यक दवाइयाँ,वही इंजेक्शन के नाम लिख दिए रमेश के जाने के बाद दवाइयाँ का बिल राम प्रसाद को पकड़ा दिया गया था।"[12] आज का युवा चाहे कितना भी बड़ा बन चाहे लेकिन जहाँ अपने रिश्ते मान, सम्मान करना भूल जाता है। जिन माँ- भाई ने कठिन परिश्रम करके पढ़ायाँ उसे को ही सम्मान देना भी उन्हें एक तरह की कमिया महसूस होती है। हम देख सकते है कि रमेश के माध्यम से पुत्र और छोटा भाई स्वार्थ वृत्ति की भावना को देख सकते है। जिस माँ, भाई ने रातदिन मेहनत, कठिन परिश्रमकर के उसे एक अच्छा डॉक्टर पाया। वह उन्हीं संस्कार को भूलता है। जब उसकी माँ बिमार होती तो वह हालचाल के पूछने के बजाय उन्हें अनदेखा करके डॉक्टर होने का कर्तव्य निभाकर

आगे बढ़ता है। आज का यूवा वर्ग माता पिता के प्रति मान सम्मान देना भूलते जा रहे है।

राम प्रसाद जी ऑफिस में काम करता था उसका माहौल धीरे-धीरे बदलने लगा था। छोटे बड़े को मान सम्मान देने बंद हो गया था चारों तरफ अनुशासन नियत और चापलूसी का वातावरण बन गया। आपसी एक दूसरे के साथ दूरी बढ़ गई थी। नई पीढ़ी के युवा अपने आधुनिक ज्ञान के सामने बाकी सब को मुर्ख समझने लगी थी। बदलते वातावरण के बारे में राम प्रसाद को कहता है- नए साहब ने कार्यालय में एक नया मोहौल पैदा कर दिया था जहाँ पहले हाथ में एक दूसरे के प्रति समर्पण व प्रेम था। वहस्थान प्रतियोगिता, ईर्ष्या ने ले लिया था। देर रात तक कार्यालय में काम करना, अवकाश के दिन भी कार्यालय खुलना व साहब के कुत्तों का जवाब देना इधर आत्मा फास्ट द्वारा सहयोग न देना। आज के युवाओं का सच यहाँ है कि ईमानदारी का दौरा समाप्त हो चुका है। हर एक व्यक्ति स्वार्थी बनता जा रहा है।

भारतीय समाज में पिता के बाद सब जायदाद बेटे के नाम पर होती है। बाद में जिस तरह से चाहे वह उपयोग कर सकता है। एक बार संपत्ति नाम होने के बाद वह पिताजी को मान सम्मान नहीं देता है। इसका उदाहरण हम‘नियति चक्र’ उपन्यास में नितिन घोष के माध्यम से देख सकते है कि-अपनी पूरी संपत्ति बेटे के नाम कर चुके हे।लेकिन बेटे को लगता है कि पिता का उदार स्वभाव एक दिन उनकी संपत्ति को नष्ट कर देगा। जब उसके पिता से अनाथालय के व्यवस्थापक पैसे की असमर्थता के बारे में बताते है। तो सेठजी उन्हें पैसे देने के लिए अपने बेटे को कहत हैलेकिन बेटा कहता हे की- “इसी तरह दान करते रहे

तो हम खुद कंगाल हो जाएंगे।"[13] कह कर पैसे देने से मना कर देता है। वह पिता जिसने जिंदगी भर दूसरों की सेवा और परोपकार में अपना जीवन बिताया हो, इस अपमान को सहन नहीं कर पाता और बिस्तर पकड़ लेता हैं। आधुनिक दौर में बच्चों को दान धर्म करना पसंद नहीं है, वह जो भी संपत्ति है उसे अपने नाम पर करते है। इसे उन्हें लगता है कि दान करने से हमारी संपत्ति कम हो जाएगी। एक दिन कंगाल हो जाएगे ऐसी दृष्टि बनाते हे। नितिन घोष का बेटा सारा व्यवसाय अपने नाम कर देता है। परोपकारी काम को बंद कर देता हे, इस से सेठज अपने बेटे से अनुचीत व्यावहार से बहुत दुखी होते हे।क्या इस संसार में भावनाओं,प्यार ममता का कोई महत्व नहीं रहा? चित्रांश हमारे प्यार को नहीं समझ सका। माता-पिता बच्चन की सभी गलतियां को नजरअंदाज करके उसके बुरे वक्त में उसके साथ खड़े रहते हैं सेठ जी अपने बेटे के ऐसे व्यवहार करने के बावजूद उन्होंने अपनी संतान को बदनामी से बचने के लिए गुप्त जिंदगी जीते हैं और अनाथ कीभांति अस्पताल में दम तोड़ देते हैं। इतना सारा समाज में मान सम्मान होने के बावजूद उन्हें एक अनाथ की जिंदगी जीने के लिए मजबूर किया जाता है उनके पास धन संपत्ति हो कर भी उन्हें अनाथ की जिंदगी जीने के लिए मजबूर होना पड़ता हैं। आज के यूवा वर्ग अपने माता- पिता के राह पर नहीं चलते हैं। उन्हें लगता हे की दान धर्म करने से उनकी संपत्ति कम हो जाऐगी और एक दिन कंगाल बन जाऐंगे इस मानसिकता में रहते है।

2.2 पारिवारिक समस्या

वृद्धजनों की सबसे प्रमुख समस्या परिवार में उनके सामंजस्य की है। प्रायः यह देखने में आया है कि परिवार के ऐसी धारणा काफी सीमा तक व्याप्त है। कि बड़े-बूढ़े अपने परिवारों से दूर जाने लगे हैं। परिवार के सदस्यों द्वारा की जाने वाली उपेक्षा वृद्धजनों की अन्य समस्याओं को कई गुना बड़ा देती है। अपने सभी होते हुए भी वृद्ध अपने आपको लाचार एवं बेबश समझने लगते हैं। जो वृद्ध महिलाएं घर के कामकाज में अपने आपको थोड़ा बहुत व्यस्त रखती है। उनकी तो परिजन देखरेख करते हैं, परन्तु वृद्ध पुरुषों की परिवार में कोई विशेष भूमिका न होने के कारण उनकी उपेक्षा में काफी वृद्धि होती है। वृद्धों की देखरेख उनके द्वारा परिवार की दिए जाने वाले योगलाभ पर निर्भर करने लगती है। अनेक वृद्ध घर से बाहर के कामों में अपने परिवार की सहायता करते है। यह सहायता दूध व सब्जियाँ लाने घर का अन्य सामान लाने, बिजली व पानी इत्यादि के बिल जमा करने तथा बीलें, की किश्तें अदा करने के रूप में होती है। इन सबके बावजूद वृद्धों को परिवार में वह सम्मान नहीं मिलता है जिसके में हकदार होते है।

परिजनों सेवह सहयोग नहीं मिल पा रहा है। जिसकी वे उनसे आशा करते हैं। आज अनेक ऐसे वृद्ध है जो अनाथाश्रमों जैसी वृद्ध संस्थाओं में रह रहे हैं। तथा सन्तान होते हुए भी अपने आपको 'बिना सन्तान' कहने हेतु विवश होते जा रहे हैं। उनके अपने बच्चे उसी शहर में होते हुए भी न तो उनसे मिलने आते हैं और न ही उनके बारे में किसी प्रकार की चिन्ता करते हैं। ऐसे वृद्धजन वृद्ध संस्थाओं में जो खाने को मिल जाता है। उसी से अपनी सन्तुष्टि कर लेते हैं। ऐसे अनेक वृद्धों में इस प्रकार

की भावना विकसित होने लगती है कि सन्तान के होते हुए भी वे बिना संतान की जिदंगी जी रहे है।

2.3.1 परिवार का विघटन

आधुनिक युग में परिवार का विघटन बड़ी तेजी से हो रहा है। प्राचीन काल में संयुक्त परिवारों का चलन भारत में था।। इस दौर में घर के सबसे बड़े सदस्य को घर का मुखिया बनया जाता था और उनके व्दारा ही परिवार के महत्वपूर्ण निर्णय लिऐ जाते थे। वर्तमान में संयुक्त परिवार एकल परिवार से दब्दील हो रहा है। अनेक परिवर्तन जैसे कि भूमंडलीकरण, औद्योगिकीकरण, पश्चिमीकरण जैसे प्रक्रियाओं ने संयुक्त परिवार की संरचना को बहुत प्रभावित किया है। आज संयुक्त परिवार का स्थान एकल परिवार ने लीया है।

आज के आधुनिक व्दौर में उतना मान सम्मान नही दिया जाता। औपचारिकता निभा रहें है। पंरतू पुरानी जमाने में हर एक व्यक्ति परिवार के सूख-दूख में साथ देते थे। इसका उदाहरण हम देख सकते है 'वसीयत उपन्यास' देख सकते है। जब विश्वनाथ वर्माजी के बेटी शादी में जाता है। तो वहाँ पर वर्माजी अपने परिवार रिश्तेदारों को पहचान करवाते हैं। "यह देखकर विश्वनाथ को यकीन नहीं होता कि इतने काम में व्यस्त इंसान भी नजदीक रिश्तेदार हो सकता है।'वह सिर्फ रिश्तो की औपचारिक्ता निभा रहा था।"[14] आधुनिक युग में भाग दौड़ में व्यक्ति इतना व्यस्त होता है। कि रिश्तो को निभाना भी उनके पास समय नहीं होता है। अपनी प्रगति के लिए रिश्तो को उतना मान सम्मान नहीं देता है। जब से

विश्वनाथ पास पड़ोस में जाने लगा तो अपने आपको थोड़ा हल्का पन महसूस कर रहा है। सबके साथ घुलमिलकर अच्छा महसूस करता था। सुधा और विश्वनाथ गाँव में बिताए गए प्रत्येकक्षण को याद कर देते है। जब गाँव में किसी की शादी होती तो गाँव में त्यौहार की तरह एक महीने से पहले तैयारी शुरू की जाती है। यहाँ गाँव के लोग एक दूसरे के सुख-दुख में शामिल होते थे। प्राचीन काल में परिवार का विघटन हमें नहीं दिखाई देता था। घर का मुखीयाँ परिवार को बरगत की तरह छाया देता था। हर एक मुसीबत में ढाल बनकर खड़ा रहता था। पर आज आधुनिक युग में परिवार को संरचना बदल गई है। शादी समारोह में अपने नजदीक को ही बुलाया जाता है। इस से संयुक्त परिवार में तेजी से एकल परिवार का विघटन दिखाई देता है।

भारतीय समाज में तिज-त्यौहार बड़े धूम धाम से मनाये जाता है। सब परिवार एक साथ आकर खुशी एक दूसरे से साँझा करते थे। बड़े-बूढों का पैर छूकर आशीर्वाद लेते हैं। इस का उदाहरण 'वसीयत' उपन्यास में देखने केलिए मिलता है कि -"विश्वनाथ शहर आने के बाद कभी भी त्यौहार मनाने अपने माता-पिता के पास अपने गाँव नहीं गया। 14 जनवरी को मकर संक्रांति मनाई जाती, लेकिन वह अपने कामकाज मे इतना अधिक व्यस्त रहता कि घर में मनाए जानेवाले त्योहार मात्र एक औपचारिकता बनकर रह जाते।"[15] आज का यूवा वर्ग अपने काम में व्यस्त रहता है कि त्यौहार का क्या महत्व वह समझ नहीं पा रहे है। वह संस्कृति, संस्कार, नैतिक मूल्यों को भूलते जा रहे हा।

भारतीय समाज में त्यौहारों पर विदेश गऐ बेटे की राह देखते हे, वृध्द की मानसिकता होती है कि वे त्यौहार मनाने के लिए अपने घर लौटेंगे। इसका उदाहरण हम विश्वनाथ के माध्यम से देख सकते कि- "तथा वह भी अपने बेटे राजकुमार की प्रतीक्षा करता है। वह कहता हे की उसका बेटा आएगा तभी दीपावली के दिये जलाएगे। परंतु बहुत इंतजार करने के बाद वह कहता है, कि त्यौहार तो बच्चों का लेकर ही हुआ करता है|राजकुमार आएगा तो इस बहाने बहू को भी आशीर्वाद दे देते|' आज के युवा यही नहीं समझ पाते हे कि अपने माता -पिता को कोई भी त्यौहार उनके बिना त्यौहार बनाया गया नहीं दिखता|घर में बच्वें हे तो त्यौहार में रौनक, खुशियाँ आ जाती हैं। राजकुमार को फोन करने से वह कहता है की -"रात का यह वक्त कोई फोन करने का होता है भला, मेरा आना नहीं हो पाएगा। त्यौहार तो आते रहते हैं फिर कभी देखूंगा।"[16] माता पिता को अपने मान सम्मान न देने के कारण परिवार का वीघटन तेजी से बढ़ रहा है। परंपरा, त्योहार, संस्कार, आधुनिक युग मे युवा भुलते जा रहे हैं। उन्हें यहाँ एक रूडिग्रस्त परंपरा जैसी लगती है।

प्राचीन काल में माता-पिता, बेटा-बहू सब संयुक्त परिवार में रहते थे। बेटे की शादी के बाद घर की जिम्मेदारी बहू पर दी जाती थी। बहु ही घर की गृहस्थी संभालती थी। विश्वनाथ कहता है -"भगवती बाबू कितने सौभाग्यशाली हैं, कितने आज्ञाकारी बहू बेटा है, क्या कभी उसको ऐसा अवसर मिल पाएगा जब बहू के हाथ की बनी चाय पी सकेगा।"[17] आज के द्वार में संयुक्त परिवार की जगह एकल परिवार ने लिया है| जहाँ

उनके माता-पिता अपने बच्चों को प्यार, उनको देखने के लिए और उनके हाथ से सेवा करने के लिए तरस जाते हैं।पर आज का युवा वर्ग संवेदनहीनता को भूलता जा रहा है।

किसी भी परिवार के बच्चे जब उच्च शिक्षा प्राप्त करने या रोजगार के लिए शहरों या विदेशों में चले जाते हैं, तो वे कभी वापस नहीं लौटते । वे वहीं ही अपना छोटा-सा परिवार बसा लेते हैं, जिसमें वे स्वयं, उनकी पत्नी तथा बच्चे रहते हैं । 'रिश्तों की आँच' उपन्यास में रमेश ने अपने बेटे को पढ़ाने के लिए विदेश भेजा था, लेकिन वह कभी विदेश से वापस नहीं आया। जब वह अपने बड़े भाई रामप्रसाद के बच्चों को उसके साथ हँसता-खेलता हुआ देखता है, तो उसे अपने बेटे की याद आ जाती है - "वह सोच रहा था उसके पुत्र नितिन को विदेश भेजकर उसे आखिर क्या मिला। कहने को आज नितिन अमेरिका में एक प्रसिद्ध डॉक्टर बन चुका था, जिसने वहीं घर बसा लिया था, उसने एक बार जाने के बाद वापस आने का नाम न लिया। बेटे की शक्ल देखने तक को आँखें तरस गई थी।"[18] माँ- बाप अपने बच्चो देखने के लिए तरस जाते है, पर बच्चे अपने काम मे डुब जाते की माँ- बाप को पीछे मुड़ कर देखने केलिए समय नही मिलता है। कई बार बच्चों और माता-पिता में आपसी मतभेद के कारण वे एक-दूसरे से दूर हो जाते हैं । परिवार बिखर जाता है, जिसका प्रभाव वृद्धजनों पर पड़ता है। वृद्धों की लगातार अवहेलना की जाती है|उसी तरह 'वसीयत' उपन्यास का नायक विश्वनाथ अपने पिता के साथ चलते मनमुटाव के कारण अपनी पत्नी और बच्चे के साथ शहर में रहता

है, जबकि उसके बुजुर्ग हो चुके माता-पिता गाँव में अपने बेटे के वापस लौटने की आशा मन में लिए ही उनकी मृत्यु हो जाती हैं, लेकिन विश्वनाथ कभी भी अपने परिवार के साथ वापस गाँव नहीं लौटता और न ही कभी अपने माता-पिता को अपने पास शहर बुलाता है। पिता की मृत्यु के बाद उसे पिता की डायरी से पता चलता है, कि उसके माता-पिता मरते दम तक उसकी एक झलक पाने के लिए तरसते रहे - "क्या उसका फर्ज नहीं था कि एक बार ही सही उसने कह दिया होता कि ईजा- बाज्यू कुछ दिनों के लिए मेरे पास आ जाओ ।... मैं जीवन भर यह प्रतीक्षा करता रहा कि मेरा विश्वा मुझे बुलावा भेजेगा और मैं सब कुछ भूल कर दौड़ता हुआ उसके पास चला जाऊँगा।"[19] आज के युवा वर्ग को एकल परिवार मे रहना पसंद करते है। बल्कि यह नहीं सोचते हे कि माता-पिता को हीअपने बेटे के साथ समय गुजर ने की इच्छा होती है। पंरतु आज का युवा यह समझता नहीं है।

2.3.2 असहनीय जीवन

पुरानी पीढ़ी में दादा-दादी अपने पोते को बहुत प्यार करते थे। उनके साथ खेल कर खुद ही बच्चे बन जाते हैं। घर में बैठा वृध्द चाहे वह माता-पिता के रूप में हो या दादा दादी हो, घर की छत की तरह होते हैं। वह बच्चों को अपने अनुभव संस्कार की कहानी सुनाते थे। आज के यूवाओं में बुजुर्ग के प्रति सम्मान कम होता जा रहा है।

आधुनिक युग में बच्चों का त्यौहार बढ़े धूम-धाम से मनाया जाता है। सब रिश्तेदार, परिवार मित्रों को आमंत्रित कीया जाता है। पर वृध्दों को ही अपने परिवार के खूशियों में शामिल नहीं कीया जाता है। इसका उदाहरण हम शर्मा जी के माध्यम से देख सकते है। शर्मा जी कहते हैं कि- "कल मेरे पोते विशाल का जन्मदिन था, शहर के होटल में ही एक भव्य कार्यक्रम रखा गया था। सभी रिश्तेदार मित्र इस मौके पर सम्मिलित होने के लिए एकत्रित होने लगे। मैंने भी अलमारी में रखा सूट निकाल, पहनकर बाहर बरामदे में आया, बाहर बेटा और बहू पोते को लेकर कार में बैठने वाले थे। मैंने सोचा शायद मेरा इंतजार कर रहे होंगे। लेकिन वहाँ कार के पास पहुचते ही बहु बोलने लगी कि "बाबूजी आप भी ना ! अभी तक बचपन गया नहीं है। आप क्या करेंगे चलकर बच्चों का कार्यक्रम है, आप अधिक देर तक बैठ नहीं पायेंगे।"[20] आज के वर्तमान दौर में बच्चे अपने माता-पिता अपने खुशियों में शामिल नहीं होने देते हैं। उन्हें बोझ की तरह देखा जाता है।

समकालीन विमर्शवादी उपन्यास 'नामक ग्रंथ में लेखक लिखते हैं कि- "बच्चा अगर देश का भविष्य है। तो युवा वर्तमान है और बुजुर्ग इन दोनों को दिशा देने वाला मार्गदर्शन।"[21] अब समय आ गया है युवा मन में इन्हें बुजुर्ग के प्रति धारणाओं में परिवर्तन करें। आजकल के युवाओं के मन में ऐसी कई अमनवीय कारकों के अंतरिहीत होने से वृद्ध जनों की हालत दिन-ब-दिन बिगड़ते जा रही है उनकी पस्थिति में सुधार नहीं हो पा रहा है।

आधुनिक दौर में वृध्दों को एक बोझ की दृष्टि से देखा जाता है। बुजुर्ग हो पर उसे परिवार के महत्वपूर्ण निर्णय में शामिल नहीं किया जाता। उसे घर की देखरेख करने के लिए रखा जाता है। इसका उदाहरण हम वर्माजी के माध्यम से देख सकते। 'रिश्तों की आँच' उपन्यास मेंअपने ही घर में बेटे द्वार उसे असहनीय जीवन जीने के लिए मजबूर किया जाता है। बेटे- बहु ने ही उसे घर की देखभाल करने के लिए घरेलू नौकर बना दीया है। वह यह भी नहीं सोचते है। कि जीस पिता ने बचपन में जीवन को सही दिशा दिखाई उसी को ही आज अपने जीवन के रास्ते से निकाल देते हैं। शर्मा जी कहता है- “मुन्ना हमारा घरेलू नौकर है, आज मेरा कद मुन्ना से छोटा हो गया है।“[22] यह वाक्य कहते ही शर्मा जी की रुलाई फूट पड़ी अपने ही घर में नौकर की तरह रखा था। जब शर्मा जी घूमने गया था तो मुन्ना उसे बताता कि बाबूजी कल की पार्टी में बड़ा मजा आया वह भीड़ भी थी, सबने देर नाच गाना किया। शर्मा जी अपने ही घर में रहकर, अपनी बहू बेटे के साथ रहते हुए भी घर में अपनों के अपनत्व और प्यार के लिए तरहस गया था। अगर पोता दादाजी के पास जाने से इनकार कीया जाता था। उसे डाँट दिई जाती थी। आज के आधुनिक दौर में दादा दादी का प्यार बच्चों को नहीं मिल रहा है उसके तरह देखा भी नहीं जाता है। वह अपने पोते को प्यार देने के लिए तरस जाते हैं। पर वर्तमान में भूमंडलीकरण के कारण सब कुछ बदल चुका है।

‘वसियत’ उपन्यास मैं त्रिपाठी जी ने जो घर अपने खून पसीने के कमाई से बनाया, उसी में उनके रहने के स्थान को लेकर परिवार में आपस में ही मारामारी होने लगी। शर्मा जी को बचपन में हीपुस्तके पढ़ने का

शौक था। उनकी लाइब्रेरी की सभी पुस्तकों को बहू पोते ने निकाल कर कमरा खाली कर दिया। जब त्रिपाठी जी ने इस पर आवाज उठाया तो बहु कहने लगी की-" अब बच्चे बड़े हो रहे हैं, सबके लिए एक-एक कमरा तो होना ही चाहिए ना, आप ही सोच्चे। आप ही दो दो कमरे हिथिया लेगें तो बाकी लोग कहाँ जाएँगे।"[23] बहू भी तो उन्हें भला बुरा कहती हैं। अपने बेटे होकर भी बहू के आगे कुछ नहीं बोल पाते त्रिपाठी को लगता है कि बेटे उनका साथ देंगे। आज के युग में अपने बेटे होकर भी अपने माता-पिता के साथ नहीं रह पाते हैं कोई भी मुसीबत में उसे अलग किया जाता है। वह अकेलेपन में ही मुसीबत का सामना करते अलग में ही अपना जीवन के ठोकरे खाकर जीवन जी रहे हैं।

'रिश्तों की आँज' उपन्यास में रामप्रसाद अपनी बहन के विवाह के लिए दहेज का पैसा इकट्ठा करने के लिए अपने मित्र से उधार लेता है। अपने पी. एफ और इंश्योरेंस से लोन ले लेता है, ऑफिस टाइम के अलावा भी दिन रात दूसरी कंपनी में भी काम करता है। लेकिन बहन को यह सब दिखाई देता है, उसे बस ऐसा लगता है। कि उसके भाई ने उसके लिए कुछ नहीं किया जब उसकी शादी हो जाती है तो वह भाई से कहती है-" क्या भैया इतना खर्चा तो किया ही था। एक कार भी देते तो कितना अच्छा होता।"[24] बहन की बात सुनकर राम प्रसाद ऐसा लगता है जैसे किसी ने उसके मुँह पर जोरदार तमाचा मार दिया हो। इतना सारा बहन की खुशी के लिए करने के बाद भी उसे कम ही लगता है। जिस भाई ने दिनरात मेहनत करके दहेज के पैसे इकट्ठा कीये। उसका परिक्श्रम न देखकर सीधा कहाँ जाता है कि आपने कीया ही क्या है? मेरे लिए।

आज के युवाओं को हर एक चींच ठीक-ठाक चाहिए होती है। उसे बनाने में कीतना परिश्रम लगता इसका उसे फर्क नही पड़ता है।

भूमंडलीकरण के दौर में परिवार की संरचना बदल चुकी है। जिस तरह से गाँव में चारों ओर प्रसन्न वार्तावरण प्रसन्न होता है। लोग एक दूसरे से घुल मिलकर रहते हैं। कहाँ भी घूम सकते है, जो चाहें माँग कर खा सकते है,पंरतू शहर में इस तरह का वातावरण नही मिलता है। इसका उदाहरण हम 'नियति चक्र' उपन्यास में इस प्रकार देख सकते है- जब रामप्रसाद मोती चाचा को चाय बनाना सोचता है। तो घर में दूध नहीं होता है तो वह "पड़ोसी के अम्मा से लाता है, वह कहता है कि आप थक गए हैं। यह सोचा चाय बनाकर पिलाऊँ, फिर दूध नहीं मिला तो सोचा पड़ोसी से ले आऊ बेचारी पड़ोस वाली अम्मा बहुत अच्छी हैं, तो मोती चाचा उसे कहता है। "अरे यह शहर है, अरे पगले ! यह कोई गाँव नहीं जो इधर से उधर कभी भी घूम लो। कुछ भी माँग लो यह शहर है, कई बातें सोचनी पड़ती है।"[25] आज शहर में गाँव जैसा व्यवहार हमें नहीं दिखाई देता है। सब भूमंडलीकरण के कारण बदल चुका है। गाँव में हर कोई एक दूसरे की मदद करने के लिए तैयार होते हैं, पर शहर में एकल परिवार होने के कारण हर एक व्यक्ति अपने आप में ही व्यस्त रहता है। किसी से अपने सुख दुख साँझा करने के लिए समय नहीं मिलता है।

रामप्रसाद स्वयं को प्रश्न कर बैठा है कि-"क्या यही है रिश्तों का असली चेहरा? जिनकी आँखों में खुशी की चमक देखने के लिए अपने स्वास्थ

दाँव पर लगा दिया है, क्या उनको भी अहसास है इसका? क्या एक बाप और घर का मुखिया है, जो अपनी छटपटान को किसी के साथ बता नहीं सकता है।

आज के युवा अपने बीमार माँ- बाप को घर से बाहर या परिवारों से अलग रहकर जिदंगी जिते है। 'नियति चक्र' उपन्यास में नितिन घोष जब बीमार हो जाते हैं, तो उनका बेटा उन्हें घर से निकलने को कह देता है। यथा- "एक दिन चित्रांश ने पिता से कह ही दिया क्यों नहीं वह कही चल जाते। कब तक बीमारी से घर का सुख चैन छींटे रहेंगे।"[26] आज युवा पीढ़ी अपने बुजुर्ग पिता को बीमारी के हालात में साथ देने के बजाय उन्हें अपने घर और जिंदगी से बेदखल कर देते हैं। अपने रिश्तों का एहसास नहीं होता है। उन्हें बुजुर्ग पर पैसे खर्च करना उन्हें गैर जरूरी प्रतीत होने लगता है। उनके पास की संपत्ति को छिनक उन्हें एकाकी जीवन जीने को मजबूर कर देते है।

2.3 आर्थिक समस्याएँ

वृध्द अवस्था में व्यक्ति आर्थिक रूप से दूसरो पर निर्भर रहने लगता है। भारत में 40 प्रतिशत से अधिक वृद्ध निर्धनता रेखा के नीचे अपना जीवन-यापन कर रहे हैं। वृद्धों की आज सबसे प्रमुख समस्या यह है कि आर्थिक साधनों के अभाव में वे जिये तो कैसे जियें जीने का डर उनका पीछा नही छोड़ता है। पहले वृद्धजन अपने बच्चों को बुढ़ापे की लाठी मानते थे। लेकिन अब ऐसा लगता है कि यह लाठी उनको किसी प्रकार

का सहारा नहीं दे पा रही है। वे वृद्धावस्था में अपने बच्चों पर पूरी तरह से आश्रित होते हैं। यदि बच्चे बुजुर्गों का उचित ध्यान नहीं रखते हो उनमें अकेलेपन एवं मानसिक तनाव जैसी बीमारियाँ विकसित होने लगती है। वे अपने आपको बेसहारा एवं परिवार में रहते हुए भी अकेलापन महसूस करने लगते हैं।

वृद्धों के पास लाभ उठाने का कोई साधन नहीं होता है। जिससे कि वे स्वयं अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। जिन को पेंशन मिलती है। उनकी दशा भी बहुत ज्यादा अच्छी नहीं है। जब बच्चे उनकी आवश्यकताओं की ओर किसी प्रकार का ध्यान नहीं देते तो उनमें निराशा विकसित होना एक सामान्य बात बन जाती है। जो वृद्ध पेंशन इत्यादि द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम है। उनसे भी उनके परिजन पेंशन का पैसा किसी न किसी बहाने लेते हैं। उन्हें वृद्धावस्था में नारकीय जीवन व्यतीत करने के लिए विवश कर देते हैं। इसलिए विवश हो जाते हैं कि परिवार का कोई विकल्प अनके सामने नहीं होता है। वे इसी बात से संतोष कर लेते हैं कि उनकी देखभाल न होने के बावजूद वे अपने परिजनों के साथ ही रह रहे है। कम-से-कम पड़ोसी तो यह नहीं सोचेंगे कि उनके बच्चे उनकी देख-रेख नहीं कर रहे है। लोक लज्जा उन्हें घर पर रहने तथा सभी प्रकार का कष्ट सहन करने के लिए विवश कर देती हैं।

वृद्धों की सबसे प्रमुख समस्या अकेलेपन की हैं। आयु बढ़ने के साथ ही व्यक्ति में अकेलेपन की भावना घर करने लगती हैं। ऐसा देखने में आया है कि आर्थिक दृष्टि से संपन्न होते हुए भी बहुत से वृद्धजन अकेलेपन के कारण डिप्रेशन का शिकार हो जाते हैं। औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के परिणाम स्वरूप भारतीय समाज की परंपरागत संयुक्त परिवार प्रणाली

कमजोर हो गई है। इसके फलस्वरूप परिवार तथा समाज के ढाँचे में वृद्धजन गसित हो रहे हैं। जिससे उनमें अकेलेपन की भावना विकसित होनी दिखाई देती है। वृद्धजनों में अकेलेपन का भाव बहुत गहरा होता है क्योंकि हो सकता है कि उनके जीवनसाथी की मृत्यु हो चुकी हो, उनके मित्र किसी दूसरी जगह चले गए हों, उनके बच्चे किसी दूर के शहर में बस गए हों, या वे स्वयं बीमार रहते हों। अकेलेपन का भाव वृद्धजनों में आत्म-सम्मान एवं विश्वास की कमी करता है। तथा वे सारा दिन अपनी बीमार के बारे में सोच कर ही व्यतीत कर देते हैं।

2.3.1 पारिवारिक विर्भरता

बुजूर्ग को परिवार में रहकर विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस का उदाहरण 'वसीयत' उपन्यास में दिखाया गया है कि जब से भगवती बाबू गाँव गए है। तब से विश्वनाथ घर से बाहर नही निकलते है। वह सोचता हे की व्यक्ति जितना काम करके नही थकता, उतना काम न होने से थकता है। ‘जब वह दूसरों के दुसरे कभी किसी दूसरे के काम में दखल अदाज नहीं करता था। वह आर्थिक रूप पुरा दूसरों पर निर्भर रहने लगने का ऐसास उसे हो रहा था। जो व्यक्ति पौढ़अवस्था में अकेला ही सब समस्याओं का सामान करता था। वह आज अकेलापन महसूस कर रहा था। “यह क्या विश्वनाथ! तूम अभी उस वातावरण से बाहर नही आ पाए, अरे अब तूम किसी पद पर न होकर एक सामान्य व्यक्ति हो, जिन लोगों से सम्मान की उम्मीद कर रहे हो वह कोई तुम्हारे मातहत कर्मचारी नहीं है।”[27] व्यक्ति बुजुर्ग होने पर आर्थिक रुप से दूसरों

पर निर्भर होता है। इसका उदाहरण हम त्रिपाठी के माध्यम से देख सकते है कि

जब त्रिपाठी अपना अधिकांश समय कमरे में पुस्तकालय में ही समय बीताया करता था। पत्नी के मृत्यु के बाद पुरा समय पुस्तक पढ़ने मे लगया करता था। एक दिन पोते और बहु व्दारा उसे बताऐ बीना पुस्तके कमरे से बाहर निकाल दिई जाती है। जिस घर को बड़े अरमान से, अपनी जरूरतों में कटौती कर उसने रात-दिन एक कर के बनाया था। जिन पुस्तकों को संग्रहित कर रखा गया। जिनको सब से अच्छा दोस्त माना, आज उसे अपने ही घर में उसे पराया लगने लगता है। त्रिपाठी कहता है कि -"मूझे माफ करों...... मैं तुम्हारी तकलीफ़ न समझ पाया, मैं इस कमरे को आज ही खाली कर दूँगा। अब कभी इसमें कदम न रहूँगा, मुझे पाँच दिन की मोहलत दें, मैं कही लाइब्रेरी में इन पुस्तकों को रख आऊँगा।"[28]

आज का यूवा वर्ग वृध्द की मानसिकता समस्याएं को समझ नही सकता है। जिन पिता ने अपने घर परिवार को एक करने के लिए रात - दिन मेहनत करके अपने सम्राज बनाते है। पर वृध्द होने पर अपने ही घर से पराया किया जाता है।

रामप्रसाद दिन रात कंपनी में काम करता है। वह रोजाना सूबह और शाम को दो-दो घंटे पार्ट टाइम काम करने लगा। एक ही घर में रहकर भी कही दिन अपने दोंनो बच्चों को कई दिनों तक देख नहीं पाता था। वह यह सोचता था, की आर्थिक रूप से वह बच्चों की माँग को पुरी नही कर सकता है। वह रात दिन मेहनत करके भी अपने आप को

अकेलापन महसूस करता है। जब विपिन कहता हे कि -"देखो मम्मी! मूझे पता था की पिताजी हमारी माँग को पुरी करनेवाला नही है। आज पुरा एक महीना हो गया है। मोटरसाईकिल की माँग किए हुए,उन्होंने तो जैसा कुछ सूना ही नहीं।"[29] यह सब सुनकर आर्थिक रूप से कमजोर होनें का महसूस करता है।

अपनी परिवार की इच्छा पूरी करने के लिए। दिन-रात मेहनत करता है, सबको सुख सुविधा पहुँचाता है। राम प्रसाद जब मंडी में सब्जी खरीदने आता तो जरूरी सब्जी लेने में ही पैसे पूरे खर्च हो जाते हैं। तब उसे याद आता है की माँ अपनी पसंद की सब्जी मँगवा रही है।-"माँ क्या करू करूँ अभी तेरे पसंद वाली सब्जी बाजार में आई ही नहीं है", माँ बेचारी यह सुनकर चुप हो जाती है। कह देती है, कोई बात नहीं है जब आ जावे ले आना।"[30] यह देख सकते हैं कि आर्थिक रूप से अपने बेटे पर निर्भर रहना पड़ता है। वह बुजुर्ग होने के कारण अपनी मनपसंद सब्जी नहीं खा पाती है। इसलिए उन्हें अपने बेटे पर निर्भर रहना पड़ता है आज के वर्तमान दौर में माँ पिता की इच्छा को पूरी नहीं की जा ती है। उन्हें अपने इच्छा को मार कर परिवार में जिना पड़ता है। ''नियति चक्र' उपन्यास का नायक सेठ नितिन घोष एक संपन्नसंपन्न,समृध्द व्यक्ति होने के साथ दयावान इंसान भी है। वह सभी जरूमंदो की मदद करता है, वृध्दाश्रम, कई अनाथाश्रम, शैक्षिक संस्थान चलता है वह कहते कि- "दाहिने हाथ से दान करो तो बाएं हाथ को भी पता नहीं चलना चाहिए।"[31] वह सब को मदत करता है। वह डॉ.सचिन अवस्थी, नंदिनी, निखिल,

विजेन्द्र, सेठ नितिन घोष का सेवक किशन आदि को मदत कीई है। बेटा चित्रांश अपने पिता के स्वभाव से ठीक विपरीत निकलता है। अपने पिता का सारा व्यवसाय अपने नाम कर सब नौकर को काम से निकाल देता है। इस सब व्यवहार से चिंत्राश के अनुचित व्यवहार से बहुत दूखी होते रो पड़ते -"क्या इस संसार में भावनाओं, प्यार, ममता होते का कोई महत्व नहीं रहा? चित्रांश हमारे प्यार को न समझ सका। माता-पिता बच्चों को सभी गलतियों को नजरंदाज करके उसके पूरे वक्त में उसके साथ खड़े रहते है। नितिन घोष अपने बेटे के को बदनामी से बचाने के लिए गुमनाम जिंदगी जीते हुए एक अनाथ की जिंदगी जीता है।

2.3.2 सेवानिवृत्ति

सेवानिवृत्त के बाद वृध्द परिवार पर ही निर्भर रहते। इसका उदाहरण चित्रा मुद्रल के उपन्यास 'गिलिगडू' में देख सकते है। सेवानिवृत्त वृध्दों की समस्या का चित्रण मिलता है। उपन्यास में बाबू जसवंत सिंह अपने घर में कानपुर में रहते थे| लेकिन उनकी पत्नी की मृत्यु के बाद उन्हें अपने बेटे नरेंद्र के पास दिल्ली आना पड़ता है। उन्हें दिल्ली बुलाते वक्त नरेंद्र ने कहा था फ्लैट के दो कमरों में से एक वह खुद और दूसरा बच्चे इस्तेमाल करते हैं। इसलिए बालकनी में स्लाइडिंग ग्लास लगवा कर बच्चों को वहाँ रहने देंगे ताकि दिल्ली आने पर बाबूजी आराम से रह सके। लेकिन दिल्ली आने के बाद बाबू जसवंत सिंह चौंक जाते हैं जब ड्राइवर को उनके सामान बालकनी में रखते हुए देखा। आज के युवा अपना एक नाभिक परिवार चाहता है। उस में अपने माता-पिता का दाखिल होना भी उन्हें अच्छा नहीं लगता। बेटे के घर में रहने लगने के

बाद उन्हें सब की उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। उपेक्षा सह कर अकेलापन और अवसाद में डूब जाते हैं।

वर्तमान समय में सेवानिवृत्ति के बाद बुजुर्गों के साथ घर में दूर व्यवहार कीया जाता। उन्हें भी घर के किसी एक कोने में पड़ा रहने को मजबूर किया जाता है। हम यह सोचने को विवश हो जाते हैं कि क्या उम्र के एक पड़ाव के बाद व्यक्ति का कोई समाज में कोई स्थान नहीं रह जाता? जो माता-पिता बच्चों के लिए अपनी नींद चैन समय सब कुछ त्याग देते हैं, वही बच्चे उनको वृध्द अवस्था में उन्हें घर से बाहर का रास्ता दिखा देते हैं। उनकी उपस्थिति बच्चों को अपनी आजादी में दखल सी प्रतीत होने लगती है। वृध्द जीवन की संध्या में अकेलेपन से त्रस्त, अपमान व बोझ बनने के एहसास से दुःखी बुजुर्ग या तो स्वयं घर से निकल जाते हैं या बच्चे उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर कर देते हैं।

इसका उदाहरण वसीयत उपन्यास में देख सकते है। 'वसीयत' उपन्यास की चित्रा नौकरी करती थी। उस समय बेटा- बहु अच्छी तरस से ध्यान रखतेथे। सेवानिवृत्ति से मिलने वाले एकमुश्त ग्रेच्युटी, जी.पी.एफ, इन्शयोरेन्य आदि के पैसे मिलने से पहले घर में प्लानिंग होने लगीं। बहू ने महँगे नेकलेस की माँग रखी, बेटे ने कहाँ माँ कार पुरानी हो गई है, सोच रहा हूँ कि नहीं मॉडर्न लु।"[33] आज का युवा वर्ग का अपने माँ-बाप के पैसों में आराम से अपनी जरूरत को पूरी कर रहे है। पर यही नहीं सोच रहे हे कि अपने माता-पिता ने कितनी मेहनत, परिश्रम करके कमाया

है। इसका वह मोल नहीं रखते हैं। अपने सपने पुरे करने के लिए माँ-पिता ने कमाए हुए धन को खर्च कर रहे है।

वर्तमान मे प्रत्येक माता-पिता की इच्छा होती हे की उनके बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त करे। इसलिए उन्हें महगें टूश्यन क्लास पर डालते है। उन्हें दादी दादा के व्दारा दिई शिक्षा अच्छी नही लगती है। लेकिन 'वसियत' उपन्यास में देख सकते है कि -"बहू एक दिन पोते व पोती का हाथ पकड़कर सामने लाई और कहने लगी, माँ जी इनकी ट्यूटर अच्छा नहीं पढ़ाती, आप ही इनको पढ़ा दिया करे।तभी एक दिन बेटा मनोज कहने लगा माँ तुम्हारे हाथ के खाने में जादू है। कुछ दिनों बाद घर के नौकर को भी भी छुट्टी दे दी गयी थी।"[34] मैं समझ चुकी थी, उन लोगों को मुफ्त का ट्यूटर और घरेलू नौकर मिल चुकी थी। मैं इसमें भी खुश थी, यह सिलसिला तकरीबन साल-दो साल तक चलता रहा, मैं तो जैसे स्वयं का अस्तित्व ही भूल सा गई थी।

बच्चों व्दारा अपने ही माता-पिता के साथ दूर व्यवहार कीया जाता है। पैसे बचाने के लिए, स्वार्थी बनते हे, घर में बुजुर्ग को नौकर की तरह व्यवहार करते है। परिवार से अलक ही कीया जाता, एक तरह दुख पीड़ा की जिंदगी जिते है।

"जब से मकान की रजिस्ट्री बेटे के नाम करवायी तब से बेटे और बहू का व्यवहार बिल्कुल बदल चुका था। महीने के शुरू में कुछ दिनों तक व्यवहार ठीक हो जाता, जिसका कारण पेंशन से मिलने वाले रुपयों पर

उनकी नजर होती थी | लेकिन जैसे-जैसे महीने के दिन निकलते उनका व्यवहार भी रुखा होने लगता।"[35] आजकल बच्चों की मानसिकता इतनी तुच्छ हो गई है कि वे सोचते हैं कि अपने पैसों को बुजुर्गों पर क्यों खर्च करूँ बल्कि जितना हो सके उनसे छीन लूँ

'वसीयत' उपन्यास की प्रिया पति की मृत्यु के बाद स्वयं को अकेला पाती है। उन्होंने एक कंपनी में नौकरी करके बच्चों को परवरिश दी थी। जिस बेटे को उसने इतना योग्य व्यक्ति बनाया वह उसे घर से निकाल देता है, वह कहता है-"माँ अब मैं अधिक सहन नहीं कर सकता, तुम्हारी वजह से मेरी गृहस्थी खतरे में है, तुम कहीं चली क्यों नहीं जाती ।"[36] युवा पीढ़ी की इसी मानसिकता के चलते देश में वृद्धाश्रमों की संख्या लगातार बढ़ रही है।जिस बच्चे को कष्ट पाकर खूद अपने पैरो पर खड़ा कीया आप घर में होने के कारण मेरी गृहस्थी अच्छी नही चलती है। यह सब सहन नहीं कर सकी, इसलिए घर छोट कर बेटी के पास रहने के लिए चली गई। उस का कोई ठिकाना न रहा था। शरीर की अस्वस्थता ने जल्दी ही बुढ़ापे को आमंत्रण दे डाला था। कहीं नौकरी कर नहीं सकती थी। मुझे क्या चाहिए दो वक्त की रोटी, तन ढकने को कपड़े और सोने को छत, बस यों ही जिन्दगी कट रही है आगे भी कट ही जाएगी। सेवानिवृत्ति और वृध्दवस्था में अपने बच्चों का साथ चाहिए होता है। न की उन्हें पैसे की लालजी होती है।परिवार उन्हें लाठी का सहारा दे न की उन्हें महतवपूर्ण निर्णय से अलग करे, घर के एक कोने में बहीषकुत जीवन जिने के लिए मजबूर कीया जाता है।

"सच तो यही है कि बच्चों को माँ-बाप तभी तक अच्छे लगते हैं जब तक वो कुछ दे सकें, अपना काम खुद कर सकें और अन्य पर निर्भर न हों, उम्र के एक पड़ाव पर वह उन्हें अपने से अलग देखने लगते हैं। आज मैं अपनी बेटी के घर में ही एक नौकरानी से भी बदतर जिन्दगी जी रही हूँ।"[37]

बुढ़ापे में व्यक्ति निर्भल व असहाय हो जाता है। प्रत्येक काम के लिए उनकी दूसरों पर निर्भरता बढ़ जाती है। बीमारी के कारण स्वास्थ्य में गिरावट उन्हें असहाय बना देतदेता हैं। चलने-फिरने में असमर्थ वृद्धों को घर की देहरी से नीचे जाने के लिए भी कई बार सोचना पड़ता है। ऐसे में बच्चे उनको ठुकराकर उनके अस्तित्व को ही चुनौती दे देते हैं। उन्हें याद करा देते हैं कि अब वे बूढ़े हो गए हैं, अब उनकी किसी को कोई आवश्यकता नहीं है। यह एहसास ही वृद्ध व्यक्ति के लिए घातक सिद्ध होता है, यह सहन नहीं कर पाते है। इस उपभोक्तावादी दौर में वृद्धों को शारीरिक व्याधि की अपेक्षा अकेलेपन का डर अधिक सता रहा है। 'नियति चक्र' उपन्यास में नितिन घोष जब बीमार हो जाते हैं, तो उनका बेटा उन्हें घर से निकलने को कह देता है, यथा- "एक दिन चित्रांश ने पिता से कह ही दिया, क्यों नहीं वह कहीं चले जाते। कब तक बीमारी से घर का सुख चैन छीनते रहेंगे।"[38] आज नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच एक अंतर उत्पन्न हो गया है। आधुनिक युवाओं के लिए धन का महत्व अधिक बढ़ गया है। वे इतने स्वार्थी और आत्मकेंद्रित हो गए हैं कि माता-पिता के साथ भावनात्मक रिश्तों को भी नही निभा पा रहे है।

बुजुर्गों पर पैसे खर्च करना उन्हें गैरजरूरी प्रतीत होने लगा है। यहाँ तक की संतान बुजुर्गों की कमाई हुई दौलत उनसे छीनकर उन्हें एकाकी जीवन जीने को मजबूर कर देती है। बच्चे वृद्धों का सम्मान तक नही करते हैं।

जब तक उन्हें पैसे जायदाद नहीं मिल जाती। एक बार जायदाद हाथ लग जाए फिर उन्हें निकाल बाहर करते हैं। वसीयत' में शर्मा जी के पोते को उनकी बहू उनके साथ खेलने नहीं देती, यथा-"मैंने अपने दोनों हाथ आगे बढ़ाए तभी दूसरे कमरे से दौड़ती हुई बहू आई और पोते का हाथ खींच कर अपने साथ ले गई | मैं देर तक वहाँ बुत की तरह खड़ारह गया।"[38] संवेदनहीनता की हद तो तब हो जाती है जब बच्चे माता-पिता को घर का नौकर या पहरेदार समझने लगते हैं। शर्मा जी के पोते की जन्मदिन पार्टी में बेटा बहू घर से नौकर तक को साथ ले जाते हैं, लेकिन शर्मा जी को नहीं ले जाते। जब शर्मा जी चलने के लिए गाड़ी में बैठने लगते हैं तो बहू मना कर देती है, साथ में बेटा कहता है "छोड़ो बाबूजी ! जिद मत करो, वह ठीक ही तो कह रही है फिर आप भी चले जाएंगे तो घर पर कौन रहेगा भला ? अरे सुना नहीं आजकल चोर खाली घरों को निशाना बना रहे हैं।"[40]आजकल बुजुर्गों का स्थान घर के नौकर से भी नीचे हो गया है। वे अपने ही घर में उपेक्षित जीवन जीने को विवश हैं।

डॉ.सूरज सिंह नेगी के उपन्यासों में वृध्द जीवन के अनेक समस्या का चित्रण मिलता है।

<u>संदर्भ सूचि</u>

1. सिलावट,सुधा एस (1955): वृध्दों की समस्याए और समाधान, यूग निर्माण योजना, मधूरा पृ. 15
2. र्शमा एवं डाक.एल.ए.टी. एम - भारत में वृध्दावस्था 1987 दिल्ली
3. डॉ.नेगी सिंह सूरज, वसीयत, साहीत्यागार प्रकाशन, 2018, पृ.18
4. वहीं,पृ.19
5. वहीं, पृ. 47
6. वही, पृ.65, 66
7. वहीं, पृ.103
8. वहीं, पृ 106

10.वहीं, पृ.133

11.डॉ. नेगी सिंह सूरज, रिश्तों की आँच, हेरिटेज पब्लिकेशन, 2016,पृ. 85

12. वहीं, पृ. 140

13. डॉ. नेगी सिंह सूरज, नियति चक्र, सनातन प्रकाशन, जयपुर, 2019, पृ.61

14. डॉ. नेगी सिंह सूरज, वसीयत, साहीत्यागार प्रकाशन, 2018, पृ.52, 53

15. वहीं, पृ.61

16. वही, पृ. 64

17. वहीं, पृ. 68

18.डॉ. नेगी सिंह सूरज, रिश्तों की आँच, हेरिटेज पब्लिकेशन, 2016, पृ. 78

19.डॉ. नेगी सिंह सूरज, वसीयत, साहीत्यागार प्रकाशन, 2018, पृ.

20.वहीं, पृ. 78

21. मीणा रमेश चन्द, समकालीन विमर्श वादी उपन्यास, अनुज्ञा वुक्स प्रकाशन, प्रथम बहुत सं. 2020, पृ.59

22. डॉ. नेगी सिंह सूरज, वसीयत, साहीत्यागार प्रकाशन, 2018, पृ. 80,81

23. वहीं, पृ.97

24. डॉ. नेगी सिंह सूरज, नियति चक्र, सनातन प्रकाशन, जयपुर, 2019, पृ.48

25.वहीं, पृ.33

26. डॉ. नेगी सिंह सूरज, नियति चक्र, सनातन प्रकाशन, जयपुर, 2019, पृ.77

27. डॉ. नेगी सिंह सूरज, वसीयत, साहीत्यागार प्रकाशन, 2018, पृ. 71

28.वहीं, पृ.99

29. डॉ. नेगी सिंह सूरज, रिश्तों की आँच, हेरिटेज पब्लिकेशन, 2016, पृ. 67

30.वहीं, पृ.83

31. डॉ.नेगी सिंह सूरज, नियति चक्र, सनातन प्रकाशन, जयपुर, 2019, पृ.124

32. मुद्रूला चित्रा, गिलीगडु, सामाजिक प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.2002, पृ.137

33. डॉ.नेगी सिंह सूरज, वसीयत, साहीत्यागार प्रकाशन, 2018, पृ. 126

34.वहीं, पृ.127

35.वहीं, पृ. 128

36.वही, पृ. 143

37.वहीं, पृ. 144

38. डॉ. नेगी सिंह सूरज, नियति चक्र, सनातन प्रकाशन, जयपुर, 2019, पृ.124

39. डॉ. नेगी सिंह सूरज, वसीयत, साहीत्यागार प्रकाशन, 2018, पृ. 81

40. वहीं. पृ.79

41.संपादक प्रसाद महेश्वर चंद्र, वृध्दावस्था विमर्श, पृ.18

डॉ.सूरज सिंह नेगी के उपन्यास में वृध्द विमर्श

वृद्धवस्था मानव जीवन की वह अवस्था है, जिस मे मानव कि उम्र उसके जीवन काल के निकट दूर या इसके अधीर हो जाता हैं। दूसरे शब्दों में वृध्दावस्था ऐसी अवस्था है जो अचानक न आकर धीरे-धीरे आनेवाले अवस्था है। जैसे की बालवस्था, किशोराअवस्था, प्रौढ़अवस्था अंत में वृद्धअवस्था आती है। वृद्धअवस्था स्वाभाविक एवं प्राकृतिक घटना है। जो समय के साथ हमारे जीवन में घटित होती है। "लोक भारतीय राजभाषा शब्दकोश हिंदी अंग्रेजी के अनुसार वृध्द का अर्थ है - बूढ़ा, परीपक्का, या पका हुआ है।"[1] विमर्श शब्दा को सरल भाषा में चिंतन, मनन विचार विवेचन, विश्लेषण के आदि के रूप में देखा जाता है किसी भी समस्या या स्थिति, परिस्थिति को देखकर उनके बारे में चिंतन मनन करना ही विमर्श कहलाता है। "लोक भारती राजभाषा शब्द कोष के अनुसार:- विमर्श का अर्थ पूर्ण चिंतन, मनन, गहन विश्लेषण करने से ही है। हिंदी के विमर्श को अंग्रेजी में Discourse के नाम से अभिहित किया जाता है।"[2] जिसका अर्थ भी सुर्धीर्ध, गंभीर चिंतन से लिया जाता है। समसामयिक परिदृश्य के संदर्भ में साहित्य के व्दारा सभा, वाद-विवाद, डिबेट के माध्यम से चर्चा-परिचर्चा आदि की जाती है। साहित्य में विमर्श को लेकर काफी विषयों पर चर्चा होती रही है। आज समाज में स्वार्थ की भावन भयानक होती जा रही है, जीवन के यथार्थ मूल्यों को भूलते जा रहे हैं।

जिसका परिणाम स्वरूप नैतिकता का हास होता है। उन मूल्यों को देखने के लिए वृद्धवस्था एक दर्पण है।

वृद्ध विमर्श का अर्थ है वृद्धवस्था की परिस्थितियों घटनाओं आदि का विचार करना है। आज के दौर में वृद्ध विमर्श आवश्यक है क्योंकि आज दौर में हम काम में इतने व्यस्त हो रहे कि हमारे पास बुजुर्ग को समझने का समय ही नहीं हैं। भूमंडलिकरण के दौर में सब कुछ बदल रहा है। परिवार की संरचना बदल रही है। इस का मुख्य कारण हे कि आज के दौर में संयुक्त परिवार टूट कर एकल परिवार हो रहा है। इस कारण हम बुजुर्ग पर ध्यान नही दे पा रहे और नहीं उनके अनुभव और ज्ञान का लाभ उठा पा रहे हैं। जीवन के भाग दौड़ के कारण हमारे पास पुरानी तथा नई पीढ़ी में एकता का मेल नहीं हो रहा है। परंतु पीढ़ीयाँ एक दुसरे के नजदीक आने की अपेक्षा में दूर होती जा रही है। यह दूरी सभ्यता और संस्कृति से दूर होती जा रही है। इसके कारण हम वृद्ध के ज्ञान तथा अनुभवओं को दूसरी पीढ़ी में ग्रहण नहीं कर पा रहे हैं। वृद्धों के पास बालअवस्था से पौढ़ाअवस्था तक के अनुभवों का ज्ञान भंडार होता है। वे अपने अनुभव से ही युवा पीढ़ी इसके साथ संक्रमित नहीं हो रही है। उनके के विचार उन्हें पुराने पीढ़ी के परंपरागत लगते हैं। बुजुर्ग व्यक्ति उनके जीवन के अनुभव के बल पर नई पीढ़ी के द्वारा आर्थिक, सामाजिक, राजनीति, को परिवर्तित करने की क्षमता है। पंरतू उन्हें आज युवा वर्ग वृद्ध व्यक्तियों को समस्या की दृष्टि से देखता है। जिस के कारण परिवार का विघटन हो रहा है। हमें बुजुर्गों के साथ प्रेम का संबंध स्थापित करना चाहिए। उन्हें समाज में सम्मान देना चाहिऐ। समाज में उचित सम्मान न मिलने के कारण वृद्ध व्यक्तियों का जीवन निराश की तरह जा रहा है।

संयुक्त परिवार का विघटन होने के कारण वृद्धों की देखभाल की समस्या दिखाई देती है। आधुनिक दौर में संतान अपने गाँव, शहर से बाहर देश-विदेश में जाकर अपनी गृहस्थी बसा लेते हैं। इस से वृद्धों की समाज में स्थिति दयनीय हो जाती है। भूमंडलीकरण, आधुनिकीकरण और एकल परिवार के कारण समाज में परिवर्तन आ रहा है। आज के यूग में रिश्ते-नाते संस्कारों की संरचना बदल रही है। पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के बीच की दूरी आने के कारण हम अपने संस्कृति, सभ्यता परंपरा से दूर चले जा रहे हैं। साहित्य प्रारंभ से ही समज का दर्पण माना जाता है। साहित्य में वृद्ध का जीवन का चित्र प्रत्येय युग से परिचित होता है। जैसे-जैसे समय में परिवर्तन होता गया, वैसे-वैसे वृद्धों की दशा में परिवर्तन होता गया। पुराने काल में वृद्धों की स्थिति सम्मानीय रही है। परिवार में उनकी ही सत्ता हुआ करती थी। वे हमेशा परिवार, समाज और राष्ट्र के हितों में रहे थे। उनके मार्गदर्शन और प्रेरणा स्रोत के कारण जीवन में सही मार्ग पर चलने की राह मिलती थी। समीक्षाक चंद्रमौलेश्वर प्रसाद कहते हैं कि "बुढ़ापे को एक नई दृष्टि से देखने की आवश्यकता है- एक ऐसी दृष्टि से जिस में संवेदना हो और बूढ़ों के लिए आदर्श सम्मान प्राप्त हो।"[3]

वृध्द ही परिवार के सदस्यों को धागों में बांधने की क्षमता होती है। एकल परिवार की अवधारणा एवं जीवन की समस्याओं और व्यवस्थाओं के बीच की रोजगार की तलाश में युवाओं घर से दूर चले जाने के कारण वृद्ध अपने आप को अकेला, असहाय, असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। 21वीं सदी में ही नहीं बल्कि की प्राचीन काल से ही वृद्धों के जीवन का चित्रण

मिलता है। रामायण और महाभारत में इसका उल्लेख मिलता है। रामायण में अयोध्या के राजा दशरथ के सबसे बड़े पुत्र राम के जीवन का वर्णन मिलता है। राम ने वृद्ध पिता की आज्ञा का पालन करते हुए चौदा साल का वनवास स्वीकार किया। इस तरह राम कथा का एक पात्र श्रवण कुमार अपने वृध्द माता-पिता की सेवा करके आदर्श पुत्र बन गया उनके वृद्ध माता-पिता अंधे होने के बावजूद वह बचपन से ही अपने माता-पिता का आदर करता था। उसकी सब इच्छा आकांक्षाएँ पूरी करता था। श्रवण कुमार माता पिता को बोझ की तरह न देखकर आदर भावों से सेवा करके आदर्श पुत्र बन गया। हिन्दी साहित्य में वृद्ध विमर्श की शुरुआत तब हुई जब साहित्यकारों ने संवेदनात्मक रूप से यह महसूस किया कि संयुक्त परिवारों की परंपरा अब धीरे-धीरे भारतीय समाज से भी गायब हो रही है। तमाम हिन्दी साहित्यकारों ने उस परिवर्तन को महसूस किया जो बुजुर्ग कल तक घर के नीति-निर्माण थे। उन्हें बिल्कुल स्वाभाविक रूप से आज उनके पद से मुक्त किया जा रहा है, बल्कि हाशिये पर भी ढकेला जा रहा है। हिन्दी के कई साहित्यकारों ने अपने कहानियों और उपन्यासों में वृद्धों की समस्या को निरूपित किया गया है। हिंदी साहित्य की उपन्यास, कहानी तथा कविताओं में बुजुर्गों का चित्रण मिलता है। जैसे की प्रेमचंद्र की बूढ़ी काकी कहानी में प्रमुख पात्र बूढ़ी काकी को अपनी जठराग्नि को शांत करने के लिए जुठे पत्तल से खाने तक को विवश कर देती हैं। संयुक्त परिवार भारतीय समाज की केन्द्रीय संस्था और परिवार का प्रमुख स्वरूप रहा है। जो आधुनिकीकरण और संचार क्रांति के वर्तमान दौर में परिवर्तन की ओर क्रियाशील है। आज विघटित परिवारों की संख्या बढ़ी है अर्थात पुत्र अपने माता-पिता से अलग रहना

पसंद करते हैं। चित्रा मुद्गल के 'गिलिगडु' उपन्यास में टूटते हुए संयुक्त परिवार का वृद्धों पर पड़ने वाले दुष्परिणामों का करूणाजनक चित्रण किया गया है। बाबू जसवंत सिंह अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद बेटे नरेन्द्र के पास दिल्ली चले आते हैं। परिवार में उनके साथ अछूतों जैसा व्यवहार किया जाता है। बाबू जसवंत सिंह अपनी तुलना टॉमी से करने लगते हैं, "इस घर में एक नहीं दो कुत्ते हैं- एक टॉमी, दूसरा अवकाश प्राप्त सिविल इंजिनियर जसवंत सिंह।"[4] इसी प्रकार कर्नल साहब की ही कथा है जो इससे कहीं ज्यादा करूण है। प्रमुख उपन्यासकार काशीनाथ सिंह ने अपने उपन्यास 'रेहन पर रग्घू' में बुर्जुगों पर प्रकाश डाला है। इसमें प्रमुख पात्र मास्टर रघुनाथ के माध्यम से वृद्धों के बदले हुए समय, परिवेश और मूल्यों को अपनी द्दष्टि से देखते है। रघुनाथ का बेटा संजय अपने पिता और माता के अनुमति के बीना अपनी मर्जी से प्रोफेसर सक्सेना की बेटी सोनल से कोर्ट म्यारेज (कोर्ट में विवाह) कर लेता है। इससे यह पता चलता है कि आजकल की नयी पीढ़ी अपने बूढ़े माता-पिता की बात मानने से इनकार कर रही है। जो माता-पिता अपना सब कुछ समर्पण करके बच्चों का लालन-पोषण करते है। आज वही बच्चे बडे होकर अपने माँ-बाप की नहीं सुनते।

चित्रा मुद्गल की रचना 'गिलिगडू' में दो सेवानिवृत्त वृद्धों की तेरह दिन की कहानी में उनकी वृद्धावस्था के अकेलेपन पारिवारिक, त्रास, नई पीढी, नाती-पोते से मोह अपने अरमानों को पूरा न कर पाने की विवशता आदि का चित्रण किया है। इस उपन्यास में जसवन्त सिंह तथा कर्नल

स्वामी है। कैसे नौजवान पीढ़ी अपने बुजुर्गों का घर में सम्मान न देते हुए अकेला छोड़ देते हैं। यह कृति इस विश्वास को और भी गहरा करती है कि साहित्यिक मूल्यों में सामाजिक सार्थकता का महत्व हमेशा बना रहे।

हिन्दी साहित्य की प्रमुख रचनाकार ममता कालिया ने अपने 'दौड़' उपन्यास में उन वृद्धावस्था की समस्या का खूलकर चित्रण किया है। पवन घर से दूर अहमदाबाद में नौकरी के लिए जाने की बात घर में बताता है तब माँ-बाप नाराज हो जाते हैं, वह चाहते थे कि पवन वहीं उनके पास रहकर नौकरी करें। पवन उनसे कहता है "पापा मेरे लिए शहर महत्वपूर्ण नहीं है, करियर महत्व है।"[6] जो बच्चे बुढापे का सहारा होते है, परंतु विदेशी तथा अपने ही देश के महानगरों में गृहस्थी जमा लेने के कारण बुढापे में अपने बच्चों से वंचित होकर आज वृद्ध अकेलेपन का शिकार होकर जीवन जीने के लिए अभिश्राप हुए है। यहाँ तक की विदेश में रहनेवाली संतान उनके वृद्ध माता-पिता के अंतिम संस्कार में नहीं पहुँच पाते। आज के युवा वर्ग अपने सम्पूर्ण समय काम में लग जाते हैं और वृद्ध माता-पिता पर ध्यान नहीं देते।

उपन्यासकार हृदयेश ने अपने उपन्यास 'चार दरवेश' में वृद्धों का सजीव चित्रण किया है। ऐसा लगता है मानों ये बुजुर्ग हमारे ही आस पडोस से उठकर कथा-पात्रों की भूमिका निभा रही है। इस उपन्यास को उन्होंने चार वृद्धों को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। वह चार वृद्ध चित्ताहरण शर्मा, रामप्रसाद, शिवशंकर तथा दिलीपचन्द वे सभी अपने परिवार के साथ रह रहे हैं। परंतु उनसे उन्हें काफी शिकायतें है, वे कभी उन

शिकायतों को किसी पार्क में बैठकर, तो कभी पुल पर बैठकर एक दूसरे के सामने अपनी भावनाओं को बयान करते हैं। किसी को बेटी-दामाद से शिकायत, कभी तो किसी को अपने बेटे-बहू से, किसी को नाती-पोतों से। ये शिकायतें पीढ़ी-अंतराल के कारण मूल्य स्तर पर है, तो कभी परिवार से मिलने वाली दुर्व्यवहार के कारण उन सब वृद्धों पर शोषण को देख सकते है। वृद्धावस्था में मनुष्य का शरीर नियंत्रण से बाहर हो जाता है। रामप्रसाद बूढे हो गए हैं। पेशाब का नियंत्रण में न रहने के कारण उनके शरीर की एक विवशता है। उसके कारण उन्हें अपनी बेटी के सामने जलील होना पडता है। दामाद के द्वारा तरह-तरह के मानसिक कष्ट को सहना पड़ता है। इसी प्रकार चिन्ताहरण, दिलीपचन्द तथा शिवशंकर को भी अपने-अपने परिवार से किसी-न-किसी रूप में शिकायतें है। वे सभी सूखे नाले की पुलिया पर बैठकर सुलझाते-बुझाते रहते हैं।

कृष्णा सोबती जी द्वारा लिखित “समय सरगम” इस उपन्यास में दमयंती इस पात्र के माध्यम से विधवाओं की दुर्दशा को चित्रित किया है। दमयंती का बेटा और बहु हमेशा उसका अवमान करते हैं। विधवा दमयंती के पास सब कुछ होते हुए भी वह अकेली और दुःखी है। वह कहती है कि, “मैं तुम्हारी तरह अकेली होती तो क्यों परेशान होती। बच्चे साथ रह रहे हैं। मेरे घर में मेरा किचन चल रहा है, खर्चा मैं कर रही हूँ और मैं अपने कमरे में अकेली पड़ी रहती हूँ। बिना मेरी इजाजत मेरा सामान इधर से उधर करते रहते हैं- मैं अपने बच्चों से वैर विरोध क्यों करूँगी।”[5]

इससे पता चलता है कि दमयंती किस प्रकार दुःख को सहती हुई अपने जीवन के बचे दिन काट रही हैं।कृष्णा सोबती जी द्वारा लिखित “समय सरगम” इस उपन्यास में दमयंती इस पात्र के माध्यम से विधवाओं की दुर्दशा को चित्रित किया है। इससे पता चलता है कि दमयंती किस दुःख को सहती हुई अपने जीवन के बचे दिन काट रही हैं। इस तरह से कहानीयाँ और उपन्यासों में वृध्दों का जीवन चित्रण साहित्य में मिलता है।

इसी तरह डॉ.सूरज सिंह के उपन्यासों में वृद्ध विमर्श देख सकते हैं। डॉ. नेगी जी के उपन्यासों का केंद्र में वृद्धों की समस्या, हमारी संस्कृति, सभ्यता, मानवीयता, रिश्तों की अहमियत आदि है। भूमंडलीकरण के बदलते युग में रिश्तों में आए बदलाव का सबसे अधिक परिणाम वृद्धों के जीवन पर हुआ है। आज बच्चे पढ़ने हेतु घर से बाहर निकलते हैं फिर नौकरी के लिए विदेश चले जाते हैं और वही बसते हैं। माता-पिता उनकी राह देखते-देखते गुजर जाते हैं। डॉ.नेगी जी ने वृद्धों की यह छटपटाहट तथा पीड़ा को अत्यंत मार्मिक ढंग से अपने उपन्यासों में अभिव्यक्त किया। इक्कीसवीं सदी में वृद्धों की संख्या काफी बढ़ गई है। औद्योगिक सुविधा एवं आर्थिक संपन्नता के कारण वृध्दों का जीवन मान बढ़ रहा है|परंतु दूसरी ओर उनकी समस्याएँ भी बढ़ रही है। भूमंडलीकरण के कारण समाज में आ रहे काफी असर वृध्दोंके जीवन पर हुआ है।वे अपने बच्चों को पढ़ाते है और अपने पैरों पर खड़ा होने के काबिल बनाते है। परंतु वही बच्चे एक बार विदेश चले जाते है तो अपने वृद्ध माता-पिता की ओर ध्यान नहीं देते। बच्चों की राह देखते

देखते वे थक जाते है। वृद्धावस्था में एक तो शारीरिक पीड़ा से वे गुजर रहे होते है उसी में उन्हें मानसिक पीड़ा से गुजरना पड़ता है। आज यह वर्ग समाज के द्वारा उपेक्षित हो रहा है साथ ही परिवार के निर्णय प्रक्रिया से इन्हें दूर रखा जाता है। इस कारण वे अकेलापन एवं बेगानेपन का सामना करते है। डॉ.नेगी जी ने उपन्यासों के माध्यम से वृद्धों की इसी छटपटाहट को अभिव्यक्त किया है। 'वसीयत' उपन्यास पारिवारिक संबंधों पर आधारित है, जिसमें लेखक ने उत्तराखण्ड की कुमाऊंनी भाषा को शामिल कर पारिवारिक रिश्तों की महत्ता को उजागर करने का प्रयास किया है। यह उपन्यास तीन पीढ़ियों को समानांतर लेकर लिखा गया उपन्यास है। लेखक ने यथार्थ को दिखाते हुए उपन्यास में एक ऐसा चित्र उकेरा है जहाँ पुत्र से पिता बनने की यात्रा का बड़ा ही मार्मिक चित्रण है। उपन्यास में माता-पिता की पीड़ा का वर्णन करने के लिए कई ऐसी घटनाओं को लेखक ने कथा यात्रा में पिरोया है जो सीधे पाठक के हृदय को रोमांचित करते हुए स्थिति पर विचार करने को प्रेरित कर देती है। नायक विश्वनाथ के माध्यम से कथाकार ने विश्वनाथ के पिता एवं विश्वनाथ के पुत्र दोनों के व्यवहार को अपनी स्थिति से तुलना करते हुए कहानी को आगे बढ़ाया है। एक स्थिति वह है जब विश्वनाथ का पुत्र आज विश्वनाथ की वृद्धावस्था में उसकी सतत उपेक्षा कर रहा है। पुत्र द्वारा की गई यही उपेक्षा विश्वनाथ के लिए अपने पिता के साथ स्वयं द्वारा किए हुए व्यवहार की स्मृति जागृत कर देती है। ऐसे में उसे अपने पुत्र राजकुमार में अपनी ही युवावस्था तथा स्वयं में अपने पिता की परछाई नजर आती है। उसे याद आता है किस तरह वह सदा अपने पिता को इसलिए दोषी मानता रहा कि उन्होंने विश्वा को बाहर पढ़ने हेतु अनुमति नहीं दी। अपनी युवावस्था में माता-पिता की चिंताओं से कोसों दूर विश्वनाथ

को यदि चिंता थी तो वह थी ख्याति प्राप्त करने की। जिसे तरक्की हेतु विदेश जाने का पुत्र तो जान से भी प्यारा लगा, लेकिन पिता द्वारा भिजवाए गये उस पत्र का मूल्य कुछ भी नहीं जिसमें उसकी माँ की बीमारी तथा अंतिम इच्छा को बताते हुए पिता उसे घर बुला रहा है। स्मृति शैली में लिखे गए इस उपन्यास में डायरी तथा पत्रों के माध्यम से कथा को सार्थक विस्तार मिला है। विश्वनाथ की वृद्धावस्था से आरंभ होने वाला यह उपन्यास पुत्र राजकुमार के व्यवहार को तो पाठक के सामने रखता ही है किंतु वर्तमान के प्रति चिंतित तथा पश्चात्ताप बोध से ग्रस्त विश्वनाथ द्वारा जो युवावस्था में गलतियाँ हुई है उन्हें भी समानांतर बताता रहता है। एक प्रसंग में विश्वनाथ जी के बुजुर्ग मित्र शर्मा जी की स्थिति को रखते हुए आज की संपूर्ण वृद्ध पीढ़ी की स्थिति को रख दिया गया। 'रिश्तों की आँच' उपन्यास में माता पिता एवं संतान के रिश्तों को आधार बनाते हुए स्पष्ट किया है कि किस प्रकार पिता अपना संपूर्ण जीवन अपने बच्चों के हित में लगा देते हैं। वृद्धावस्था में वही बच्चे अपने दायित्वों को भूल जाते हैं किंतु माता पिता सब कुछ जानते हुए भी बच्चों से मनमुटाव कभी नहीं करते है। पिछले छः दशक में विकास इतनी तीव्र गति से हुआ है| जिसने जीवन शैली और सामाजिक व्यवस्था में अप्रत्याशित परिवर्तन किया हैं। वर्तमान बदलाव से आज के बुजुर्ग हतप्रभ हैं और अपने को परिवार एवं समाज के नए वातावरण में समायोजित कर पाने में असमर्थ पाते हैं। वृद्धावस्था की शिथिलताओं को व्यक्त करते हुए 'रिश्तों की आँच' उपन्यास में लेखक कहते है, "अक्सर बुढ़ापे में इंसान दूसरों पर निर्भर हो जाया करता है। जो काम हम यौवनावस्था में स्वयं कर लेते है, जैसे की आना हो, जाना हो, क्या खाना, किससे मिलना, इन सब में स्वतंत्र होते है।

वृद्धावस्था आते ही इन सभी कामों के लिए दूसरों पर निर्भर हो जाते है।"[6] नियति चक्र' उपन्यास में पिता का स्नेह अपने बच्चों के प्रति इतना प्रगाढ़ होता है कि वह उनके वशीभूत हो जाता है। पिता अपनी औलाद में अपना अक्स देखता है। अपनी औलाद के प्रति वात्सल्य एवं प्रेम के वशीभूत अपना सब कुछ औलाद को सुपुर्द कर देता है। बेटा उस पिता के त्याग और प्रेम को नहीं समझ पाता। अपने अंतिम समय में पिता को अपने ही घर से बेघर होना पड़ता है यहाँ तक कि अपना वास्तविक नाम तक छिपाना पड़ता है ताकि दुनिया उसके बेटे को ताने न दे। 'नियति चक्र' घूमता है और एक दिन बेटा अर्श से फर्श पर आ जाता है।' नियति चक्र' उपन्यास से पुत्र चित्रांश की पंक्तियों में "मैंने बाबूजी के जीवन काल में उनका तिरस्कार किया, मैं स्वयं उनको अपना प्रतिद्वन्द्वी मान बैठा, मुझे लगा जैसे वह पुरातनवादी विचारधारा के साथ जी रहे हैं। यहाँ तक कि उनके घर से जाने के बाद भी मुझ पर कोई असर नहीं हुआ, लेकिन इस पुण्यात्मा को सम्मान न देने का नुकसान मुझे उठाना पड़ा। धीरे-धीरे कंम्पनी घाटे में जाने लगी, तैयार किए जा रहे माल की गुणवत्ता घटिया होने से बाजार में खरीददार नहीं मिले। कार्य का बोझ बढ़ता जा रहा था। इसी दौरान जब आपसे मुलाकात हुई और बाबूजी के विषय में नजदीक से जानने का अवसर मिला, मैंने प्रण कर लिया था कि उनके बताए गए मार्ग पर चलूँगा आप द्वारा सौंपी गई बाबूजी की डायरी एक जीता जागता जीवन दर्शन है।[7] एक पुत्र की बदलती हुई मानसिक स्थिति का चित्रण करते हुए उपन्यासकार ने चित्रांश के हृदय परिवर्तन को दिखाया है- "पिताजी की डायरी जब भी किसी

संकट में या असमंजस में होता हूँ| मेरा मार्गदर्शन करती है, लगता है जैसे मेरे बाबूजी आज भी मेरा मार्गदर्शन कर रहे हैं। जिन कर्मनिष्ठ और संस्था के वफादार कर्मचारियों को मैंने अहंकारवश संस्था से निकाल दिया था उनसे पुनः सम्पर्क साधा और उन सबको अपनी भूल के लिए क्षमा याचना करते हुए संस्था में लौट आने का आग्रह किया, आज बाबूजी के समय के कुछ वफादार कर्मचारी मार्गदर्शक को भूमिका में कार्य कर रहे हैं। सच यही है कि मैं अहंकार के वशीभूत इन नींव के पत्थरों की कद्र न कर सका और कंगारूओं को देख उन्हीं को सब कुछ मान बैठा था।"[8] इस तरह उसे अपनी भूल का अहसास होता है वह समझ जाता है कि जिस चकाचौंध में वह रह रहा था वह सब पिता के आशीर्वाद से ही था। किंतु अब उसे समझ में आ गया था कि कर्म ही इंसान को महान बना सकता है। इस तरह से डॉ. नेगी ने उपन्यासों के माध्यम से वृद्ध विमर्श को व्यक्त किया है।

3.1 वृद्ध युवा पीढ़ी में व्दंद

आज के वर्तमान दर में युवा और वृद्ध पीढ़ी मे अंतर देख सकते है। युवावों के मन में बड़े बुजुर्गा के प्रति गहरी निष्ठा एंव लगाव उत्पन्न नहीं हो पा रहा है। उन्हें बोझ की तरह से समझा जा रहा हैं। आज की युवा पीढ़ी पुरानी रीति रिवाज, पुरानी संस्कार को नापसंद करते हैं। दो पीढ़ी में अंतर होने का मूख्य कारण है, विचारों, जीवनशैली में अंतर होने के कारण यूवा पीढ़ी ग्रहण नही कर पा रही है। प्राचीन काल में वृध्दों की स्थिति परिवारों में आदर, सम्मान की भावना रही हैं। बुजुर्गों को परिवार

का मुखिया माना जाता था। परिवार के सभी प्रकार के फैसले की जिम्मेदारी बड़े- बुजुर्गों ही लिया करते है। उनके सल्ले के बिना कोई काम नहीं होता था। उन्ही के परिवेश के कारण पहले संयुक्त परिवार हुआ करते थे। वे पुरे परिवार को एक माला में मोतियों की तरह पिरोह कर रखते थे। आज के आधुनिक युग में वृध्दों की स्थिति बदल रही हैं। युवा वर्ग माता पिता को वृद्ध आश्रम या कमरे मे बंद करके जिंदगी जीने के लिए मजबुर किया जाता हैं।

नेगी जी के उपन्यासों में युवा पीढ़ी के बदलते दृष्टिकोण और उनकी भावनात्मक और संवेदनात्मक शून्यता को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। समकालीन समाज में हमारी नई पीढ़ी अपने संस्कारों को पीछे छोड़ती जा रही है। वह परिवार से दूर रहकर अपनी जिंदगी अपने तरीके से जीना चाहती है, व्यक्ति अपने स्वार्थ के आगे अपने माता-पिता के प्रेम, उनके त्याग को भी बुला बैठता है। 'वसीयत' उपन्यास में इसका उदाहरण देख सकते हैं:-

आज के युवा वर्ग अच्छी शिक्षा और नौकरी प्राप्त करने के लिए विदेश जाना चाहिए है। वहाँ जाने के बाद उनके जीवन मूल्यों में बदलाव आता है। उनको अपने माता पिता के विचार पुरानीपीढ़ीगत लगते हैं। दो पीढ़ी मे अंतर होने के कारण माता पिता के विचार को ग्रहण नहीं कर पाते है। इसी तरह प्रस्तुत उपन्यास के नायक विश्वनाथ ही अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेश जाना चाहता है, पर पिता व्दारा कोई संकारात्मक जवाब न मिलने के कारण वह शहर में आता है। पंरतु अपने गाँव और माता पिता को पिछे मोड़ कर नहीं देखता है। कहाँ जाता है कि जो बोया जाता है उसी को काटते है। उसी तरह विश्वनाथ का बेटा राजकुमार

विदेश में अच्छा डॉक्टर बन जाता है। पर वापस घर नहीं आता है। माता- पिता अपने बेटे की सूरत देखने के लिए तरस जाते है। विश्वनाथ कहता हैं कि-"बाबूजी आपने अच्छा ही किया जो मूझे विदेश नहीं भेजा, मूझे क्या मिला राजकुमार को विदेश भेजक।"[9]

आज के युवा पीढ़ी माता पिता के प्रति संवेदनशील नहीं रहते हैं। अपनी इच्छा आकार्षाऐ पूर्ण करने के लिए विदेश चले जाते हैं। यहाँ तक की बेटे का मूह देखने के लिए तरस जाते। वृध्द और यूवा पीढ़ी में व्दंद देख सकते है।

भारतीय समाज में प्राचीन काल में जन्मदिन परंपरागत तरीके से मंदीर में जाकर, भगवान और बड़ों का अशिर्वाद लेकर घर में ही सहपरिवार के साथ मनाया जाता था। जिस तरह समाज में भौतिकता में परिवर्तन होने लगा। वृध्द और यूवा पीढ़ी के विचारों में अंतर आने के कारण यूवा वर्ग आधूनिक तरीके से धूम धाम में मनाने लगे। आज के आधुनिक तरीके से मनाने जानेवाले त्योहार वृध्द को ज्यादा पसंद नहीं आते है। फिर भी वह ग्रहण करने की कोशिश कर रहे हैं, पंरतु आज का यूवा वर्ग उन्हें शामिल नहीं किया करते है। इसका उदाहरण 'वसीयत' उपन्यास में देख सकते हैं कि:- अपने ही पोते के जन्मदिन पर घर के नौकर को ले जाते हैं। लेकिन दादाजी को खूशीयों में शामिल नहीं करते। उन्हें घर में यह कहकर छोड़ जाते हैं कि आप बच्चों की पार्टी में आकर क्या करें और आज कल चोर खाली घरों को निशाना बनाते हैं। तो आप घर की देख रेख करेगें। शर्मा जी कहते हैं- "अरे बहुतों पराया घर की बेटी उसे क्या दोष दूँ उसने तो मेरी तकलीफ नहीं देखीं है पर मेरा करण

जो बचपन से ही मेरी मजबूरी देखता आ रहा है। आज मेरी भावना को समझ नहीं सका।”[10]

आज के युवा वर्ग बुजुर्ग की भावनाओं को नहीं समज पा रहे है। उनके आयू में जरूर अंतर है। लेकिन युवा वर्ग उन्हें शामिल नहीं करते हैं। वृध्द होने के कारण उन्हें घर की देख रेक करने के लिए रखा जाता है। अपने पीता कि तफलिफ बेटा होकर भी तकलीफ को समझ नहीं पा रहा हैं।

यूवा वर्ग अपनी सूख सूविधा के लिए गाँव से शहर में आकर बसते है। गाँव से ज्यादा शहर की सूख सूविधा पसंद आती है। पर जो वृध्द बूजूर्ग होते है वह गाँव की ज़मीन, जायदाद गाँव के परिवेश सें दूर नहीं जाना चाहते। उन्हें मजबूर हो कर अपने परिवार के साथ एक जगह से दूसरे जगह जाना ही पड़ता है। इसका उदाहरण ‘रिश्तों की आँच’ उपन्यास में देख सकते हैं:- “छोड़ भी कस्तूरी! यह क्या मोह पाले बैठी है? आज जब बेटा शहर से तुम्हें लेने आया है तो हाँ क्यों नहीं कह देती भला, तुम्हारे बच्चे ही तुम्हारी असल संम्पति हैं यह जहाँ रहें वहाँ सूख ही सूख है। सोच ले अभी भी समय है।”[11]

पुरानी पीढ़ी को गाँव से लगाव होता है। उन्हें जमीन जायदाद की परवा होती है। उसी तरह रामप्रसाद की माँ शहर जाने के लिए हीचकती है, उन्हें अपने गाँव की परवा रहती है। फिर भी वह अपने बच्चों को अच्छा भविष्य देने के लिए अपने बेटे रामप्रसाद के साथ जाने के लिए तयार होती है। वह अपने बच्चों को ही असल संपत्ति मानती है।

पुराने जमाने में कार्यलय में काम करनेवाले कर्मचारि मिल जुलकर काम करते थे। एक दूसरे के सूख-दूख में साथ देते थे। ऑफिस में घर जैसा माहौल तयार करते। पर आज के वर्तमान दौर में मनुष्य अपनी तरक्की करने के पीछे दौड़ रहे हैं। एक दूसरे की पीड़ा दर्द को समझ नहीं पा रहे है। इसका उदाहरण रामप्रसाद के माध्यम से देख सकते हैं। जब अपने ऑफिस में थोड़ी देर से पहुँचता तो नए साहब आए वह कहते हैं:-"बाबूजी! भाई यह ऑफिस है, समय का कोई मोल होता है। आप जैसे पुराने लोग खुद ही समय पर नहीं आए तो अन्य लोग क्या सीखेंगे।"[12] जो पुराने कर्मचारी होते हैं, उसे ऑफिस से उतना मान सम्मान नहीं दिया जाता है। आज के वर्तमान के दौर में हर कोई अपनी मनमानी करता है। जो पुराने कर्मचारी होते हैं। उन्हें वर्तमान कानुन तरीके से चलना होता है।

3.2 वैचारिक मत भिन्नता

भारतीय संस्कृति में बुजुर्गों को उच्च और आदर्श स्थान दिया जाता है। भूमंडलीकरण के कारण समाज में परिवर्तन होने के कारण पुरानी पीढ़ी और युवा में वैचारिक मत भिन्नता दिखाई देती है। पहले सब एक साथ रहते थे।जब परिवार पर कोई मुसिबत आऐ तो एक जूठ होकर परिवार का साथ देते थे। जिस तरह से समाज में परिवर्तन होने लगा इसका परीणाम एकल परिवार में बदलने लगा। पहले परिवार में बुजुर्ग को मान सम्मान दिया जाता था। कोई भी उसे पलट कर जवाब नहीं दिया जाता था। लेकिन अब परिवार में दो पीढ़ी के वैचारिक अंतर होने के कारण

घर का निर्णय युवा लेता है। इसका उदाहरण हम 'वसीयत' उपन्यास में देख सकते हैं। जब त्रिपाठी जी के घर में उनकी पुस्तक को लेकर परिवार में झगड़ा होता है। तो बहु उसे बहुत बुरा कहती हैं। त्रिपाठी भी अपना आवाज बढ़ा करके बहुत से बातचीत करता है की सोचकर बेटा उसका साथ देगा। लेकिन बेटा ही उसे कहता है कि:- "पिताजी! आप भी क्या छोटी-छोटी बातें लेकर बैठ जाते हो, अरे अब कुछ बच्चों के विषय में भी तो सोचना शुरू करो।"[13] आज के वर्तमान समय में बुजुर्ग को एक बोझ की दृष्टि से देखा जाता है। उसके दर्द को कोई समझ नहीं रहा है। त्रिपाठी अपने ही घर में अकेलापन की जिंदगी जी रहा है। बेटा और बहू आधुनिक युग के होने के कारण वह अपने हिसाब से घर में परिवर्तन लाना चाहते हैं।

परिवार का व्यक्ति परिवार को जोड़े रखने का काम करते हैं।इस का उदाहरण 'रिश्तों की आँच' उपन्यास में देख सकते हैं। "देख बेटा राम प्रसाद! मैं तेरे दर्द को समझ सकती हूँ। ममता और रमेश ने जो व्यवहार किया वह ठीक नहीं किया तेरी त्याग को समझ न सके खैर जाने दे वह दोनों तेरे अपने हैं अब आगे की सोच।"[14] आज के वर्तमान दौर में यूवा रिश्तों की मर्यादा को भूलते जा रहे हैं।

इस का परिणाम वृध्दों पर दिखाई देता। दो पीढ़ी में वैचारिक भीन्नता होने के कारण आज का युवा वर्ग वृध्दो के विचार ग्रहण नही कर रहे है। आज के आधुनिक युग में दो पीढ़ीयो के बीच परिवर्तन होता दिखाई देताहै।

3.3 अस्तित्व का प्रश्न

प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में माता-पिता को उच्च स्थान दिया जाता था। इसका उदाहरण हम प्राचीन ग्रंथ कहानीयों में देख सकतेहै। “मातृ देवो भव: पितृ देवो भव” अर्थात माँ भगवान है और पिता परमेश्वर है। पंरतू आज परिवार की संरचना बदल रही है। आज के वर्तमान समय में युवा वर्ग अपने माता-पिता को मान सम्मान नहीं दे रहे हैं। मानवीय मूल्य, आदर्श जीवन-शैली, संवेदना, रिश्तों को प्राथमिकता, अतिथियों और वृद्धों का सम्मान भारतीय संस्कृति के प्रमुख अंग रहे हैं। हमारी संस्कृति ही हमारी पहचान रही है। परंतु वर्तमान भोगवादी दौर में वृद्धों की पहचान अपना अस्तित्व खोती जा रही है। भूमंडलीकरण और औद्योगिकीकरण से उपजी आधुनिकता ने हमारी संवेदनाओं को खोखला कर दिया है। भाग दौड़ की वर्तमान व्यवस्था में बुजुर्ग इंसान पीछे छूट गया है, यूवा वर्ग आगे निकल गया है। किसी के पास इतना समय ही नहीं कि थोड़ी देर रुक कर किसी को सुख:दुख की बात सूनने। आधुनिक कहलाने वाली युवा पीढ़ी संवेदनहीनता का शिकार हो रही है। जिससे निराशा, तनाव, कुंठा और अकेलेपन का विस्तार होता जा रहा है।

आधुनिक काल में जिस तीव्रता से भौतिक विकास हुआ है, उतनी ही तीव्रता से मानवीय संवेदनाओं का विनाश भी हुआ है। समाज में बड़ी तेजी से बदलाव हुआ है। समाज की नींव कहलाने वाली महत्वपूर्ण संस्था परिवार अपना अस्तित्व खो रही है। पहले परिवार दादा, परदादा, बड़े भाई, भाभी, माँ से विस्तार पता था, लेकिन अब पति-पत्नी और बच्चों तक सिमट कर रह गया है। परिवार के मुखिया का स्थान भी परिवर्तित

हो गया है। दादा का स्थान पिता ने ले लिया है। इस परिवर्तन की मार बुजुर्गों को मानसिक आघात पहुंचा रही है। वृद्धों का स्थान अब घर परिवार के बजाय वृद्धाश्रमों में परिवर्तित हो गया है। इस बदलते दौर में बुजुर्गों का सम्मान करना हमारी नई पीढ़ी अपने स्टेटस सिंबल के अनुरूप नहीं समझती। वर्तमान सयम में वृध्दों के सामने अस्तित्व का प्रश्न रहा है।

इसका उदाहरण हम 'वसीयत' उपन्यास में देख सकते हैं कि:- प्रिया का बेटा अपने माँ को यह कहकर घर से कैसे बहार निकलता है कि आपकी वजह से मेरी गृहस्थी अच्छी नहीं चल रही है। कहीं आप क्यों नहीं चली जाती है। प्राचीन काल से ही बुर्जुग माता पिता को सहारा होता है। बेटे ने घर से बहार निकलने के बात बूजूर्ग माता-पिता के सामने एक सहारा होता है। वह बेटी भी आधुनिक युग में अपनी माता-पिता को उतना मान सम्मान नहीं दे रही है। इसका उदाहरण हम देख सकते हैं कि "अरे माँ तुम यहाँ कैसे मैं ही आती मेरा दिल ढातक से बैठ गया बड़े अरमान और उम्मीद से बेटी के पास आई थी। सोचा बेटे ने ठुकरा दिया तो क्या हुआ बेटी तो मैं का दर्द पहचान पाएगी।"[15]

आज के वर्तमान दौर में माता-पिता का युवा वर्ग, वृद्धों का बोझ नहीं समझ पा रहे हैं। उन्हें अपने ही घर में अकेला या बहिष्कृत जीवन के लिए मजबूर किया जाता है। बेटेने घर से बाहर निकालने के बाद बड़ी उम्मीद और अरमान से अपने बेटी के पास रहने के लिए आती है। लेकिन बेटी भी उसे सिद्धार्थ को पहचान नहीं पाती है। वह उलट यह भी कहती है कि आप यहाँ क्यों आई है। मैं खुद वहाँ आ जाती आपने तकलीफ क्यों उठाई।बेटा हो या बेटी वह अपने माता-पिता की तकलिफ़

नहीं समझ पा रहा है। उन्हें अपने जीवन में जीने के लिए अस्तित्व खड़ा हो रहा है।

प्राचीन काल से हम देख सकते हैं कि जो परिवार का मुखिया होता हैं वह पूरे परिवार को सुरक्षित रखने का ध्यान रखना है। परिवार में होकर भी उसके अस्तितत्व के बारे में कोई भी नहीं सोचता है। इसका उदाहरण हम ‘रिश्तों की आँच’ उपन्यास में देख सकते हैं। "मैं सब जानती हूँ, तू ऑफिस का बहाना कर पार्ट टाईम काम कर रहा है। अगर मैं आप यहीं समझते हैं कि देरी से आने का बहाना भर कर रहा है।”[16] इससे हमें पता चलता है कि जो परिवार का मुखिया होता है वह अपने परिवार की इच्छा पूर्ण करने के लिए पार्ट टाइम नौकरी तक करता है लेकिन परिवार को इसका पता भी नहीं चलने देता है वह अपने परिवार के आगे अपने अस्तित्व को की पहचान नहीं करता है। लेकिन आधुनिक युग में बच्चे अपने माता-पिता की दर्द नहीं समज रहे हैं। इस का परिणाम वृध्दों पर दिखाई देता। दो पीढ़ी में वैचारिक भीन्नता होने के कारण आज का युवा वर्ग वृध्दो के विचार ग्रहण नही कर रहे है। आज के आधुनिक युग में दो पीढ़ीयो के बीच परिवर्तन होता दिखाई देताहै।

3.4 आधुनिक एवं परपरागत मूल्यों में गतिरोध

भारतीय समाज में परिवर्तन आने के कारण इसका परिणाम वृद्धों पर दिखाई देता हैं। आधुनिक के कारण वृद्ध को अनेक समस्याओं का सामान करना पड़ता है। आधुनिकता के कारण युवा पीढ़ी इतनी व्यस्त हो गई है कि आज बुजुर्ग के साथ हात करना उन्हें समय बरबाद लगाता

हैं। यूवा वर्ग नौकरी प्राप्त करने के लिए घर से बाहर निकलते हैं तो घर वापस नहीं लौटते है। वे अपने को असहाय और मजबूत समझते है। नगरीकरण के कारण व्यवसाय की बहुलता ही नहीं, आचार, परम्परा, प्रथा, रीति-नीति की विविधता बढ़ती जाती है। परम्परागत मूल्य बदलते हैं और नये सामाजिक आदर्श स्थापित होते हैं। जिसको वृध्दजन ग्रहण नहीं कर पाते हैं। वृद्धजनों को यह महसूस होने लगता है कि उनके मान-सम्मान में कमी आ रही है। यही से हीनता और व्यर्थतता का बोझ उनके मन पर छा जाता है। शहरो में एकल परिवार, सीमित आने वृद्धजनों की समस्याएं को अधिक बढ़ा रही है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत समाज परंपरा विचारों से निकलकर आधुनिक और वैज्ञानिक विकास की ओर बढ़ता है। आज शहरों के लोग तो आधुनिकता की आंधी में फंसे हुये हैं ही गाँवों के लोग भी इसकी परिधि में आ गये हैं। अब एकाकी परिवार आधुनिकी स्वेच्छाचारी जीवन बिताने की इच्छा रखते हैं। वृद्धजनों के परम्परावादी विचार आज युवा पीढ़ी को आधुनिक जीवनशैली अपनाने के मार्ग पर बाधा समझ रहे हैं।

प्रारंभिक अवस्था में मनुष्य के पास आधुनिक साधन नहीं थे। धीरे-धीरे इसका प्रांरभ होने लगा। नए-नए मशीनों पर आधारित कल-कारखानों उद्‌घाटन होने लगा। लोग काम -धंधे की तलाश में लोग गाँव से शहर की ओर पलायन होने लगे। आज की यांत्रिक औद्योगीक सभ्यता को नगरीकरणं तथा नगर सभ्यता का पर्याय कहा जा सकता है। दोनों एक -दूसरे के कार्य भी हैं और परिणति भी मनुष्य को उचित-अनुचित का ज्ञान व्यक्ति को परंपरा से मिलता है। परंतु आज नगरों में धार्मिक भावना और परंपरा नष्ट होती जा रही हैं। प्राचीन रूढ़ी परंपराएँ और मान्यताओं

से दूर जा रहा है। आज भी भारत की अधिकतर जनसंख्या गाँवों मे निवास करती है| लेकिन अब धीरे-धीरे ग्रामीण जनसांख्या का बहुत बडा हीस्सा शहरों की तरफ आकर्षक हो रही हैं। आज के वर्तमान परिवेश में ग्रामीण प्रवृति धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है और गाँवों में भी शहरों सा वातावरण उत्पन्न होता जा रहा है| ग्रामीणों का साधा व शुद्ध जीवन समाप्त हो रहा है। इसका उदाहरण हम 'नियती चक्र' में देखते हैं। इस उपन्यास में नायक की एक डॉक्टर के रूप में पहली पोस्टिंग अमरपुर गाँव में होती है। गाँव के नाम के अनुरूप ही पहले वहाँ लोग सौ की उम्र से भी अधिक जीवन जीते थे, लेकिन अब ऐसा नहीं है। जिसका कारण डॉक्टर बताता है- "इसका सबसे बड़ा कारण था स्वच्छ और शुद्ध वातावरण, व्यवस्थित दिनचर्या एवं उचित खान-पान, लेकिन जैसे-जैसे शहरों की हवा गाँवों की ओर बहने लगी तमाम कोशिशों के बावजूद सुखद स्वास्थ्य एक चुनौती सा बन गया |"[20] गाँवों में विकास के लिए सभी सरकारी योजनाओं को मूर्त रूप देने का जिम्मा पंचायत का कर्तव्य है |लेकिन आजकल पंचायत में सरपंच और बाकी लोग अपना पेट भरने में लगे रहते हैं। गाँव के विकास के लिए उसका कोई ध्यान नही दिया जाता। गाँव का प्राकृतिक आपदा को नष्ट किया जाता है। इसके कारण मनूष्य के स्वास्थ्य में बदलाव आने लगा। जिस के कारण गाँवों का वातावरण बिगड़ जाता है।

भारतीय संस्कृति के अनूसार देखा जाए तो गाँव भोलेपन, सच्चाई, नैतिकता, सद्भावना के प्रतीक होत हैं| जहाँ केवल निस्वार्थ सहयोग और वास्तविक भावनाओं की प्रधानता होती है,परंतु समकालीन शताब्दी में यह

सब लुप्त होता जा रहा है| डॉ. प्रेम कुमार के अनुसार - “औद्योगिकरण और नगरीकरण की उपलब्धियों के साथ-साथ उनकी विकृतियाँ भी गाँव और कस्बे के जीवन में घर कर गयी | पुरानेपन और नएपन के संघर्ष में ग्रामीण पिस रहा है| वहाँ टूटन की प्रक्रिया जोरों पर है|”[21] गाँव में औद्योगिकरण और नगरीकरण आने के कारण गाँव के घरो- घरों में परिवर्तन दिखाई देता है। औद्योगिकरण के कारण नई टकनीक अविशका आने के कारण इसका परिणाम वृद्धों पर दिखाई देता हैं। क्योंकि कि बूजूर्ग नएपन को ग्रहण नहीं कर पाते हैं। वह अपने पुराने परंपरा, संस्कार को भूलकर, आधुनिकता को ग्रहण नहीं कर पा रहे। इसलिए समाज में वृद्ध व्यक्ति पुरानेपन और नएपन के बीच ग्रस्तता जा रहा है।

भूमंडलीकरण के कारण शहर के साथ गाँव में परिवर्तन दिखाई देता है। जो गाँव के रिती, परंपरा आज ओद्योगिकरण के कारण नष्ट होते दिखाई देते है ‘वसीयत’ उपन्यास का नायक विश्वनाथ पढ़ाई के लिए गाँव से शहर आता है और शहर की चकाचौंध भरी जिंदगी में वह कब अपनी मिट्टी से दूर हो गया उसे पता ही नही “गाँव की मिट्टी की सोंधी सुगंध, कोयल की कूक, नोहल्ले से पानी लाती महिलाओं की कतारें, आँगन के बाहर से आते-जाते प्रदोष और उषाकाल में बैलों के गले में बंधी घंटियों से आती मधुर ध्वनि.... प्रातः काल उठते ही कैलाश पर्वत के दर्शन....स्वर्ग की अप्सराओं के आगमन की प्रतीक्षा में बर्फ की चादर का बिछौना,...।”[21] लेकिन गाँवों का यह शांत और मनोरम वातावरण अब आधुनिकता और भौतिकता बदल गया था। आधुनिकरण के कारण सब कुछ बदल रहा

था। गाँव में शांत वातावरण, शुद्ध हवा का स्थान, भूमंडलीकरण ने लिया है। वर्तमान परिवेश में ग्रामीण प्रकृति धीरे- धीरे नष्ट हो रही है।

आज के वर्तमान परिवेश में ग्रामीण प्रवृति धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है और गाँवों में भी शहरों सा वातावरण उत्पन्न होता जा रहा है | ग्रामीणों का साधा व शुद्ध जीवन समाप्त हो रहा है। 'नियति चक्र' उपन्यास में नायक की एक डॉक्टर के रूप में पहली पोस्टिंग अमरपुर गाँव में होती है। गाँव के नाम के अनुरूप ही पहले वहाँ लोग सौ की उम्र से भी अधिक जीवन जीते थे, लेकिन अब ऐसा नहीं है। जिसका कारण डॉक्टर बताता है- "इसका सबसे बड़ा कारण था स्वच्छ और शुद्ध वातावरण, व्यवस्थित दिनचर्या एवं उचित खान-पान, लेकिन जैसे-जैसे शहरों की हवा गाँवों की ओर बहने लगी तमाम कोशिशों के बावजूद सुखद स्वास्थ्य एक चुनौती सा बन गया |"[22] गाँवों में विकास के लिए सभी सरकारी योजनाओं को मूर्त रूप देने का जिम्मा पंचायत का कर्तव्य है। लेकिन आजकल पंचायत में सरपंच और बाकी लोग अपना पेट भरने में लगे रहते हैं। गाँव के विकास के लिए उसका कोई ध्यान नहीं दिया जाता। गाँव का प्राकृतिक आपदा को नष्ट किया जाता है। इसके कारण मनूष्य के स्वास्थ्य में बदलाव आने लगा और यही कारण गाँवों का वातावरण बिगड़ जाता है।

भारतीय समाज में तिज-त्योहार का अलग ही महत्व होता है। इन त्यौहारों के पीछे पौराणिक कथाएँ और वैज्ञानिक कारण होते हैं। त्यौहार पर नई चीजें खरीदना, खाने की चीजें बनाना आदि है। त्यौहार पर लोक एकत्र

आते है और आदान-प्रदान होता है। दिपावली,संक्रान्ति,रक्षाबंधन आदि धूम-धाम से बनाया जाता है। पंरतु आधुनिक के कारण युवा वर्ग अपनी परंपरा, संस्कृति, रिती- रिवाज को भूलते जा रहे हैं। इसकी चर्चा हम 'वसीयत' उपन्यास में मिलती हैं :- उपन्यास का नायक विश्वनाथ चाहता है कि उनका बेटा राजकुमार और बहू त्यौहार पर घर आकर एक साथ मनाऐ। राजकुमार को फोन करने पर वह कहता है कि:-"रात का यह वक्त कोई फ़ोन करने का होता है भला, मेरा आना नहीं हो पाएगा। त्यौहार तो आते रहते हैं मैं फिर कभी देखूँगा।"[23]

इसे हमें पता चलता है कि आज के युवा के पास त्यौहार को महत्व देने के लिए समय नहीं है। प्रत्येक माँ-बाप नहीं चाहते कि उनके बच्चे तीज, त्यौहार, सूख-दूख में उनके साथ रहें। माँ-बाप अपनी महत्वकांक्षाओं को बच्चों पर इस कदर थोप देते हैं कि अपने पराए के सूख-दूख में शरिफ होना, संस्कृति के रंगों में रंग जाना उनको जैसे समय की बर्बाद लगने लगती है, यह सब उनको पुरातन वादी विचारधारा लगती है।

प्रांरभिक काल में तीज-त्यौहार बड़े धूम धाम से मनाऐ जाते है। प्रत्येक रिती रिवाज को मान सम्मान दिया जाता था। पंरतू आज के वर्तमान दौर में त्यौहार मात्र औपचारिक से मनाने में सिमित रह गए हैं। इसका उदाहरण 'रिश्तों की आँच' उपन्यास में मिलता हैं:-"तीज-त्यौहार पर माँ इन्तजार करती रहती। कभी- कभी रक्षाबंधन के अवसर पर ममता आती भी तो बस औपचारिकता पूरी करने।"[24] आज वर्तमान समय में रिश्तों में

उतना मान सम्मान नही दिखाई देता है। सिर्फ औपचारिकता निभाने के कारण ही त्यौहार मनाऐ जाते हैं।

प्रांभिक काल में जो घर में खाने की जरूरती चीजें जैसे सब्जी एक सप्ताह की एक साथ लाई जाती थी। परंतु आधूनिक काल में ताजी सब्जी हर दिन घर में सब्जी वाला लेकर आता हैं। पर बच्चों को सब्जी मंडी से लाना पसंद नहीं आता है। इसका उदाहरण हम रिश्तों की आँच उपन्यास में देख सकते हैं।

"माँ! पापा को बोलिये सब्जी मण्डी से न लाया करें। सब्जी समय पर न लाने सें हमें समय पर खाना नहीं मिल पाता। जब यहीं मोहल्ले में सब्जी लेते हैं तो हम भला क्यों नहीं खरीद सकते। आज जमाना बदल चूका है। आधूनिकता में जीना पड़ेगा।"[25]

आज जिस तरह से समाज में परिवर्तन हो रहा है। मनुष्य उसी तरह अपने दिनचर्या को बदल देते हैं। बच्चों को पंरपरागत काम पसंद नहीं है। आधुनिक के साथ घर में परिवर्तन लाना चाहते हैं।

3.5 जीवन में पाश्चतिकरण का प्रभाव

आज के वर्तमान समय में युवा पीढ़ी भारतीय संस्कृति, परंपरा को भूलकर पाश्चात्य संस्कृति को अपना रहे हैं। पश्चिमीकरण ने युवा पीढ़ी के रीति-रिवाज तौर-तरीकों, उनके खाने-पीने का ढंग, फैशन, वेशभूषा आदि को अत्यधिक प्रभावित किया है। यह सब पुरानी पीढ़ी को पसंद नहीं आता है जिससे नई पीढ़ी आज वृद्धजनों के लिये समस्या का कारण बन गई

है। युवा वर्ग पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करता रहा है। गाँव-कस्बे से आए लोगों की एक अलग ही संस्कृति है। कस्बाई मानसिकता लिए हुए लोग न अपने पुराने संस्कार छोड़ पाते हैं, न ही नए अपना सकते हैं। पुराना और नया के बीच संघर्ष चलता है। डॉ. अशोक जेरथ लिखते हैं, "जो लोग कस्बों, उपनगरों और नगरों से होते हुए महानगरों में प्रवेश कर जाते हैं, वे अक्सर गाँव के रीति-रिवाज, अनुष्ठान, लोक-व्यवहार, खान-पान, सोच, रिश्ते-नातों का मेल, गंवई वातावरण आदि भूलकर नगरीय परिवेश में गुम हो जाते हैं। अक्सर उनकी वैचारिकता और कस्बाई सोच के मेल से नई वैचारिकता का सृजन भी संभव हो जाता है।"[27] पाश्चात्य तथा गाँव और नगर संस्कृति के मिश्रण से उपजी एक नई संस्कृति के कारण आज नगरों का रूप ही बदल गया है।नगरों की उपभोगवादी संस्कृति में घर-परिवार, विवाह, संस्कार में पाश्चात्यों का अंधानुकरण कर रहे हैं। पाश्चात्य संस्कृति का दुष्परिणाम भारतीय युवा पीढ़ी के अपने माता-पिता के साथ कटु एवं तनावपूर्ण संबंधों के रूप में हमारे सामने आ रहा है | व्यक्तिवादी सोच में बदलाव के कारण युवा संवेदनहीन हो गई हैं। वर्तमान पीढ़ी स्वतंत्र रहकर आगे बढ़ना चाहती है। वे माता-पिता द्वारा उनके लिए किए गए त्याग को भूल जाते हैं। अपने जीवन में माता पिता का साथ उन्हें नहीं चाहिए होता। रविंद्र नाथ मुखर्जी ने भी इस सत्य को उद्घाटित करते हुए कहते है कि:- "परिवार में बच्चे के लिए किस समय क्या और -कितना त्याग करना पड़ेगा, उसकी कोई सीमा नहीं रहती। जबकि बच्चे इतने भावनाशून्य हो जाते हैं

कि वे विवाह जैसे निर्णय भी स्वयं ही ले लेते हैं। यहाँ तक की माता-पिता को सूचित करना भी जरूरी नहीं समझते कि वे विवाह कर रहे हैं।

अपने जीवन का अमूल्य निर्णय में माता- पिता को शामिल करना जरूरी नहीं समझते है। इस का उदाहरण हम 'वसीयत' उपन्यास में देख सकते हैं।'वसीयत' में विश्वनाथ जब विवाह के कार्ड पर अपने माता-पिता का नाम नहीं छपवाता तो उस की होने वाली पत्नी सुधा उससे इस बारे में बहस करती है। लेकिन वह तर्क करता हुआ कहता है "हम आधुनिक युग में जी रहे हैं, इंसान को अपना सफर खुद तय करना पड़ता है। फिर भला पुरानी वैशाखियों के सहारे क्यों चला जाए ?"[28] आज का यूवा वर्ग पाश्चात्य संस्कृति ग्रहण कर रहे है। विवाह के कार्ड पर माता पिता का नाम छपवाना भी जरूरी नहीं समझ ता हैं। आधुनिक युग में जिने के कारण पुरानी परंपरा को नहीं मान रहे हैं।

भारतीय संस्कृति में शादी विवाह बड़े धूमधाम से मनाई जाती है। सब परिवार, मित्र ,गाँव, शहर के लोगों को आमंत्रित किया जाता है। आज के वर्तमान युग में युवा पाश्चात्य संस्कृति ग्रहण करने के अपने माता-पिता के सूचित किए बिना विवाह कर लेता है। पाश्चात्य संस्कृति ग्रहण करने के कारण जब भारतीय संस्कृति में शादी में इतना खर्चा होता है वह पाश्चात्य संस्कृति में नहीं होता है। इसका उदाहरण उपन्यास वसीयत के नायक राजकुमार के माध्यम से देख सकते है। "हाँ पापा आपको बताना भूल गया कि मैं ने विदेश में शादी करली लिई है। यहाँ की तरह वहाँ फिरजूल खर्च नहीं होता है।"[29] आज की आधुनिक युग में पाश्चात्य

संस्कृति ग्रहण करने के कारण कोर्ट मैरिज में ही विवाह किया जाता है। इसलिए इतना खर्च भी नहीं आता है। इतना ही नहीं कि अपने माता-पिता और परिवार का कोई सदस्य वहाँ पर मौजूद रहने की जरूरत भी नहीं होती है। आधुनिक युग में युवा वर्ग अपने खुद के निर्णय खुद ही देते हुए हमें दिखाई देते हैं।

इस वर्तमान युग में पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव के कारण महत्वाकांक्षाओं की अंधी दौड़ भारत के युवाओं को भी प्रभावित कर रही है। हमारे युवा वर्ग में से जो बच्चे विदेशों में पढ़-लिखकर भारत आते हैं, वे विदेशी संस्कृति के रंग में ही रंग जाते हैं । वे अपनी परंपराओं का विरोध करने लगते हैं। उनमें पैसों की भूखी इतनी बढ़ जाती है कि इसके लिए वे अपने माता-पिता की भावनाओं को आहत करने से भी पीछे नहीं हटते। 'नियति चक्र' में सेठ नितिन घोष अपनी पूरी संपत्ति बेटे के नाम कर चुके हैं। लेकिन बेटे को लगता है कि पिता का उदार स्वभाव एक दिन उनकी संपत्ति को नष्ट कर देगा| जब उसके पिता से अनाथालय के व्यवस्थापक पैसे की असमर्थता के बारे में बताते हैं, तो सेठ जी उन्हें पैसे देने के लिए अपने बेटे को कहते हैं, लेकिन बेटा कहता "इसी तरह दान करते रहे तो हम खुद - कंगाल हो जाएंगे |"[30] कह कर पैसे देने से मना कर देता है। वह पिता जिसने जिंदगी भर दूसरों की सेवा और परोपकार में अपना जीवन बिताया हो, इस अपमान को सहन नहीं कर पाता और बिस्तर पकड़ लेता है। कुछ बच्चे ऐसे भी हैं जो माता-पिता के स्नेहा, प्रेम को हमेशा के लिए विदेशी धरती पर बसने के लिए चले जाते हैं। जिनको अपने सपने पूरे करने के लिए आकाश में उड़ना

सिखाया था, वे अपना घोंसला खुद बनाते है| इस में अपने माता-पिता को भी शामिल नहीं किया जाता है समाज में परिवर्तन आने के कारण युवा वर्ग पश्यात्य संस्कृति को अपना रहे है। आज के वर्तमान युग मे युवा अपने आप को स्वतत्र जीवन जीना चाहते है। युवा वर्ग भारतीय संस्कृति को भूल कर पश्यात्य संस्कृति की ओर आकर्षित हो रहे है।

3.6 सोच का स्व केंद्री होना

प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति के अनुसार माता-पिता को उच्च स्थान दिया जाता था।पंरतू धीरे- धीरे भूमंडलीकरण औद्योगीकरण के कारण समाज में युवा के सोच में परिवर्तन होने लगा।इस तरह व्यक्ति अपने अस्तित्व को बनाने के लिए स्वा केंद्रित होता है। आदर्श माता-पिता के प्रति भावना लूप्त होती दिखाई दे रहीं हैं।अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए दिन रात मेहनत करते हैं। पर अपने माता-पिता के कर्तव्य को भूलते जा रहे हैं। भुमंडलीकरण के कारण युवा वर्ग का परंपरा, संस्कृति, मानवीय मूल्य को भूलता जा रहे हैं। समाज में नैतिक मूल्यों युवा वर्ग में हमें कभी नजर आते हैं।

परिवार का मुखिया परिवार को सुरक्षित रखने के लिए दिन रात मेहनत करता है पर अंत में हम जब उसकी मेहनत कोई नहीं देखते है और उसमें कमियाँ निकाले हैइसका उदाहरण हम ‘नियति चक्र’ उपन्यास में देख सकते हैं:- राम प्रसाद अपने बहन की शादी के लिए दिन रात मेहनत करके दहेज के पैसे जमा कर लेता है। शादी कोई कमी नहीं है

पहनी चाहिए इसीलिए बाद खर्च करता है। पर बहन उसे रहती है कि क्या भैया इतना खर्चा किया आई है तो एक और कार देते तो कितना अच्छा होता। वह अपने भाई की मेहनत, दर्द को समझ नहीं पा रही है। रामप्रसाद कहता है बड़ी विचित्र विडम्बना है, कई बार इंसान जिनके लिए अपना सर्वस्व दाव पर लगा देता है । यहाँ तक की अपना समय, आराम पैसा सब कुछ दूसरों के लिए खुशियाँ बटोरने में लगा देता है।सामने वाला यदि इसका मूल न समझे तो दिल को बहुत दुख होता है।"[32]

आधुनिक युग के बच्चों की माँग समय पर पूरी नहीं की जाऐ तो वह पिता की परिस्थितियों से समझोता नहीं करते हैं। क्योंकि की वर्तमान यूग में बच्चों को सूख सूविद्या उपलब्ध होती हैं बीना मेहनत परिश्रम कीये प्राप्त होती है। एक उम्र होती है जब विपीन और रश्मी अपने पिता से मोटरसाइकिल की माँग करती है तो रामप्रसाद के मन में सवाल आता है कि इतने पैसे का इंतजाम कहाँ से करूं। रामप्रसाद सोचने लगा कि :-" बच्चे ठीक ही तो कहते हैं एक उम्र होती है शौक पूरा करने की फिर अपनी माँग के बारे में मुझसे न कहेंगे तो भला किससे कहेंगे।"[30]

आज के भुमंडलीकरण के बदलाव के करण सबसे बड़ा परिणाम वृद्ध पर पड़ा दिखाई देता है। आज का युवा वर्ग अपने माता-पिता के साथ त्योहार मनाया नहीं चाहते हैं। बूजूर्ग व्यक्ति आसपास के बच्चों को देखकर ही अपने पोते बेटे को याद कर ही आनंद लेते हैं। इसी का उदाहरण हम वसीयत अपन्यास में देख सकते हैं:- इंसानकी तुलना पतंग से करता है। "देखो सुधा वह पतंग देर तक इधर-उधर झुलाती हुई

किसी के हाथ न आ सकी और नीम के पेड़ पर आकर लटक गई है।“[31]

वर्तमान समय में इंसान की हालात भी इसी पतंग की तरह होती है। जब तक हम अपनी जमीन से जुड़े रहते हैं।उन्मुक्त आकाश में विचरण करते रहते हैं, ऐसे में गिरने या डुबने का भर नहीं राहटा है हमें यह विश्वास राहता है की हमारा कोई अपना गिनने से पहले ही थाम लेगा। यदी हम जमीन रूपी डोरी से कर जाते हैं तो नियती उस कटी पतंग की तरह हो जाया करती है जो कटने के बाद अलग-थलग पड़ जाती है। बुजुर्ग गो को अंतिम समय में अपने परिवार को ही साथ चाहीई होता है पर वर्टमैन के दौर में बच्चे अपने वृद्ध माता-पिता को अकेले में छोड़कर अपने स्वप्न को पूर्ण करने के लिए विदेश या शहर जाकर बजते हैं। अपने माता-पिता से सो स्वाकेंद्रित नहीं होतेदिखाई देता है।

3.7 एकल परिवार का चलन

संयुक्त परिवार एक ऐसा गृहस्थ समूह है। जिसमें तीन या उससे अधिक पीढ़ी के सदस्य रहते हैं। जबकि एकल परिवार में दो पीढ़ियों के सदस्य ही होते हैं। अर्थात केवल माता-पिता और उनके बच्चे ।प्राचीन काल में हमारे समाज में वृद्धाश्रम जैसी व्यवस्थाएँ नहीं थी। संयुक्त परिवार में सब एक साथ हँसी खुशी जीवन व्यतीत करते थे। आज के दौर में संयुक्त परिवार का जगह एकल परिवार ने ले लिया है जहाँ वृद्ध माता पिता के लिए एक कोना भी नहीं बचा है। प्राचीन काल में माता पिता को अलग रखने के बारें में सोचना भी पाप समझा जाता था। बल्कि स्वयं पुत्र ही

माता पिता की बात सुनकर अलग से अपनी इच्छा धारण नहीं कर लेता था। माता पिता का सम्मान रखता था।

इसमें घर के सबसे बड़े या वृद्ध सदस्य को घर का मुखिया बनाया जाता था और उनके द्वारा ही घर के कार्यों का निर्देशन व संचालन होता था। परिवार के मुखिया का सभी सम्मान करते थे, लेकिन वर्तमान भारतीय परिस्थितियों में संयुक्त परिवार कठिन परिस्थितियों से गुजर रहा है, उसमें अनेक परिवर्तन हो रहे हैं । नगरीकरण, औद्योगिकरण, पश्चिमीकरण जैसी प्रक्रियाओं ने संयुक्त परिवार की संरचना को बहुत प्रभावित किया है, इसी के कारण आज संयुक्तपरिवार का स्थान एकल परिवार ले रहे हैं। परिवारों में होते इन्हीं परिवर्तनों को पारिवारिक विघटन कहा जाता है। जहाँ संयुक्त परिवार एकल परिवारों में विभाजित हो जाता है। इस का उदाहरण वापसी कहानी मेंउषा प्रियम्बदा की "वापसी" कहानी एक प्रकार से विडम्बना संयूक्त परिवार की कहानी है। इसमें विघटन का प्रभाव इतना तीखा और गहरा है कि उससे क्षुब्ध होकर स्वयं परिवार का मुखिया घर छोड़ने को विवश होता है। कहानी में गजाधर बाबू अपनी नौकरी से रिटायर होकर बड़ी लालसा और आशा के साथ पत्नी और बच्चों के साथ रहने आते हैं, पर शीघ्र हो उन्हें पता चल जाता है कि वे परिवार में फालतू हो गए है- "उनकी उपस्थिति उस घर में ऐसी असंगत लगने लगी थी, जैसे सजी हुई बैठक में उनकी चारपाई थी।"[32] बाद में गजाधर बाबू एक दूसरी नौकरी ढूंढ़ लेते हैं, तो उन्हें पता लगता है कि संयुक्त परिवार और सन्तान के मोह में स्वयं उनकी पत्नी तक उनके लिए अजनबी और पराई हो चुकी है।

बच्चे पढ़ लिखकर अच्छी नौकरी प्राप्त करने के बाद अपनी संयुक्त परिवार में नहीं रहना चाहते हैं। वह एकल परिवार में ही रहना पसंद करते हैं। इसका उदाहरण 'रिश्तों की आँच'उपन्यास में देख सकते हैं:- रामप्रसाद ने अपने भाई रमेश को कठिन परिश्रम के बाद डॉक्टर बनाया। जब वह खूद अपने पैरों पर खड़ा होता है। तो अपनी गृहस्थी अलग से बना लेता है। रमेश कहती है-"अगले पाँच दिन बाद हमारी शादी है। मैं कल सूबह ही नए मकान में शिफ्ट हो जाऊँगा। आप शादी में जरूर आना।"[33] आज का युवा वर्ग संयूक्त परिवार में रहना पसंद नहीं करता है। संयुक्त परिवार का विघटन होने के कारण रिश्तों में दूरियाँ दिखाई देती है। जहाँ अपना ही अपने परिवार से वार्तालाप नहीं कर रहा। आज का युवा वर्ग परिवार में रहना ही पसंद करते हैं।

समाज का युवाओं वर्ग शिक्षा या नौकरी प्राप्त करने के लिए शहरों या विदेशों में चले जाते है, तो वे कभी वापस घर नहीं लौटते। वे वही अपना छोटासा परिवार बसा लेते हैं। जिसमें वे स्वयं, पत्नी और बच्चे रहते हैं। इसका उदाहरण हम 'वसीयत' उपन्यास में इस प्रकार देख सकते हैं। उपन्यास का नायक राजकुमार अपने माता-पिता से रहता है। उनके पिताजी के अपने पोते को सूरत देखने के लिए तरस जाते हैं। "बेटा तेरा पापा की बड़ी इच्छा हो रही है कि अपने पोते के साथ कुछ दिन समय गुजरें, तुम लोग कुछ दिन के लिए आज तो अच्छा रहता ह।"[34] संयुक्त परिवार में सब परिवार के सदस्य एक साथ रहते थे दादी नानी अपने पोतो के साथ समय गुजरते थे। लेकिन आधुनिक युग में सब कुछ बदल रहा है ,यूवा वर्ग अपने बच्चों को संयुक्त परिवार से एकल

में रहते हैं। जोर बुजुर्गो अपने पोते के साथ खेलने के लिए तरस जाते हैं। यूवा वर्ग को एकल परिवार में रहना पसंद करता है।

डॉ.सूरज सिंह नेगी नेउपन्यासों में विमर्श को व्यक्त किया गया है। उनके उपन्यासों में वृध्दों के स्थिती का चित्रण दिखाई देता है। भूमंडलीकरण के कारण समाज में परिवर्तन आने के कारण इसका परिणाम वृध्दों के जीवन पर पड़ता है। आज का युवा वर्ग नैतिक मूल्य, रिती रिवाज, परंपरा, रिश्तों की मर्यादा को भूलकर आधूनिक युग को अपना रहा है। इनके उपन्यासों के केंद्र में मूल्य परोपकार, संवेदनशीलता आधुनिक और पुरानी पीढ़ीयों का व्दंद प्रमुख रहा है।

संदर्भ सूची

1. डॉ.बाहरीहरदेव, लोकभारतीराजभाषाशब्दकोशहिंदीअंग्रेजी,
2. लोकभारतीप्रकाशन, पृ. सं- 466
3. फादरकामिलबुल्के, अंग्रेजी- हिंदीकोष, एस.
4. चन्दएण्डकंपनीप्रा.लिनईदिल्ली, पृ. -433
5. चंद्रमौलेश्वरप्रसाद, वृध्दावस्थाविमर्शपरिवेशप्रकाशन, सं- 2016, पृ.- 20
6. मुद्रगलचित्रा, गिलिगन, सामायिकप्रकाशन, नईदिल्ली, पृ.39
7. सिंहकाशीनाथ, रेहनपररग्घू, राजकमलप्रकाशन
8. कालियाममता, दौड़, वाणीप्रकाशन, नईदिल्ली, सं 2000,पृ.
9. डॉ.नेगीसिंहसूरज, रिश्तोंकीआँच, हेरिटेजपब्लिकेशन, जयपुर, सं 2023,पृ. 110
10. डॉ. नेगीसिंहसूरज, नियतिचक्र, सनातनप्रकाशन, जयपुर, पृ.122
11. वहींपृ.123
12. डॉ.नेगीसिंहसूरज, वसीयत, साहित्यगारप्रकाशन, 2018, पृ. 28 वहीं, पृ.44
13. डॉ. नेगीसिंहसूरज, रिश्तोंकीआँच, हेरिटेजपब्लिकेशन, 2016, पृ.43
14. वहीं, पृ.55
15. डॉ.नेगी सिंह सूरज, वसीयत, साहित्यगार प्रकाशन, 2018, पृ.98
16. डॉ. नेगीसिंहसूरज, रिश्तोंकीआँच, हेरिटेजपब्लिकेशन, 2016, पृ.59

17. डॉ. नेगी सिंह सूरज, नियति चक्र, सनातनप्रकाशन, जयपुर, पृ.25
18. डॉ.नेगी सिंह सूरज, वसीयत, साहित्यगारप्रकाशन, 2018, पृ. 143
19. डॉ. नेगी सिंह सूरज, रिश्तोंकीआँच, हेरिटेजपब्लिकेशन, 2016, पृ.70
20. डॉ. नेगी सिंह सूरज, नियति चक्र, सनातनप्रकाशन, जयपुर 2019, पृ.25
21. डॉ.नेगी सिंह सूरज, नियति चक्र, सनातनप्रकाशन 2019 ,पृ25
22. डॉ.नेगी सिंह सूरज, वसीयत, साहित्यगारप्रकाशन, 2018, पृ.31
23. वहीं, पृ,. 64
24. डॉ. नेगीसिंहसूरज, रिश्तोंकीआँच, हेरिटेजपब्लिकेशन, 2016, पृ.61
25. वहीं, पृ.85
26. डॉ.जेरथअशोक , ओमप्रकाशवर्मा, संस्कृतिकपरिदृश्यकल्पनासं 2012,पृ.169
27. डॉ.नेगीसिंहसूरज, वसीयत, साहित्यगारप्रकाशन, 2018, पृ. 137
28. वहीं, पृ.44
29. कालियाममता, दौड़, वाणीप्रकाशन, नईदिल्ली, सं 2000 पृ.9
30. डॉ. नेगी सिंह सूरज, नियति चक्र, सनातन प्रकाशन, जयपुर 2019, पृ. 49
31. वहीं, पृ–66

32. डॉ.नेगी सिंह सूरज, वसीयत, साहित्यगार प्रकाशन, 2018, पृ.86

33. डॉ. नेगी सिंह सूरज, रिश्तों की आँच, हेरिटेज पब्लिकेशन, 2016, पृ.

34. डॉ.बाचुळकर अशोक, हिंदी उपन्यासों में महानगरीय अवबोध, श्रूति पब्लिकेशन, सं.2006

भाष और शैली

4.1 भाषा

भाषा अभिव्यक्ति का सर्वात्तम साधन है। भाषा को मानव की भावभिव्यक्ति का प्रमुख साधन माना गया है। यह वह साधन है जिसके व्दारा हम अपने भावों को दूसरों के सामने प्रकट करते हैं। व्यक्ति के मन में समय-समय पर जो भाव, विचार, अनुभूतियाँ उत्पन होती है। वह अपनी भाषा के द्वारा लिखकर, बोलकर या हाव भाव या संकेतों के माध्यम से दूसरों पर प्रकट करता है। यह संकेत हाथ- पैर, आँखों, या मुँख से किसी विशेष प्रकार की आकृति बनाकर दूसरों तक पहुँचाने का काम भाषा कहती हैं।

डॉ. भोलानाथ तिवारी:- "भाषी उच्चारण-अवयवों से उच्चारित मूलतः प्रायः यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा किसी समाज के लोग आपस में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं ।"[1]

श्याम सुंदर दास के अनुसार:- भाषा को शैली का मूलाधार मानते हुऐ कहते हैं। "भाषा ऐसे शब्द समूहों का नाम है जो एक विशेष क्रम से व्यवस्थत होकर हमारे मन की बात दूसरों के मन तक पहुँचाते तथा उसके द्वारा उस प्रभावित करने में समर्थ होता हे।"[2]

देवेन्द्रनाथ शर्मा के अनुसार :-"जिसकी सहायता से मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय या सहयोग करते हैं, उस यादृच्छिक रूढ़ ध्वनि-संकेत प्रणाली को भाषा कहते हैं।"[3]

डॉ अंबादास देशमुख के अनुसार :- "मनुष्य अपने विचारों के अभीव्यक्ति के लिए वाणी व्दारा जिन ध्वनि, संकेतों का प्रयोग करता उसे भाषा कहते हैं।"[4]

डॉ. मंगलदेव शास्त्री के अनुसार :- "भाषा उस चेष्टा या व्यापार को कहते हैं जिससे मनुष्य अपने उच्चारणोपयोगी शरीरावयवों से किये गये वर्णात्मक या व्यक्त शब्दों के द्वारा अपने विचारों को प्रकट करता है।"[5]

डॉ. बाबूराम सक्सेना के अनुसार :- "मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान- प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि-संकेतों का जो व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते हैं।"[6]

साहित्य में भाषा का अधिक महत्व हैं। भाषा के बिना साहित्य की कल्पना नहीं की जा सकती। रचनाकार को उसके साहित्य कृति के अंतर्गत जो कुछ भी कहना होता है, वह भाषा के माध्यम से ही कहता है और इसी माध्यम का आश्रय लेकर पाठक रचनाकार के उद्देश्य से अपना अंतरंग स्थापित कर लेता है। सभी रचनाओं में भाषा का रूप एक न होकर भिन्न-भिन्न प्रकार का रहता है। उद्देश्य, कथ्य, वातावरण तथा विषय के अनुसार भाषा का अपना एक स्तर होता है जो रचनाकार की शैली के

अनुरूप व्यक्त होता है। पात्र, वातावरण, देश-काल तथा अपने प्रतिपाद्य के अनुकूल भाषा प्रयोग करती है।

भाषा परंपरागत प्रक्रिया कही जा सकती है, जो एक पीढ़ी की भाषा दूसरी पीढ़ी ग्रहण करती है। लेकिन उसे सीखना पड़ता है। मनुष्य पूर्वजों से चली आ रही भाषा को अपने माता-पिता, परिवार तथा वातावरण के अनुकरण से सीख लेता है। मनुष्य अपनी सुविधानुसार भाषा में थोड़ा बहुत परिवर्तन करता रहता है।

वैदिक संस्कृत से आधुनिक हिंदी बनने के सफर में हिंदी भाषा ने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि रूपों में परिवर्तन और विकास को ग्रहण किया है। संसार में नयी

संस्कृति की लहर आने से जो परिवर्तन होते हैं। उनका प्रभाव भाषा पर भी पड़ता है। किसी भी साहित्य की रचना के लिए भाषा का स्तर अच्छा होना चाहिए। साधारणतः साहित्य की भाषा जन सामान्य के प्रतिदिन निर्वाह की भाषा से अधिक उन्नत होती है, लेकिन भाषा के उन्नत होने के साथ-साथ उसे सहज और प्रवाहमयी भी होना चाहिए, ताकि वह पाठक को प्रभावित कर सके | तथ्य की आवश्यकतानुसार कहीं-कहीं क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है, परंतु जहाँ तक हो सके सहज और सरल भाषा का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

भाषा के संदर्भ में डॉ. सूरज सिंह नेगी के उपन्यासों की भाषागत विशेषताएँ इस
प्रकार हैं:-

4.1.1 आँचलिक भाषा

आंचलिक भाषा से तात्पर्य किसी सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली बोली से है। इसे लोकभाषा भी कहाँ जा सकता है। क्योंकि यह किसी अंचल विशेष में बोली जाती है। नेगी जी के 'वसीयत' उपन्यास में आंचलिकता का प्रयोग किया है | वे उत्तराखंड अँचल से संबंधित हैं, इसलिए उनके पात्रों के संवादों में भी कुमाँऊनी भाषा के प्रयोग ने उनकी रचना को जीवंतता प्रदान कर दी है। इस प्रकार की भाषा के प्रयोग से कुमाऊँ क्षेत्र की संस्कृति तो जीवंत हो उठी है, साथ ही वहाँ की मिट्टी की महक उपन्यास में महसूस होती है।

उपन्यास 'वसीयत' में इस प्रकार के अनेक संदर्भ में देखने के लिए मिलते हैं। 'वसीयत' उपन्यास में जब विश्वनाथ अपने माँ- पिताजी की तस्वीर के सामने खड़े होकर वह अनेक स्मृतियों को बार-बार याद करता है। जब उसे ठंड लगती है तो उस ऐसा महसूस हो रहा है कि उसकी माँ उसे आवाज देती हैं। अपने पास बुलाते हुए कह रही हो, "विश्वा! आप जल्दी से आग ताप ले ठंडा दूर हो जाएगी।"[7] इसे वह यह कह रही है कि जल्दी से आग में सेक ताकि ठंड दू हो जाऐगी।

जब विश्वनाथ अपने माँ- पिताजी की तस्वीर के सामने खड़ा होकर वह कुमाँऊनी भाषा में ही संवाद करता है। "ईजा बाह्य माफ कर दिया।"माँ-बाबूजी माफ कर देना देना।"[8]

इसी प्रकार जब इंसान बड़ा बनने के लिए गांव से शहर में आकर बड़ा इंसान बनकर वह अपने गाँव को पुरी तरह से भूल जाता है। जब गाँव

का विश्वानाथ गाँव से शहर आता है। तो वह फिर गाँव में नहीं जाता है। वह शहर में ही अपना जीवन आगे बढ़ाता है। जब गांव से एक आदमी ऑफिस में आता है। तो वह उनकी कुमाऊँ भाषा में ही वार्तालाप करता है। तो उस पहचान इंनकार कर देता है। तो वह कहता कि:- "अच्छा भुला चलता हूँ हो सके तो तुम्हारे बाज्यू और ईजा के हाथों नाती को आशीष दिला लाना और उस जन्मभूमि के दर्शन भी कर आना जिसे तूम भूल ही गए हो।"[9]

जब विश्वनाथ भी स्वयं से भी अपने आंचलिक भाषा में प्रयोग करते हैं।

तो क्या बूबू भी चल दिए?"[10]

"च्यला विश्वा! तू कैसा है रे! देख कैसी दशा बना डाली है, अपना इलाज क्यों नहीं करता, अभी तुझे बहूत काम करने हैं, मूझे तुझसे बहुत उम्मीद है... ..।"[10]

भारत एक बहु भाषा-भाषी देश है। यहाँ के मूल निवासियों के अतिरिक्त भी कई जातियाँ दूसरे देशों से आकर यहाँ बस गई हैं, जिनके कारण हिंदी भाषा में कई अन्य भाषाओं के शब्द भी सम्मिलित हो गए हैं। इस संबंध में रामचंद्र वर्मा ने कहा है - "जब पारस्परिक संपर्क के कारण एक जाति की भाषा का दूसरी जाति की भाषा पर प्रभाव पड़ता है, तब उसमें शब्दों का आदान-प्रदान भी अवश्य होता है।"[11]

नेगी जी ने भी अपने साहित्य में उर्दू-फारसी, अंग्रेजी आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया है, जो हमारे दैनिक जीवन में सर्वत्र बोले और सुने जाते हैं।

उनके उपन्यासों में सम्मिलित विभिन्न भाषाओं के शब्द चयन इस प्रकार है:-

4.1.2 अंग्रेजी शब्दावली

1. वसीयत

कैलेण्डर, प्रेक्टिस, गायनॉकॉलाजिस्ट, मेडिकल कोर्स, स्टेटस, स्टार्ट, ट्रेनिंग, टेलीग्राम, ऑफिस, रिटायरमेन्ट, प्लेट, हॉस्टल, ग्रेजुएशन, टॉप, प्रोफेसर्स,पोस्टंग, कार्ड, कॉम्पटीशन, ज्वॉइन,मैरिज- ऐनिवर्सरी, रिटायरमेंट,पैकेट,लाईब्रेरी, पार्टी, हैडमास्टर, स्लिप, फाईल, रिसीव, काउन्टर, इमरजेंसी, आवर्स, रिपोर्ट, सीमेन्ट, राउण्ड, लिस्ट,ग्लोबल, पेपर,मॉडल, सर्विस, पार्सल, कॉम्पटीशन, नर्स, शर्ट, सीट आदि।

2. रिश्तों की आँच

सीपीयू सेकेण्डरी, इंजीनियर, सैल्यूट, हॉस्टल, फीस, एडमिशन, कैम्पस, फॉम, बस स्टेण्ड, पॉलिथीन, फोर्थ क्लास, सर्वेक्षण पार्ट टाइम,क्वार्टर, लॉन, मनी आर्डर, चैम्बर, डेली वेज, सेक्शन, कोचिंग, मेडिकल, स्टाफ, नेम प्लेट, अकाउन्टेन्ट, लोन, शिफ्ट, रिटायर, लंच, रजिस्टर,

प्रोबेशन,टिफिन, डिग्री होल्डर, असिस्टेन्ट, चार्ज, लैब्बॉय,ज्यूस, स्वेटर, सर्टिफिकेट, एक्सीलेटर, स्टेट्स,एलॉट, प्लानिंग, जैनरेशन गैप, डॉक्यूमेन्ट, फीस काउंटर, परफेक्ट, जूनियर, ऑटो, चैम्बर, स्पीड, स्टेटमेन्ट,डस्टबिन आदि।

3. नियति चक्र

स्टाफ, पोस्टिंग, रिकॉर्डर, नर्सिंग स्टाफ, ड्यूटी, डॉक्टर्स, पोफेसर, एम्बुलेंस, ब्लड, बैंक, एक्सीडेन्ट, पार्ट टाइम, क्वार्टर, ट्रीटमेंट, इंजेक्शन, सीनियर्स, डिग्री, कॉरियर, मेम्बर, नाईट, सिस्टर, फाइनल, वॉस, प्रिंसिपल, पोस्ट ग्रेज्युएशन, कम्पलीट, डिस्चार्ज कार्ड, बॉडी, क्वार्टर, बिल्डिंग, फैक्ट्री, ऑफिस, सुपरवाइजर, कैम्पस, ड्राईवर, नम्बर, ग्लास, स्टाफ, हॉस्पिटल, राउण्ड, पोजिटिव इंचार्ज, ब्लड, ऑडिटोरियम, डोनेशन, ट्यूशन, टॉप, युनिवर्सिटी, ऑनलाईन, मैगज़ीन, न्यूज़, प्लेटफार्म, शिफ्ट, जॉब, लाइब्रेरी, डिपार्टमेंट, प्रोजेक्ट, रिर्सच, इंटरमीडिएट, फण्ड, ज्वाइनिंग, नम्बर, फोटोग्राफर, टी- स्टॉल आदि।

4.1.3 कुमाँऊनी शब्दावली

लेखक मूलतः उत्तराखंड के कुमाँऊ क्षेत्र से संबंधित हैं, जिस कारण उनकी भाषा में क्षेत्रीय शब्दों का प्रयोग भी देखने को मिलता है। उन्होंने साधारण बोलचाल की भाषा के जिन शब्दों का प्रयोग अपने अपने उपन्यासों में किया है। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं -

मूल शब्द - हिंदीरूप

ईजा- माँ,	बबू - दादाजी
बूबू- दादाजी,	बाज्यू- पिताजी
च्यला-बेटा	भूला - भाई
नाती - पोता	चेली - बेटा
नौहल्ले - पानी की बावड़ी	ब्या - विवाह
दहलीज़ - देहरी	मैंस - लोग
थान -मंदिर	मैच - पीहर
ताप- सेक	बटू - पर्स
मंदिर - थान	घुघुती - चिड़िया
ताप - सेक	ताऊ - बाबू
धूप - घाम	ठूलीजा - ताई
पौहरी - प्रहरी	मलखन - भीतर कमरा
उत्तरासणी - मकर संक्रांति	रहड - मथनी
पैलाग - प्रणाम	बैर - मंजरी
ज्यू जाग - जीता रह	गढेरी - एक प्रकार की सब्जी

किल्मोड़ - एक प्रकार जली फल

रैंस - एक प्रकार की दाल

हुड़के - हाथ से बजाया जाने वाला वाद्य यंत्र

फूलपाती -देवताओं को चढाये जानेवाले फूल की पत्तियाँ।

4.1.4 मुहावरे और लोकोक्तियां

भाषा में सौंदर्य लाने के लिए मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग किया जाता है। इनका भाषा में विशिष्ट और निजी स्थान होता है। ऐसे शब्द समूह या वाक्यांश जिनका अर्थ शाब्दिक अर्थ से भिन्न होता है- मुहावरे कहलाते हैं। यह वाक्यांश बहुत कम शब्दों में ही बहुत बड़ी बात कह देते हैं। इनसे भाषा में रोचकता आती है। दूसरी तरफ लोकोक्तियां ऐसी उक्तियां होती हैं जो शाब्दिक अर्थ को व्यक्त करने के स्थान पर विशिष्ट अर्थ को व्यक्त करती हैं। मुहावरे और लोकोक्तियां भाषा को प्रवाहपूर्ण बनाते हैं और इनके प्रयोग से भाषा में सरलता और रोचकता आती है। लेखक ने भी अपनी भाषा में कहीं-कहीं मुहावरों और लोकोक्तियां का प्रयोग किया है, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

मुहावरे

विचलित होना, बैचेन रहना, सनाटा छाना, अव्वल आना, फैल जाना, सौदा करना, अंधेरा छाना, कोहराम मचाना, हाथ फैलना, तरक्की करना, हाथ हटाना, सिर पर

हाथ फेल ना, बेहाल होना, उथल-पुथल होना, आकर्षित होना, पेट में चुहे दौड़ना, सम्मानित करना, आँखे तरस जाना, प्रोत्साहित करना, उतार चढ़ाव आना, मायूस होना, पलको पर बिठाना, आँखों से इशारा करना, आदि।

लोकोक्तियां

'जैसी करनी वैसी भरनी'।

'मूह माँगी मुराद मिल गई'।

4.1.5 लोकगीत :-

लोकगीत वह गीत है साधारण जनमानस में गाए जाते हैं। उन्हें लोकगीत कहा जाता है। यह गीत व्यक्ति की भावनाओं, उसके उल्लास, सुख-दुःख, हर्ष, पीड़ा आदि से जुड़े रहते हे और जो हर विशेष अवसर पर गाए जाते हैं। नेगी जी के उपन्यास की रोचकता उनमें निहित लोकगीत हैं। ये लोकगीत पहाड़ी प्रदेश के लोगों की दिनचर्या, उनके द्वारा मनाए जाने वाले विभिन्न त्यौहारों, विवाह के समय गाए जाने वाले गीतों को दर्शाते हैं। इनके साहित्य में आए विभिन्न लोकगीतों की एक बानगी इस प्रकार है:-

फूल सग्यान के त्यौहार पर गायाजाने वाला प्रसिद्ध गीत -

"बेडु पाको बारह मास;

नाराणी काफल पाका चैत,

मेरी छेला...।"[12]

अर्थात (वेड का फल साल भर पेड़ों पर लगा रहता है, जबकि नाराणी और काफल के फल केवल चैत मास में ही पकते हैं।

बुति गाली रैंस यह खेतों में गानेवाला गीत है:-

"बुति हाली रैंस;

बुती हाली रैंस,

आनै रैनी रितु मास,

नीं आन मैंस ।"[13]

अर्थात्- खेतों में दाल बो दी गई है, ऋतु और माह तो आते रहते हैं, लेकिन जाने के पश्चात् इंसान वापस नहीं आता।

"जी रये जागिरये,

धरती जस आगव, आकाश जस चाकव है जैये,

सूरज जस तराण, स्यावे जसि बुद्धि हो,

दूब जस फलिए

सिलपिसि भात खाये, जांठि टेकि झाड़ जाये।"[14]

अर्थात:- जीते रहो, जागरूत रहो, पृथ्वी के समान धैर्यवान, आकाश के समान उदार बनो, सूर्य के समान तेजवान, सियार के समान बुद्धि हो, दूर्वा के समान पनपो, इतनी लम्बी उम्र पाओ कि सभी दाँत झड़ जाएँ और भात (चावल) भी पीस कर खाना पड़े और शौच जाने के लिए भी लाठी का उपयोग करना पड़े।

कैसे बजे मुरली, यह पीड़ा को व्यक्त करने वाला लोगगीत है:-

"कैलै बजै मुरुली,

ओ बैणा ऊँची-नीची डान्यूमा"[15]

अर्थात:- हेबहिन ! ऊँची-नीची पर्वतों की चोटियों में बाँसुरी की तान किसने छेड़ दी है।

प्रस्तुत लोगगीत पहाड़ों पर गानेवाला गीत हे जो इस प्रकार :-

"आम की डाई म घुघुती नी बास,

उड़ी जा ओ घुघुती नहै जा लद्दाख।

हाल म्यर पहुँचै दिये, म्यर स्वामी पास।"[16]

अर्थात:- फौज में गए अपने पति की याद में विवाहिता आम की डाली पर बैठी घुघुती (चिड़िया) से कह रही है कि हे घुघुती! तू आम की डाली पर न बैठ। उड़कर सीधी लद्दाख पहुँच जा और मेरे पति को मेरा समाचार दे आ।

4.2 शैली

साहित्य में शैली का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। आधुनिक काल में इस शैली को अंग्रेजी 'स्टाइल' का पर्याय मान लिया गया है। साधारण शब्दों में 'शैली' का अर्थ है- ढंग'। बोलने तथा लिखने के खास औरअच्छे ढंग को 'शैली' कहा जाता है। साहित्य में शैली अभिव्यक्ति के उन गुणों को कहते हैं, जिन्हें लेखक या कवि अपने मन के विचार को ठीक तरह से व्यक्त करने के लिए अपनाते हैं।

रामचंद्र वर्मा के अनुसार :- "वास्तव में उत्कृष्ट विचार या भाव को उसी के अनुरूप तथा उपयुक्त ढंग से प्रकट करना ही कृति का कला पक्ष है। इसी में कर्ता का कौशल और कृति का सौंदर्य है। कुछ कहने या लिखने के समय एक तो विचार करने की शक्ति होती है और दूसरी विचार व्यक्त करने की शक्ति, यह विचार व्यक्त करने की शक्ति ही शैली है।"[17] शैली का प्रमुख गुण यह माना जाता है कि लेख में शब्द कम हों परंतु इसमें में अर्थ या भाव अधिक हो। शैली ही कठिन को असान और असान को कठिन बनाती है| साहित्य का संपूर्ण सौंदर्य शैली पर ही अश्रित होता है।

नेगी जी ने अपने उपन्यासों में विभिन्न शैलीयों का उपयोग करसाहित्य के शिल्प पक्ष को सुदृढ़ बनाया है, लेखक ने उपन्यासों विभिन्न शैलीयों का विवेचन इस प्रकार है :-

4.2.1 वर्णनात्मक शैली

इस शैली का उपयोग उपन्यासकार अपनी कथावस्तु और चरित्रों से जुड़ी घटनाओं और स्थितियों का वर्णन करता है। इस वर्णन में लेखक की स्वयं की अनुभूति भी जुड़ी रहती है। इस शैली में अधिकतर प्राकृतिक चित्रण और स्थलों का चित्रण

किया जाता है। लेखक ने अपने उपन्यासों में इसी शैली का प्रयोग करते हुए। गाँव का प्राकृतिक चित्रण बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है।

'वसीयत' उपन्यास में विश्वनाथ ने अपने गाँव के पहाड़ी प्रदेश और वहाँ की प्रकृति का लगाव का चित्रण किया है। उपन्यास का नायक विश्वनाथ अपनी पत्नी के साथ वर्षों बाद अपने गाँव वापस लौटता है। उसकी पत्नी पहली बार पहाड़ी प्रदेश की यात्रा कर रही थी, वह पहाड़ों और वहाँ के रास्तों को देखकर अचंभित थी, जिनका वर्णन लेखक ने इस प्रकार किया है "टैक्सी में बैठे-बैठे ऊँची चोटी पर बने सर्पिलाकार रास्तों को देखती तो देखती ही रह जाती और जैसे ही कुछ समय पश्चात टैक्सी उस चोटी पर पहुँच जाती तो वह भौंचक्की सी रह जाती। कभी ऊँची चोटी से नीचे गहरी खाई में बने रास्तों पर स्वयं को पाकर आश्चर्य से भर जाती पहाड़ी रास्तों पर चलने का यह अद्भुत रोमांच था। कभी बादलउनके साथ चलने लग जाते तो कभी मार्ग को ही अवरुद्ध करते हुए लगते, कभी लगता जैसे पूरा पहाड़ ही उन पर आ गिरेगा, तो कभी तंग घाटी में से उनकी टैक्सी गुजरती । ऐसे अनेक उद्देश्य को देखकर मन में कभी रोमांस उत्पन्न होता तो कभी अनजाना भय। रास्ते में चलते समय कुछ जगहों पर वह गर्म और ठंडे पानी के झरनों को देखते तो प्रकृति की इस अनुपात छठ को देखकर मन में कई प्रकार की जिज्ञासा उत्पन्न हुए बिना नहीं रहती। वह उसे वहाँ की वनस्पति पेट को पेड़- पौधों, रास्ते में आ रहे छोटे- बड़े गाँव, सिढ़ीदार खेत, लोगों की जीवन शैली इत्यादि के विषय में विस्तार से बता रहा था।"[18]

विश्वनाथ अपने गाँव के प्राकृतिक सौंदर्य का विस्तार से वर्णन कर रहा था। रिश्तों की आँच उपन्यास में हम देख सकते हैं जब रामप्रसाद का ऑफिस का आखिरी विदाई का दिन होता है। तो वह जब पहली बार शहर आया था। तब उसने गाँव

से नीम का पेड़ अपने साथ लाया था। वह मन में उठता दर्द और खुशी के पलों को पेड़ के साथ ही सबसे पहले साझा किया करता था। उसका वर्णन उन्होंने इस प्रकार किया है:- "पेड़ की पत्तियाँ और टहनीयाँ धीरे-धीरे हिलने लगी। वातावरण में छाया सन्नाटा दूर होने लगा था। उसने देखा चिड़िया का झुंड पेड़ पर बने अपने गुसलों में लौट रहा है। देखते ही देखते पूरा वातावरण में छाया सन्नाटा दूरहोने लगा। उसने देखा चिड़िया का झुंड पेड़ पर बने अपने घोसलों में लौट रहा है। देखते ही देखते पूरा वातावरण चिड़ियों की चहचहाहट से गुँजायमान हो उठता है। आसमान की तरह नजर दौड़ाई जो सूर्य की लालिमा से सुरमई हो गया था, यह दृश्य मन को सुकून देने वाला था जहाँ दिन भर से अपने-अपने गन्तंव्य पर जाकर पेट भोजन की तलाश कर एक निश्चित समय पर अपनी अपनी चोंच में यह पक्षी गण मुँह में अनाज का दाना उसके लिए लेकर आते हैं जो दिन भर उसका इंतजार करते होते हैं। बिछोह एवं इंतजार के बाद मिलने की मन खुशी दे तब उसके साथ रहती है। उनके दिल से निकलने वाले संगीत की खुशी से वातावरण की निरसता खुद ब खुद दूर होती जाती है।"[19] इस प्रकार रामप्रसाद ने नीम के पेड़ का वर्णन किया हैं।

'नीयति चक्र' उपन्यास में शिकारपुर कस्बे का वर्णन किया गया है। जिसमें लोगों का कस्बाईकरण तो हो गया है, लेकिन उन्होंने अभी भी ग्रामीण संस्कृति को पूरी तरह नहीं छोड़ी है। यथा- "अभी भी गाय के गोबर के उपले थाप कर उसे सुखाकर खाना बनाना, सड़क किनारे पड़ी लकड़ी को बीनकर चूल्हा जलाना, खाना खाते समय रसोईघर की धुलाई करना, सूर्योदय से पहले उठकर खान करना और मंदिर में जा कर दिया बाती करना, गायों को हरा चारा डालना, चिड़ियों को चुग्गा डालना, पड़ोस में कोई बीमार हो जाने पर सबसे पहले पहुंचकर कुशल क्षेम पूछना, कुछ

ऐसे ही विशिष्टताएँ थी जो गाँव की माटी और समृद्ध संस्कृति की परिचायक थी।"[20] इस प्रकार स्पष्ट है कि ग्रामीण संस्कृति को बचाने का सामूहिक प्रयास अति आवश्यक है । इस प्रकार गाँव का वर्णन किया गया हैं।

4.2.2 पूर्व-दीप्ति शैली

इस शैली को 'फ्लैशबैक टेक्रिक' अथवा 'प्रत्यग्दर्शन' कहा जाता है। इसमें बीती हुई बातों को पुनः याद किया जाता है। अतीत से जुड़ी अधिकतर घटनाओं का वर्णन इस शैली के माध्यम से किया जाता है।इस शैली में घटनाओं को अतीत की स्मृति के सहारे विकसित किया जाता है। पात्रों की स्मृति के द्वारा अतीत की घटनाओं को प्रकाशित किया जाता है। फ्लैश बैंक शैली, चेतना प्रवाह शैली में समाहित हो सकती है।

'वसीयत' उपन्यास में इसका उदाहरण देख सकते हैं। जब सुधा एल्बम में अपने बेटे राजकुमार की बचपन की फ़ोटो देखती है तो वह अतीत की स्मृतियों में खो जाती है- "सुधा को वह पुरानी घटना याद हो आई कि किस तरह एक दिन सुबह ऑफिस जाते समय जैसे ही विश्वनाथ ने राजकुमार को अपनी गोद में उठाया तो उसने कुछ ही देर मेंउसकी कमीज़ को गीला कर दिया। सुधा अंदर कमरे में जाकर देर तक हँसती रही और कैमरा लाकर यादों को कैमरे में कैद कर लिया।"[21] वह पुरानी घटना को वर्तमान में याद करती हैं।

'रिश्तों की आँच' उपन्यास में हम देखते हैं कि गाँव का वह जीवन रामप्रसाद को याद आता है। तो उनको अपने पुराने गरीबों की दीन, माँ और छोटे भाई बहन के साथ कितना खूश था। "एक दूसरे के लिए जीना एक दूसरे के बारे में सोचा यही

सब उनकी दुनिया थी। जहाँ गरीबी थी। लेकिन एक दूसरे के प्रति मन में प्रकट प्रेम था। गाँव में एक दूसरे के प्रति निश्चल प्रेम न केवल घर के सदस्यों के प्रति था। अपने दोस्त में रहने वाले लोगों के प्रति भी एक मधुर प्रेम हुआ करता था।"[22] यह सब याद कर रामप्रसाद भाव विभोर हो उठा रमेश द्वारा कहे गए शब्द कानों में बार-बार गूँजने लगे। रामप्रसाद अपने गाँव की पुराने दिन और अपने भाई, माँ, बहन के साथ बिताऐ हुऐ पल को वो बार-बार अपने वर्तमान में याद करता है।

'नियति चक्र' उपन्यास में उदाहरण इस प्रकार है:- डॉ. अवस्थी पुर्व घटना याद आती है। उसे स्कूली दिनों के हिन्दी के अध्यापक पंडित गौरीशंकरजी याद हो आए। एक दिन कक्षा में पढ़ाते समय उन्होंने कहा था कि "जब कभी हमारे मन में कोई विचार या ख्याल आ जाए तो उसे सामने वाले को बयाँ कर देना चाहिए, अन्यथा जीवनभर वह एक बोझ बनकर रह जाता है।"[23]

4.2.3 डायरी शैली

डायरी शैली पाश्चात्य लेखकों तथा विचारकों की प्रिय शैली रही है। डायरी किसी भी विषय में लिखी जा सकती है। डायरी में उन्हीं बातों को लिखा जाता है, जिन्हें किसी के सामने प्रकट नहीं किया जा सकता। अर्थात मन की गुप्त भावनाओं को डायरी शैली के माध्यम से व्यक्त किया जाता है।

'वसीयत' और 'नियति चक्र' उपन्यास में डायरी मुख्य भूमिका में है। यह उपन्यास का सबसे महत्वपूर्ण निर्जीव पात्र है।जो नायक के मन में पड़ चुकी गलतफहमी की गाँठ को खोलने में महत्वपूर्ण योगदान देती है। इसके माध्यम से लेखक ने पिता की उन भावनाओं को पाठकों के सामने रखा है। एक पिता कभी अपने पुत्र के सामने अपने विचार को व्यक्त नहीं कह पाता है। नायक विश्वनाथ का पिता बेटे के

शहर में चले जाने से अकेला पढ़ जाता है। वह अपने बेटे से अत्यंत प्यार करता है, लेकिन उसे कभी बेटे के सामने प्रकट नहीं कर पाता, इसलिए वह सब कुछ डायरी में लिख देता है, विशवनाथ के पिता कहते है कि “विश्वा के जाने के बाद अकेला सा हो चुका हूँ, मुझसे अधिक चिंता उसकी ईजा करती है, माँ है ना आखिर... |”[24]

जब विश्वनाथ के अफसर बनने की सूचना उसके माता-पिता को मिलती है तो उसकी माँ की खुशी और प्रेम को उसके पिता निश्न शब्दों के माध्यम से डायरी में व्यक्त करते हैं:- "विश्वा की ईजा तो खुशी से फूली नहीं समाई। पूरे गाँव में यह समाचार दे आयी।... कमर दर्द के मारे इधर-उधर आना-जाना भी बंद कर दिया था। आज उसी हालत में पूरे गाँव में घूम कर आई है. यही तो वात्सल्य और ममता की शक्ति है।”[25]

डायरी के अंत में विश्वनाथ को उसके पिता की वसीयत प्राप्त होती है। उसके पिता ने लिखा था मेरे पुरखों द्वारा आजन्म परोपकार, परहित, त्याग, समर्पण और सत्य का अनुसरण करते हुए जीवन में संस्कार, जीवन मूल्यों तथा सिद्धांतों के साथ जीवन-यापन किया गया, जिनका अनुसरण मैंने अपने संपूर्ण जीवन काल में किया, यही मेरी असल कमाई है, जिसे मैं आज अपने विश्वा के नाम वसीयत के रूप में समर्पित करता हूँ।”[26]

इसके अलावा उपन्यास 'नियति चक्र' में भी डॉक्टर अवस्थी को उनके पूज्य नितिन घोष की डायरी के माध्यम से जीवन जीने और परोपकार की प्रेरणा मिलती है । डायरी में जीवन जीने का सार था, कैसे एक मानव से महामानव बना जाए।जब

भी मुश्किल दौर में रहा, डायरी के पन्ने पलटने से एक नई दिशा और प्रेरणा मिलती रही।"[27]

उपयुक्त उदाहरण से यह ग्यात होता है कि उपन्यासकार ने डायरी शैली के माध्यम से वृध्दों के अकेलेपन की पीड़ा को व्यक्त कीया है। वह अपनी बाते किसी के साथ खुलकर व्यक्त नही करते है । इसलिए डायरी के माध्यम से अपने भाव विचार को व्यक्त किया है।

4.2.4 पत्रात्मक शैली

उपन्यास 'वसीयत' में विश्वनाथ की माँ अपनी बहू को पत्र लिखकर स्त्री जीवन की सार्थकता को समझाती हुई कहती है "बेटी जब तक माँ-बाप के घरआंगन में होती है, तब तक परिवार में खुशियाँ बिखेरती रहती है, लेकिन शादी के बाद वह ससुराल में जाकर जहाँ बहू बनकर उस कुल की मर्यादा का मान रखते हुए, पुरखों द्वारा स्थापित मान्यताओं और परंपराओं का निर्वहन करते हुए,परिवार को एकजुट रखती है; वहीं प्रत्येक सुख-दुःख में वृद्ध सास-ससुर को सहारा देते हुए एक बेटी का कर्तव्य भी निभाती है।"[28]

इस शैली के कारण जहाँ रिश्तों की ताजगी बनी हुई दिखाई देती है, वही निकटता का आभास भी स्पष्ट रूप से होता है।

4.2.5 प्रतिकात्मक शैली

'वसीयत' उपन्यास में भी बहती हुई नदी को बच्चों का प्रतीक माना है। उपन्यास में नायक विश्वनाथ के पिता उसे नदी और बच्चों की समानताएँ बताते हुए कहते हैं – "च्यला ! देख बहती हुई नदी और बड़ी होती औलाद को एक जगह बांधकर नहीं रखा जा सकता | दोनों की प्रकृति ऐसी है कि बाहर निकल कर ही अपनी सार्थकता सिद्ध कर सकते हैं.... नदियों जब तक पहाड़ों के संपर्क में रहती हैं तब तक अपने मूल स्वरूप में निश्चल भाव से बहती रहती हैं... अंत में समुंद्र में मिलकर एकाकार हो जाती हैं.... वहाँ जैसे किसी एक का अस्तित्व होता ही नहीं |"[29]

लेखक ने यहाँ नदी के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि जो बच्चे नौकरी की तलाश में घर से एक बार दूर चले जाते हैं, तो वे इस चकाचौंध के सागर में खो जाते हैं और कभी अपनी जन्मभूमिया माता- पिता के पास नहीं लौट पाते है ।

उपन्यास 'रिश्तों की आँच में नीम के पेड़ को नायक के हमसफर,साथी के रूप में चित्रित किया गया है | जब नायक रामप्रसाद अपने गाँव से शहर आता है तब माँ का दिया हुआ नीम का पौधा ही उसके साथ होता है, जो उसके रिटायर होने तक उसका मार्गदर्शन करता रहता है। वह अपने प्रत्येक सुख-दुःख को पेड़ के साथ सांझा करता है। नीम के पेड़ से उसे वार्तालाप प्राप्त होता है। यहाँ नीम का पेड़ सच्चे दोस्त, हितैषी एवं पथ प्रदर्शक का प्रतीक है; इसकी एक बानगी देखिए – "मन की पीड़ा सुनने वाला कोई न था, सिवाय परिसर में खड़े नीम के पेड़ के... पेड़ के नीचे बैठने पर उसे महसूस होता है कि जैसे वह किसी बड़े बुजुर्ग की छाया तले बैठा हो।"[30]

4.2.6 विश्लेषणात्मक शैली

इस शैली में कथानक की स्थूलता नहीं होती है। इसमें कथा की सूक्ष्मता होती विश्लेषणात्मक शैली में लिखी गई रचना के केन्द्र में कोई न कोई एक विचार होता है। उसी का विवेचन और विश्लेषण कृति में किया जाता है। यह शैली तर्क प्रधान होती अमुर्त भावों की अभिव्यक्ति के लिए यह शैली उपयुक्त होती है। इस प्रकार की शैली लिखो गई रचनाओं में बौध्दिक या शिक्षित पात्र अधिक होते है।

इस का उदाहरण 'वसीयत' उपन्यास में इस प्रकार देख सकते हैं :-

'वसीयत' उपन्यास व्यक्ति की मानसिक उथल-पुथल, उसके आत्म-साक्षात्कार और जीवन मूल्यों एवं आदर्शों की स्थापना से भरा पड़ा है। उपन्यास में विश्वनाथ का बेटा राजकुमार उनके साथ नहीं रहता, वह डॉक्टर बन जाता है और विदेश में ही एक लड़की से विवाह भी कर लेता है और वहाँ पर ही अपनी गृहस्थी शूरू करता है। परंतु वह अपने माता-पिता को विवाह के बारे में कोई सूचना नहीं देता। इससे विश्वनाथ बहुत दुःखी हो जाता है और उसके मस्तिष्क में तर्क आरंभ हो जाता है "मैं कौन सा उसे - रोक रहा था, कम से कम एक बार हमसे मिल तो लेता। शादी मनपसंद की कर ली तो बहू को आशीर्वाद लेने तो हमारे पास लाता। लेकिन तभी मन के कोने से आवाज आती, आखिर वह भी तो किसी माँ-बाप का बेटा था। उसके माँ और बाबूजी उसकी राह तकते-तकते कितने परेशान हुए होंगे, उसके इंतजार में उनको कितनी रातों की नींद का त्याग करना पड़ा होगा।"[31]

इसके अतिरिक्त अन्य उपन्यासों में भी आदर्शों की स्थापना के लिए पात्रों का स्वयं से दंव्द सुंदर तरीके से दर्शाया गया है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि नेगी जी ने सीधी, सरल, परिस्थिति अनुकूल एवं सामान्यबोलचाल की भाषा को अधिक महत्व दिया है। वे मूल रूप से पहाड़ी क्षेत्र से संबंध रखते हैं इसीलिए उनके साहित्य की भाषा में पहाड़ी शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है, साथ ही उन्होंने उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग किया है। इसके साथ-साथ नेगी जी ने अपने उपन्यासों में लोकोक्तियों का भी सफलतापूर्वक प्रयोग किया है। उनकी रचनाओं में भाषा के अन्य तत्व जैसे- संगीतात्मकता, प्रतीकात्मकता, आंचलिकता, प्रकृति-चित्रण आदि भी देखने को मिलते हैं। इन सबके अतिरिक्त विभिन्न शैलियों का प्रयोग उनकी भाषा को सर्वग्राहय व जनसाधारण के अनुकूल बना देता है।

संदर्भ सूचि

1. डॉ. देशमूख अंबादास, भाषिक हिंदी भाषा तथा भाषा शिक्षण, पृ.217
2. श्यामसुंदरदास,साहित्यालोचन, पृ.259
3. डॉ.श्रीमालनेमीचन्द, भाषाविज्ञान, सं.2008, पृ.2
4. डॉ.पाटील हणमंतराम, भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा विद्याप्रकाशन, स.2017, पृ.12
5. डॉ.श्रीमाल नेमीचन्द, भाषा विज्ञान, सं.2008, पृ.2
6. डॉ.पाटील हणमंतराम, भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा विद्या प्रकाशन, स्.2017, पृ.13
7. डॉ.नेगी सिंह सूरज, वसीयत, साहित्यगार प्रकाशन, 2018, पृ.69
8. वही, पृ. 87
9. वही, पृ.166
10. वही, पृ. 108
11. वर्मा रामचंद्र, अच्छी हिंदी लोकभारती प्रकाशन, पचीसवां संस्करण: 2012, पृ. 150
12. डॉ.नेगी सिंह सूरज, वसीयत, साहित्यगार प्रकाशन, 2018, पृ.90
13. वही, पृ.190
14. वही, पृ. 188
15. वही, पृ. 230

16.वही, पृ. 259

17.वर्मा रामचंद्र, अच्छी हिंदी लोक भारती प्रकाशन, पचीसवां संस्करण : 2012, पृ. 68

18.डॉ.नेगी सिंह सूरज, वसीयत, साहित्यगार प्रकाशन, 2018, पृ. 243

19.डॉ.नेगी सिंह सूरज, रिश्तोंकीआँच, हेरिटेज पब्लिकेशन, 2016, पृ. 67

20.डॉ.नेगी सिंह सूरज, नियतिचक्र, सनातन प्रकाशन,2019, पृ.25

21.डॉ.नेगी सिंह सूरज, वसीयत, साहीत्यगार प्रकाशनप्रकाशन, 2016,पृ. 48

22.डॉ.नेगी सिंह सूरज, रिश्तोंकीआँच, हेरिटेज पब्लिकेशन, 2016,पृ. 52

23.डॉ.नेगी सिंह सूरज, नियति चक्र, सनातन प्रकाशन, 2019, पृ. 40

24.डॉ.नेगी सिंह सूरज, वसीयत, साहित्यगार प्रकाशन, 2018, पृ. 162

25.वही, पृ. 164

26.वही, पृ. 213

27.डॉ.नेगी सिंह सूरज, नियतिचक्र, सनातन प्रकाशन, 2019,पृ. 94

डॉ.नेगी सिंहसूरज, वसीयत, साहित्यगार प्रकाशन, 2018, पृ. 224

28. वही, पृ. 232

29.डॉ. नेगी सिंह सूरज, रिश्तों की आँच', हेरिटेज पब्लिकेशन, 2016,पृ.134

30.डॉ.नेगी सिंह सूरज, वसीयत, साहित्यगार प्रकाशन, 2018, पृ.45

<u>उपसंहार</u>

डॉ.सूरज सिंह नेगी एक प्रसिद्ध उपन्यासकार है। उनके उपन्यासों में वृध्द की बदलती स्थितियों का चित्रण मिलता है। जैसे कि रिश्तो की अहमियत, अकेलेपन, मानवीयता, भूमंडलीकरण के बदलते युग में रिश्तों में आए बदलाव इसके साथ-साथ मानसिक समस्या, आर्थिक समस्या, पारिवारिक समस्या का चित्रण किया है। डॉ.नेगी जी ने वृध्दकी यह घबराहट तथा पीड़ा को अत्यंत सही तरीके से अपने उपन्यासों में विवेचन किया है।आज वर्तमान में वृध्दों की स्थिति दर्यानय होती जा रही है और युवा पीड़ी संवेदनहीनता और नैतिक मूल्यों को भूलते जा रहे हैं। इसलिए वृध्दों की स्थिति सुधारने के लिए जरूरी है। वृध्दों की स्थिति में सुधार आए और मनुष्यता के विचार में बदलाव आएगा तो वृध्दश्रम की जरूरत नहीं पड़ेगी। यह आवश्यकता है कि वृध्दों से हम परिचित रहे और उन्हें उस समस्या का शिकार न होने दे इसका पालन करें।

भूमंडलीकरण के युग में सब कुछ बदल चुका है। परिवार की संकल्पना बदल चुकी है। जिन बुजुर्गो ने हमें पाल-पोसकर बड़ा किया। उन्हीं बुजुर्गों को बच्चों द्वारा नकाराजा रहा है। बच्चे बुढ़ापे में लाठी बनने की अपेक्षा उन्हें बोझ समझ रहे हैं। दो पीढ़ियों के बीच मानसिक रूप से हो रही टकराहट के कारण वृद्ध अस्वस्थ हैं। समाज रीति- रिवाजों, परम्पराओं और कुछ रिश्तों के बल पर खड़ा होता है। इनमें किसी तरह का विचलन आने पर परिवार विखंडित हो जाता है। परिवार के ढाँचे में परिवर्तन आने के कारण कल तक भारतीय समाज व्यवस्था में मुखिया रहे

वृद्धजन के हाशिये पर चले जाने पर तीव्र शुरुआत हुई है। समाज में जिस तरह से वृद्ध हाशिये पर चले जा रहे हैं। डॉ.सूरज सिंह नेगी के उपन्यासों में वृध्दों के जीवन पर पर्याप्त चिंतन हुआ है। वसीयत, नियति चक्र, रिश्तो की आँच उपन्यासों के माध्यम से समाज में वर्तमान दौर में गिरते जीवन मूल्य, जीवन आदर्श, संस्कारों के अभाव के अलावा बूढ़े होते माँ-बाप के सामने उत्पन्न होने वाली चुनौतियाँ पलायन के कारण खाली होते गाँव और दूसरों की मनस्थिति को न समझ पाने के कारण उत्पन्न समस्याओं को रेखांकित करने का प्रयत्न किया गया है।

लेखक ने परिवार के बिखराव के कई कारण हमारे सामने प्रस्तुत किए हैं जैसे- आधुनिक व पुरानी पीढ़ी का वैचारिक मतभेद, माता-पिता तथा बच्चों के बीच आपसी तनाव, बच्चों में नैतिक दायित्वों के अनुभव की कमी, बेरोजगारी, बढ़ती महंगाई आदि। उन्होंने समस्या प्रस्तुत करने के साथ-साथ उसका समाधान भी बच्चों में संस्कारों का विकास करना, पढ़े-लिखे युवक-युवतियों को अपनी जड़ों से जोड़ने का प्रयास करना, नई और पुरानी पीढियों के बीच के विरोधों को कम करना, व्यक्तिवादिता के स्थान पर समन्वय और सहयोग की भावना का विकास करना, क्षमतानुसार रोजगार के उचित अवसर प्रदान करना आदि रूपों में बदलाव दिया गया है।

लेखक ने बदलते समाज के बदलते मनोविज्ञान का यथार्थ चित्रण अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया है। उन्होंने वृद्धों की दयनीय स्थिति और उनकेमनोविज्ञान को अपनी रचनाओं में स्थान दिया है। आधुनिक समय में युवा पीढ़ी वृद्धों को घर का सदस्य न समझकर कोई फालतू सामान समझने लगी है, जिसका कोई उपयोग नहीं रह गया है और जो घर में सिर्फ स्थान घेर रहा है।

लेखक ने उपन्यास 'वसीयत' में अपने ही घर में एक बड़ी समस्या समझे जाने वाले वृद्धों की विवशता और वृद्धों द्वारा स्वयं के जीवन की निरर्थकता की अनुभूति को अभिव्यक्त किया है। वृद्ध जीवन भर जिस संतान के लिए अपना सर्वस्व लुटा देते हैं, वृद्धावस्था में उसी संतान की उपेक्षा से वे टूटकर बिखर जाते हैं। आजकल जीवन के आखिरी पड़ाव पर वृद्ध स्वयं को उपेक्षित और अकेला महसूस कर रहे हैं। अधिकतर बच्चे अपने माता-पिता को अपने साथ अपने परिवार में नहीं रखना चाहते हैं। वृद्धों को अकेले उनके हाल पर छोड़ दिया जाता है या वृद्धाश्रमों में भेज दिया जाता है। यदि बच्चे किसी वृद्ध को अपने साथ रख भी रहे हैं तो वे केवल उनकी पेंशन को प्राप्त करने के स्वार्थ में ही रखते हैं। लेखक ने अपने उपन्यासों में दर्शाया है कि किस प्रकार बच्चे माता-पिता की संपत्ति को हथिया कर उन्हें किस तरह घर से निकाल देते हैं।

लेखक ने वृद्धों की दर्दनाक स्थिति को दर्शाया गया है। इसका मुख्य कारण आधुनिक युवाओं में घर करती जा रही व्यक्तिवादिता को माना है। एक अन्य कारण वृद्धों का अपनी उम्र के अंतिम पड़ाव पर क्रियाशील न होना भी बताया है क्योंकि व्यक्ति काम में उतना नहीं थकता जितना काम न होने के भाव से थक जाता है, इसलिए जीवन में आगे बढ़ते रहने के लिए क्रियाशील होना अति आवश्यक है। इस समस्या के समाधान के रूप में उन्होंने सुझाया है कि युवाओं को यह समझना होगा कि वृद्ध जीवन अनुभवों का खजाना हैं,जो अपनी अंतिम सांस तक मार्गदर्शक और सही राह दिखाने की कोशिश करते हैं। उन्हें इन अनुभवों से सीख लेने के लिए वृद्धों के मान-सम्मान और उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। डॉ. सूरज सिंह नेगी ने उपन्यासों के माध्यम से वृद्ध समस्या एवं समाधन के साथ- साथ यूवा एवं वृद्ध पीढ़ी के मध्य व्दंद की गुत्थी को सुलझने का प्रयास किया है।

<u>संदर्भ सूचि</u>

आधार ग्रंथ

1.डॉ.नेगी सिंह सूरज, वसीयत, साहित्यकार प्रकाशन, जयपुर, प्रथम सं.2018, व्दितीय .सं.2023

2. डॉ. नेगी सिंह सूरज, रिश्तों की आँच, हेरिटेज पब्लिकेशन, जयपुर, सं.2023

3.डॉ. नेगी सिंह सूरज, नियति चक्र, सनातन प्रकाशन, जयपुर, सं.2019

सहायक ग्रंथ

4. डॉ. सिंह कुमुद, वृध्द महिलाओं का समाजशास्त्र, प्रकाशन उत्कर्ष पब्लिकेशन कानपुर, सं. 2018
5. प्रियंवदा उषा, मेरी कहानीयाँ, जैन निर्मला, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-1999
6. प्रियदर्शन (संपादक), कहानी रिश्तों की बड़े बुजुर्ग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं 2014
7. मुद्रला चित्रा, गिलीगडु, सामाजिक प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.2002
8. कालिया ममता, दौड, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2000

9.ीक्षित सीमा, वृध्दावस्था की दस्तक, सामयिक बुक्स प्रकाशन, नई दिल्ली सं.2016

10.सोबती कृष्णा, समय सरगम, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.2002

11.डॉ.वर्मा निर्मल, रात का रिपोर्ट, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली९

12.प्रियदर्शन (संपादक), कहानी रिश्तो क :बर्थडे बुजुर्ग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.2014

13.वर्मा रवीत्र्द,आखरी मंजिल,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,सं.2009

1. खंदारे गुरुलिंग रोहिणी, समकालीन हिंदी उपन्यास मैं वृध्द विमर्श, कोल्हापुर, जून 2021
2. डॉ.शिंदे शशि शेखर विद्या, 'दौड़' में भूमण्डलीकरण की सार्थकता का यथार्थ चित्रण, ए. बी.एस पब्लिकेशन, प्रथम सं.2012
3. डॉ.धर्माणी सुशील, डॉ.हिगोराणी, समकालीन साहित्य में आधुनिक युग बोध, अभय प्रकाशन 2012
4. डॉ. मेहरा दिलीप, हिन्दी कथा साहित्य में वृध्द विमर्श, उत्कर्ष पब्लिकेशन कानपुर
5. सिंह श्री भगवान, साहित्य में वृद्ध विमर्श, आलेख जनसत्ता, प्रकाशन वर्ष 9 सितम्बर 2019
6. डॉ. अशोक बाचुळकरहिंदी उपन्यासों में महानगरीय अवबोध, श्रुति पब्लिकेशनपब्लिकेशन जयपुर, , प्रथम सं.2006
7. डॉ. कुमार प्रभात, हिंदी साहित्य में विविध विमर्श, शुभम प्रकाशन, कानपुर 2020
8. डॉ. दौलत कर नीता श्री, २१वी सदी. के साहित्यिक विमर्श, विनय प्रकाशन कानपूर-202
9. https:@@www.jansatta.com
10. https:// www.jansatta.com/sunday-magazine

पत्रिकाऐ

11. श्रीवास्तव मनोज,अक्षरा साहित्य की मासिक, भोपाल, अंक 222, सितम्बर 2023
12. डॉ. राठोड अनिल विद्यावार्ता शोध पत्रिका, अंक 2, महाराष्ट्रा, 2012
13. डॉ. बैरागी मोहन, अक्षर वार्ता, उज्जैन, अंक 2, दिसंबर 2023

27 .डॉ.वर्मा कमलेश,सत्राची, पटना, बिहार, अंक 15, 30 जनवरी-मार्च,2021

28. सोनकर सपना, नागफनी, वर्ष 12, अंक 40, जनवरी – मार्च 2022

29. डॉ. बन्ने पंडित, डॉ.सिहाग नरेश, समकालीन हिंदी साहित्य विविध विमर्श वेबीनार विशेषांक, 22 जून 2021

30.प्रो. सिलावट सूधा एस, वृध्दवस्था की समस्याएं सामाजिक सहयोग, त्रामासिक शोध पत्रिका, पंजाब विश्व विद्यालय चण्डीगढ़, 1915